6.2

प्रारम्भिक रचनानुवादकौमुदी

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

प्रारम्भिक रचनानुवादकौमुदी

(संशोधित और परिवर्धित संस्करण)

नवीनतम वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गयी संस्कृत-व्याकरण और

अनुवाद की पुस्तक, संस्कृत के प्रारम्भिक छात्रों के लिए

लेखक

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी आचार्य,

एम. ए. (संस्कृत, हिन्दी), एम० ओ० एल०, डी० फिल्० (प्रयाग);

विद्याभास्कर, साहित्यरत्न, व्याकरणाचार्य, पी. ई. एस. (अ० प्रा०)

निदेशक, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद्

ज्ञानपुर (वाराणसी)



विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

PRĀRAMBHIKA RACHANĀNUVĀDAKAUMUDĪ

by

Dr. Kapil Dev Dvivedi

ISBN : 978-81-7124-910-7

षट्त्रिंशत् (छत्तीसवाँ) संस्करण : 2016 ई०

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन

चौक, वाराणसी-221 001

फोन व फैक्स : (0542) 2413741, 2413082

E-mail : vvp@vsnl.com ● sales@vvpbooks.com

Website : www.vvpbooks.com

मुद्रक

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

चौक, वाराणसी-221 001

समर्पण

श्रद्धा, विश्वास, शील और आस्तिकता की मूर्ति
जीवन-संगिनी
श्रीमती ओम्शान्ति द्विवेदी एम. ए., सिद्धान्त-शास्त्री
के
कर-कमलों में सस्नेह समर्पित।

कपिलदेव द्विवेदी

आत्म-निवेदन

(१) पुस्तक-लेखन का उद्देश्यः- यह पुस्तक संस्कृत के प्रारम्भिक छात्रों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रस्तुत की गयी है। किस प्रकार कोई भी विद्यार्थी २ या ३ मास में निर्भीक होकर सरल और शुद्ध संस्कृत लिख तथा बोल सकता है, इसका ही प्रकार उपस्थित किया गया है। 'संस्कृत भाषा क्लिष्ट भाषा है', इस लोकापवाद का खंडन करना मुख्य उद्देश्य है। संस्कृत के प्रारम्भिक छात्रों के लिए जितने व्याकरण का ज्ञान अत्यावश्यक है, उतना ही अंश इसमें दिया गया है। अनावश्यक सभी विवरण छोड़ दिया गया है। समस्त व्याकरण अनुवाद के द्वारा सिखाया गया है। रटने की क्रिया को न्यूनतम किया गया है।

(२) पुस्तक की शैली :- पुस्तक कुछ नवीनतम विशेषताओं के साथ प्रस्तुत की गयी है। हिन्दी, संस्कृत तथा इंग्लिश् में अभी तक इस पद्धति से लिखी गयी अन्य कोई पुस्तक नहीं है। जर्मन और फ्रेंच भाषा में इस पद्धति पर लिखी गयी कुछ पुस्तकें हैं, जिनके द्वारा सरल रूप में जर्मन आदि भाषाएँ सीखी जा सकती हैं। इंग्लिश् तथा रूसी भाषा में भी वैज्ञानिक पद्धति से नवीन भाषा सिखाने के लिए अनेक पुस्तकें हैं। इन भाषाओं में भाषा-शिक्षण की जो नवीनतम वैज्ञानिक पद्धति अपनायी गयी है, उसको ही इस पुस्तक में भी आधार माना गया है।

(३) अभ्यास और शब्दकोष :- इस पुस्तक में केवल ३० अभ्यास दिये गये हैं। प्रत्येक अभ्यास में २० नये शब्द हैं। इस प्रकार कुल ६०० अत्यावश्यक मौलिक (Basic) शब्दों का प्रयोग विशेष रूप से सिखाया गया है। शब्दकोश के शब्दों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से है-

(क) अर्थात् संज्ञा या सर्वनाम शब्द	३४९
(ख) अर्थात् धातु या क्रिया शब्द	१२२
(ग) अर्थात् अव्यय शब्द	८०
(घ) अर्थात् विशेषण शब्द	४९
पठित एवं अभ्यस्त शब्दों का योग	६०० (शब्दयोग)

(४) विद्यार्थियों से

(१) संस्कृत भाषा को अति सरल, सुबोध और सुगम बनाने के लिए यह पुस्तक प्रस्तुत की गयी है। प्रयत्न किया गया है कि छात्रों की प्रत्येक कठिनाई को दूर किया जाय। अतएव सरलतम भाषा का प्रयोग किया गया है।

(२) पुस्तक में केवल ३० अभ्यास हैं। प्रत्येक में केवल २० नये शब्दों का अभ्यास कराया गया है। कोई भी प्रारम्भिक छात्र एक या दो घंटा प्रतिदिन समय देने पर दो दिन में १ अभ्यास पूरा कर सकता है। इस प्रकार दो मास में यह पुस्तक समाप्त हो सकती है। केवल ८० नियमों में सब आवश्यक नियम दे दिये गये हैं।

(३) संस्कृत भाषा के प्रारम्भिक ज्ञान के लिए जितने शब्दों, धातुओं और नियमों के जानने की आवश्यकता है, वे सभी इस पुस्तक में हैं। इस पुस्तक का ठीक अभ्यास हो जाने पर छात्र निःसंकोच सरल एवं शुद्ध संस्कृत लिख और बोल सकता है।

(४) प्रारम्भिक छात्रों के लिए उपयोगी सम्पूर्ण व्याकरण इस पुस्तक के अन्त में दिया हुआ है। शब्दों के रूप, धातु-रूप, संख्याएँ, १८ मुख्य सन्धियों के नियम, १० मुख्य प्रत्ययों से बने हुए धातुओं के रूप परिशिष्ट में हैं।

(५) प्रत्येक अभ्यास में कुछ विशेष शब्दों और नियमों का अभ्यास कराया गया है। उनको प्रारम्भ से ही ठीक स्मरण करना चाहिए। विशेष सफलता के लिए प्रत्येक अभ्यास के अन्त में दिये हुए अभ्यास-प्रश्नों को भी करना चाहिए।

सेंट एंड्रूज कॉलेज, गोरखपुर
३०-६-१९५३

कपिलदेव द्विवेदी

अष्टादश संस्करण की भूमिका

संस्कृत-प्रेमी अध्यापकों, विद्यार्थियों और जनता ने इस पुस्तक का हार्दिक स्वागत किया है, तदर्थ उनका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। पिछले संस्करणों में छपाई सम्बन्धी या अन्य जो त्रुटियाँ रह गयी थीं, उनका इस संस्करण में निराकरण कर दिया गया है। प्रस्तुत संस्करण प्रथम सत्रह संस्करणों का संशोधित रूप है। अनुवादार्थ गद्य-संग्रह, आवश्यक संकेत, हाईस्कूल के लिए उपयोगी शब्दरूप, धातुरूप और २० संस्कृत-निबन्ध आदि बढ़ाये गये हैं। आशा है प्रस्तुत संस्करण विद्यार्थियों के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगा।

शान्तिनिकेतन, ज्ञानपुर (वाराणसी)
दिनांक ३१-३-९४ ई०

कपिलदेव द्विवेदी

अभ्यास ८

१. उदाहरण वाक्य—१. उसे पढ़ना चाहिए (वह पढ़े)—सः पठेत्। २. तुझे भोजन खाना चाहिये—त्वं भोजनं खादेः। ३. मुझे जाना चाहिये—अहं गच्छेयम्। ४. त्वं दुर्जनेन सह न तिष्ठेः। ५. सः दण्डेन क्रीडेत्। ६. यतिना सह कविः तिष्ठति। ७. दुर्जनेन कोऽर्थः, किं कार्यम्, किं प्रयोजनम् ? ८. रविः दीव्यति। ९. बालिका नृत्यति। १०. गृहं नश्यति। ११. छात्रः भ्राम्यति।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. उसे पढ़ना चाहिए। २. उसे हँसना चाहिए। ३. उसे यहाँ आना चाहिए। ४. उसे वहाँ नहीं जाना चाहिए। ५. उसे गेंद खेलना चाहिए। ६. उसे पिता के साथ घूमना चाहिए। ७. कन्या को नाचना चाहिए। (ख) ८. तुझे पत्र लिखना चाहिए। ९. तुझे भोजन खाना चाहिए। १०. तुझे जल पीना चाहिए। ११. तू मुनि को देख। १२. तू हरि के साथ खेल। (ग) १३. मैं प्रश्न पूछूँ। १४. मैं पत्र लिखूँ। १५. मुझे पुस्तक पढ़नी चाहिए। १६. मैं फल चाहूँ। १७. मैं बन्दर के साथ खेलूँ। १८. मैं सूर्य को देखूँ। (घ) १९. सूर्य चमका। २०. बालिका नाची। २१. गाँव नष्ट हुआ। २२. गुरु शिष्य के साथ घूमता है। २३. दुर्जन शिष्य के क्या लाभ? २४. राजा सेनापति के साथ यहाँ आया। २५. पहाड़ पर बन्दर खेल रहे हैं।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) स जनकस्य सह भ्रम्येत्।	स जनकेन सह भ्राम्येत्।	१५
(२) दुर्जनात् शिष्यात् कोऽर्थः?	दुर्जनेन शिष्येण कोऽर्थः?	१६
(३) ० सेनापतेः सह ०।	० सेनापतिना सह०।	१५

४. अभ्यास—(क) २ (क), (ख), (ग), को बहुवचन में बदलो। (ख) २ (क), (ख), (ग) को लोट् और लङ् में बदलो। (ग) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—हरि, मुनि, कवि, कपि, भूपति। (घ) इन धातुओं के विधिलिङ् के रूप लिखो—भू, पठ्, लिख्, गम्, दृश्, स्था, पा, दिव्, नृत्, नश्।

५. वाक्य बनाओ—कन्दुकेन, सह, सार्धम्, कोऽर्थः, पठेत्, खादेयम्।

६. रिक्त स्थान भरो—(विधिलिङ्) १. स पुस्तकम् (पठ्)। २. त्वं पत्रं (लिख्)। ३. त्वं जनकेन सह (गम्)। ४. त्वं रविं (दृश्)। ५. कपिः (नृत्)।

शब्दकोष १६०+२०=१८०] **अभ्यास ९** (व्याकरण)

(क) गुरुः, (गुरु), शिशुः (बालक), भानुः (सूर्य), इन्दुः (चन्द्रमा), शत्रुः (शत्रु), पशुः (पशु), तरुः (वृक्ष), साधुः (सज्जन, सरल, चतुर), वायुः (हवा)। काणः (काना), कर्णः (कान), बधिरः (बहरा), विवादः (विवाद)। नेत्रम् (आँख), सुखम् (सुख), दुःखम् (दुःख), हसितम् (हँसना)। (१७)। (ख) वस् (रहना), जीव् (जीना)। (२) (ग) अलम् (बस) (१)।

सूचना—(क) गुरु—वायु, गुरुवत्। (ख) वस्—जीव्, भवतिवत्।

व्याकरण (गुरु, लृट्, तृतीया)

१. गुरु शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द संख्या ३)। संक्षिप्त रूप लगाकर शिशु आदि के रूप बनाओ। नियम १० इन शब्दों में लगेगा—गुरु, शत्रु, तरु। जैसे—गुरुणा, गुरूणाम्। शत्रुणा, शत्रूणाम्।

भू—लृट् (भविष्यत्)

				संक्षिप्त रूप		
भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र०पु०	(इ) स्यति	(इ) स्यतः	(इ) स्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म०पु०	(इ) स्यसि	(इ) स्यथः	(इ) स्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ०पु०	(इ) स्यामि	(इ) स्यावः	(इ) स्यामः

★सूचना (क) निम्नलिखित धातुओं में 'इष्यति' आदि लगाकर रूप बनावें— भू, पठ्, गम्, रक्ष्, वद्, आगम्, कृ, खाद्, क्रीड्, पत्, स्मृ, हृ, इष्, लिख्, चुर्, चिन्त्, कथ्, भक्ष्, रच्, दिव्, नृत्, नश्, भ्रम्। जैसे—पठिष्यति, गमिष्यति। (ख) इनमें 'स्यति' आदि लगावें—पच्, नम्, दृश्, स्था, पा, घ्रा, सद्, जि, नी, तुद्, स्पृश्, प्रच्छ्, विश्, वस्। जैसे, स्थास्यति, पास्यति।

इन धातुओं के क्रमशः लृट् के रूप उदाहरण-वाक्यों में देखो।

★**नियम १७**— अलम् (बस, मत) के साथ तृतीया होती है। जैसे—झगड़ा मत करो—अलं विवादेन। मत हँसो—अलं हसितेन।

★**नियम १८**—(येनाङ्गविकारः) शरीर के जिस अंग में विकार से विकृति दिखाई पड़े, उसमें तृतीया होती है। जैसे नेत्रेण काणः (एक आँख से काना)।

★**नियम १९**— प्रकृति आदि क्रियाविशेषण शब्दों में तृतीया होती है। जैसे—स्वभाव से सरल-प्रकृत्या साधुः। सुखेन जीवति। दुःखेन जीवति।

अभ्यास ९

१. उदाहरण-वाक्य—१. वह पढ़ेगा—स पठिष्यति। २. तू पढ़ेगा— त्वं पठिष्यसि। ३. मैं पढ़ूँगा—अहं पठिष्यामि। ४. स गृहं गमिष्यति, हसिष्यति, बालकं रक्षिष्यति, वदिष्यति, अत्र आगमिष्यति, कार्यं करिष्यति, भोजनं खादिष्यति, क्रीडिष्यति, पतिष्यति, स्मरिष्यति, हरिष्यति, एषिष्यति, लेखिष्यति, चोरयिष्यति, चिन्तयिष्यति, कथयिष्यति, भक्षयिष्यति, रचयिष्यति, देविष्यति, नर्तिष्यति, नशिष्यति, भ्रमिष्यति च। ५. स भोजनं पक्ष्यति, गुरुं नंस्यति, पुत्रं द्रक्ष्यति, स्थास्यति, जलं पास्यति, पुष्पं घ्रास्यति, सत्स्यति, शत्रुं जेष्यति, पुस्तकं नेष्यति, दुर्जनं तोत्स्यति, पुष्पं स्प्रक्ष्यति, प्रश्नं प्रक्ष्यति, गृहं प्रवेक्ष्यति, अत्र वत्स्यति च।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. वह पुस्तक पढ़ेगा। २. वह गाँव जायेगा। ३. वह हँसेगा। ४. वह बालक की रक्षा करेगा। ५. वह बोलेगा। ६. वह घर जायेगा। ७. वह काम करेगा। ८. वह फल खायेगा। ९. वह खेलेगा। १०. पत्ता गिरेगा। (ख) ११. तू ईश्वर को स्मरण करेगा। १२. तू धन नहीं हरेगा। १३. तू चाहेगा। १४. तू पत्र लिखेगा। १५. तू धन नहीं चुरायेगा। १६. तू सोचेगा। १७. तू कथा कहेगा। १८. तू फल खायेगा। १९. तू पुस्तक बनायेगा। २०. तू नाचेगा। (ग) २१. मैं भ्रमण करूँगा। २२. मैं भोजन पकाऊँगा। २३. मैं पिता को नमस्कार करूँगा। २४. मैं चन्द्रमा को देखूँगा। २५. मैं यहाँ रुकूँगा। २६. मैं जल पीऊँगा। २७. मैं शत्रु को जीतूँगा। (घ) २८. विवाद मत करो। २९. मत हँसो। ३०. वह आँख से काना है। ३१. वह कान से बहरा है। ३२. वह स्वभाव से सरल है। ३३. वह सुख से रहता है। ३४. वह दुःख से रहता है।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अलं विवादस्य।	अलं विवादेन।	१७
(२) कर्णस्य बधिरः।	कर्णेन बधिरः।	१८

४. अभ्यास—(क) २ (क), (ख), (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) इन शब्दों के रूप लिखो—गुरु, शिशु, भानु, शत्रु, वायु। (ग) इनके लृट् के रूप लिखो—भू, पठ्, गम्, वद्, कृ, खाद्, हृ, लिख्, दृश्, स्था, पा, जि।

शब्दकोष १८०+२०=२००] **अभ्यास १०** (व्याकरण)

(क) सर्व (सब), तत् (वह), यत्, (जो), एतत् (यह), किम्, (कौन) (सर्वनाम)। ब्राह्मण: (ब्राह्मण), क्षत्रिय: (क्षत्रिय), वैश्य: (वैश्य), शूद्र: (शूद्र), वर्ण: (वर्ण), पाठ: (पाठ), लेख: (लेख), मोदकम् (लड्डू), दुग्धम् (दूध)। (१४)। (ख) अस् (होना), दा (यच्छ्) देना, धाव् (दौड़ना), चल् (चलना), रुच् (अच्छा लगना) (४)। (ग) नमः (नमस्कार), स्वस्ति (आशीर्वाद)। (२)

व्याकरण (सर्वनाम पुंलिंग, अस् धातु, चतुर्थी)

सूचना—(क) सर्व—किम्, सर्ववत्। (ख) यच्छ्—चल्, भवतिवत्।

१. सर्व शब्द के पुंलिंग के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द संख्या ३४ क)।

सूचना—तत्, यत्, एतत् और किम् के रूप पुंलिंग में सर्व के तुल्य चलते हैं। इनका क्रमशः त, य, एत और क रूप रहता है, इनके ही रूप चलेंगे। तत् और एतत् का प्रथमा एकवचन में क्रमशः सः, एषः रूप बनता है। जैसे—सः तौ ते। यः यौ ये। एषः एतौ एते। कः कौ के इत्यादि।

२. अस् धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप स्मरण करो (देखो धातु० २३)।

३. दा (यच्छ्) के रूप भवति के तुल्य चलेंगे, परन्तु लृट् में दास्यति होगा। जैसे—यच्छति, यच्छतु आदि। रुच् का लट् प्र० एक० में रोचते रूप होता है।

★नियम २०—सर्वनाम और विशेषण शब्दों का वही लिंग, विभक्ति और वचन होता है, जो विशेष्य का होता है। जैसे—सः बालकः, तं बालकम्, तेन बालकेन। कः मनुष्यः, यः मनुष्यः, एषः मनुष्यः। तस्य नरस्य। तस्मिन् वृक्षे।

★नियम २१—सम्प्रदान कारक (दान देना आदि) में चतुर्थी होती है। जैसे—ब्राह्मणाय धनं यच्छति ददाति वा। बालकाय पुस्तकं ददाति।

★नियम २२—नमः और स्वस्ति के साथ चतुर्थी होती है। जैसे—गुरवे नमः। जनकाय नमः। पुत्राय स्वस्ति। शिष्याय स्वस्ति।

★नियम २३—रुच् (अच्छा लगना) अर्थ की धातुओं के साथ चतुर्थी होती है। जैसे—शिष्याय मोदकं रोचते। पुत्राय दुग्धं रोचते।

अभ्यास १०

१. उदाहरण-वाक्य—१. वह किस ब्राह्मण को धन देता है—स कस्मै ब्राह्मणाय धनं यच्छति। २. स तस्मै ब्राह्मणाय धनं ददाति। ३. गुरु को नमस्कार—गुरवे नमः। ४. पुत्र को आशीर्वाद—पुत्राय स्वस्ति। ५. पुत्र को फल अच्छा लगता है—पुत्राय फलं रोचते। ६. सर्वे छात्राः अत्र सन्ति। ७. ये छात्राः अत्र सन्ति, ते सर्वे धावन्तु। ८. एषः बालकः चलति। ९. चत्वारः वर्णाः सन्ति। १०. सः अस्तु, त्वम् एधि, अहम् असानि च। ११. सः अत्र आसीत्, त्वम् आसीः, अहं च आसम्।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. वह आदमी इस ब्राह्मण को धन देता है। २. वह सज्जन उस बालक को पुस्तक देता है। ३. वह पिता पुत्र को लड्डू देता है। ४. वह गुरु किस शिष्य को फल देता है? ५. वह गुरु इस शिष्य को फल देता है। ६. उस गुरु को नमस्कार। ७. इस शिष्य को आशीर्वाद। ८. किस बालक को फल अच्छा लगता है? ९. पुत्र को लड्डू अच्छा लगता है। १०. गुरु सारे शिष्यों को फल देता है। (ख) ११. चार वर्ण हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। १२. वह बालक पाठ पढ़ता है। १३. वह शिष्य लेख लिखता है। १४. वह शिशु चलता है। १५. यह क्षत्रिय दौड़ता है। (ग) १६. वह है। १७. तू है। १८. मैं यहाँ हूँ। १९. वह वहाँ होवे। २०. तू यहाँ हो। २१. मैं यहीं होऊँ। २२. वह यहाँ था। २३. तू कहाँ था? २४. मैं यहाँ ही था।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) एतं ब्राह्मणं धनं ददाति।	एतस्मै ब्राह्मणाय०।	२०, २१
(२) कं बालकं फलं रोचते।	कस्मै बालकाय०।	२०, २३
(३) गुरुं नमः। शिष्यं स्वस्ति।	गुरवे नमः। शिष्याय०।	२२

४. अभ्यास—(क) २ (क) को बहुवचन में बदलो। (ख) २ (ग) को बहुवचन बनाओ। (ग) सर्व, तत्, यत्, एतत् और किम् के पुंलिंग के रूप लिखो। (घ) अस् धातु के लट्, लोट् और लङ् के पूरे रूप लिखो।

५. वाक्य बनाओ—यच्छति, ददाति, रोचते, नमः, स्वस्ति, आसीत्।

६. रिक्त स्थान भरो—१. सः……फलं यच्छति। २. स पुत्राय……। ३. ……नमः। ४. ……स्वस्ति। ५. ……आसीत्। ६. दुग्धं रोचते।

शब्दकोष २००+२०=२२०] **अभ्यांस ११** (व्याकरण)

(क) मूर्ख: (मूर्ख), चोर: (चोर), मोक्ष: (मोक्ष), स्नानम् (स्नान), पठनम् (पढ़ना), भक्षणम् (खाना)। (६)। **(ख)** क्रुध् (क्रोध करना), कुप् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना), असूय् (दोष निकालना), निवेदि (निवेदन करना), उपदिश् (उपदेश देना), क्रन्द् (रोना)। (८) **(ग)** अर्थम् (लिए), कृते (लिए)। (२)। **(घ)** सुन्दरम् (सुन्दर), शोभनम् (अच्छा), समीचीनम् (अच्छा), मधुरम् (मीठा)। (४)।

सूचना—(क) मूर्ख—मोक्ष, रामवत्। स्नान—भक्षण, गृहवत्।

व्याकरण (सर्वनाम नपुंसक, अस् धातु, चतुर्थी)

१. सर्व शब्द के नपुंसक लिंग के पूरे रूप स्मरण करो (देखो शब्द० ३४ ख)। तत्, यत्, एतत् और किम् के रूप नपुंसक लिंग में सर्व के तुल्य चलेंगे। इन सबके रूप तृतीया से सप्तमी तक पुंलिंगवत् चलेंगे। प्रथमा और द्वितीया में अम्, ए, आनि लगेगा। तत् आदि के प्रथमा और द्वितीया एकवचन में तत्, यत्, एतत्, किम रूप ही रहेंगे।

२. अस् धातु के विधिलिङ् और लृट् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २३)। अस् को लृट् में भू होता है। अत: भविष्यति आदि रूप बनेंगे।

३. क्रुध् आदि के ये रूप बनाकर भू के तुल्य रूप चलेंगे—क्रुध्यति, कुप्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति, निवेदयति, उपदिशति, क्रन्दति।

★**नियम २४**—(क्रुधद्रुहेर्ष्या०) क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय् अर्थ की धातुओं के साथ जिस पर क्रोध किया जाय, उसमें चतुर्थी होती है। राम: मूर्खाय (राम मूर्ख पर) क्रुध्यति, कुप्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति।

★**नियम २५**—कथ्, निवेदय्, उपदिश् धातुओं के साथ चतुर्थी होती है। जैसे—शिष्याय (शिष्य को) कथयति, निवेदयति, उपदिशति। शिष्यम् उपदिशति वा।

★**नियम २६**—जिस प्रयोजन के लिए जो वस्तु या क्रिया होती है, उसमें चतुर्थी होती है। मोक्षाय हरिं नमति। शिशु: दुग्धाय क्रन्दति।

★**नियम २७**—चतुर्थी के अर्थ में अर्थम् और कृते अव्ययों का प्रयोग होता है। अर्थम् समास होकर शब्द के साथ मिल जाता है। कृते के साथ षष्ठी होती है। जैसे—पठनार्थम्, भोजनस्य कृते (भोजन के लिए)।

अभ्यास ११

१. उदाहरण-वाक्य— १. कृष्णः तस्मै दुर्जनाय (उस दुर्जन पर) क्रुध्यति, कुप्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति वा। २. शिष्यः तस्मै गुरवे कथयति। ३. पुत्रः जनकाय निवेदयति। ४. गुरुः शिष्याय शिष्यं वा उपदिशति। ५. ज्ञानाय गुरुं नमति। ६. स स्नानार्थं गच्छति। ७. त्वं भोजनस्य कृते अत्र आगच्छ। ८. तत् फलं, तानि पुस्तकानि च अत्र सन्ति। ९. तानि पुष्पाणि सुन्दराणि शोभनानि च सन्ति। १०. स अत्र स्यात्, त्वं स्याः, अहं च स्याम्।

संस्कृत बनाओ— (क) १. राम चोर पर क्रोध करता है। २. चोर सज्जन से द्रोह करता है। ३. मूर्ख विद्वान् से ईर्ष्या करता है। ४. दुर्जन सज्जन के दोष निकालता है। ५. सेनापति उस राजा से कहता है। ६. बालक उस गुरु से निवेदन करता है। ७. मुनि बालक को उपदेश देता है। ८. वह मोक्ष के लिए विद्या पढ़ता है। ९. वह नहाने के लिए वहाँ जाता है। १०. वह पढ़ने के लिए विद्यालय जाता है। ११. वह खाने के लिए फल चाहता है। १२. बालक दूध के लिए रोता है। **(ख)** १३. वे पुस्तकें सुन्दर हैं। १४. वे फल मधुर हैं! १५. वे फूल अच्छे हैं। १६. वह कार्य अच्छा है। १७. जो कार्य अच्छा है, वह करो (कुरु)। १८. कौन से फल मीठे हैं? **(ग)** १९. वह घर पर होवे। २०. तू वहाँ होना। २१. मैं यहाँ होऊँ। २२. वह वहाँ होगा। २३. तू कहाँ होगा? २४. मैं यहाँ होऊँगा।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) चोरः सज्जनात् द्रुह्यति।	चोरः सज्जनाय द्रुह्यति।	२४
(२) तं नृपं कथयति।	तस्मै नृपाय कथयति।	२५, २०
(३) ते पुस्तकानि सुन्दराः०।	तानि पुस्तकानि सुन्दराणि।	२०

अभ्यास—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। **(ख)** अस् धातु के विधिलिङ् और लृट् के रूप लिखो। **(ग)** सर्व, तत्, यत्, एतत् और किम् के नपुंसक लिंग के रूप लिखो।

५. वाक्य बनाओ— क्रुध्यति, द्रुह्यति, कथयति, अर्थम्, कृते, स्याम्।

६. रिक्त स्थान भरो— १. हरिः……क्रुध्यति। २. मूर्खः……असूयति। ३. सः……कथयति। ४. भोजनस्य कृते……। ५. तानि फलानि……सन्ति।

शब्दकोष २२०+२०=२४०] **अभ्यास १२** (व्याकरण)

(क) वृक्षः (वृक्ष), अश्वः (घोड़ा), प्रासादः (महल), यवः (जौ), क्षेत्र-पालकः (खेत का रक्षक), क्षेत्रम्, (खेत)। (६)। **(ख)** भी (डरना), त्रै (रक्षा करना), आनी (लाना), वृ (हटाना), अधि+इ (पढ़ना)। (५)। **(ग)** अतः (इसलिए), अथवा (अथवा), वा (अथवा), यदि (यदि), सर्वत्र (सब जगह), सदा (सदा), सर्वदा (सदा), अन्यत्र (और जगह), अवश्यम् (अवश्य)। (९)।

सूचना—(क) वृक्ष—क्षेत्रपालक, रामवत्।

व्याकरण (सर्वनाम स्त्रीलिंग, कृ धातु, पंचमी)

१. सर्व शब्द के स्त्रीलिंग के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ३०ग)। तत्, यत्, एतत् और किम् के रूप स्त्रीलिंग में सर्वा के तुल्य चलेंगे। इनके क्रमशः ता, या एता और का शब्द बनते हैं, इनके ही रूप चलेंगे। ता और एता के प्रथमा एकवचन में सा और एषा रूप होते हैं। शेष सर्वावत्।

२. कृ धातु के लट्, लोट् और लङ् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३६)।

३. भी आदि के क्रमशः ये रूप बनते हैं—बिभेति, त्रायते, आनयति (भवतिवत्), वारयति, अधीते।

★नियम २८- अपादान कारक में पंचमी होती है। जैसे-पेड़ से पत्ता गिरता है—वृक्षात् पत्रं पतति। अश्वात् मनुष्यः पतति।

★नियम २९- **(भीत्रार्थानां भयहेतुः)** भय और रक्षा अर्थ की धातुओं के साथ भय के कारण में पंचमी होती है। जैसे—चोराद् बिभेति। चोरात् त्रायते।

★नियम ३०- जिससे विद्या पढ़ी जाये, उसमें पंचमी होती है। जैसे—गुरोः पठति। उपाध्यायात् अधीते।

★नियम ३१- जिस वस्तु से किसी को हटाया जाय, उसमें पंचमी होती है। क्षेत्रपालकः यवेभ्यः पशुं वारयति निवारयति वा।

अभ्यास १२

१. उदाहरण-वाक्य— १. प्रासादात् बालकः पतति। २. तस्याः लतायाः एतत् पुष्पं पतति। ३. बालकः दुर्जनात् बिभेति। ४. सज्जनः तां बालिकां चोरात् त्रायते। ५. क्षेत्रपालकः क्षेत्रात् पशुं वारयति। ६. एतां लतां पश्य। ७. का कन्यां पश्यसि? ८. तस्यै बालिकायै फलं यच्छ। ९. सः कार्यं करोतु, त्वं कुरु, अहं च करवाणि। १०. सः कार्यम् अकरोत्, त्वम् अकरोः, अहं च अकरवम्।

२. संस्कृत बनाओ— (क) १. वृक्ष से पत्ते गिरते हैं। २. घोड़े से बालक गिरा। ३. गाँव से बालक आता है। ४. वह बालिका घर से पुस्तक लाती है। ५. शिष्य गुरु से डरता है। ६. राजा बालक को चोर से बचाता है। ७. वह बालक गुरु से पढ़ता है। ८. वह शिष्य मुनि से विद्या पढ़ता है। ९. क्षेत्रपाल खेत से पशु को हटाता है। १०. महल से पुत्र गिरा। (ख) ११. उस लता को देखो। १२. इस कन्या को फल दो। १३. इस लता से यह फूल गिरा। १४. सारी कथा कहो। १५. किस कन्या को पूछते हो? (ग) १६. वह बालक काम करता है। १७. तू भोजन करता है। १८. मैं स्नान करता हूँ। १९. वह काम करे। २०. तू भी सदा काम कर। २१. मैं अवश्य काम करूँ। २२. उसने अन्यत्र काम किया। २३. तूने काम किया। २४. मैंने काम किया।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अश्वेन बालकः अपतत्।	अश्वात् बालकः अपतत्।	२८
(२) सः गुरुणा पठति।	स गुरोः पठति।	३०
(३) तां कन्यां फलं यच्छ।	तस्यै कन्यायै फलं यच्छ।	२०, २१

४. अभ्यास—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) कृ धातु के लट्, लोट् और लङ् के रूप लिखो। (ग) सर्व, तत्, यत्, एतत् और किम् के स्त्रीलिंग के रूप लिखो।

५. वाक्य बनाओ— पतति, बिभेति, त्रायते, वारयति, अधीते, अन्यत्र।

६. रिक्त स्थान भरो—१. वृक्षात् पत्रं……। २. बालकः……बिभेति। ३. चोरात्……। ४. यवेभ्यः पशुं……। ५. तस्याः कन्यायाः पुस्तकम्……।

शब्दकोष २४०+२०=२६०] **अभ्यास १३** (व्याकरण)

(क) युष्मद् (तू) (सर्वनाम)। अङ्कुरः (अंकुर), प्रजा (प्रजा), बीजम् (बीज)। (४)। **(ख)** उद्भू (निकलना), प्रभू (१. उत्पन्न होना, २. समर्थ होना), जन् (उत्पन्न होना), नि+ली (छिपना)। (४)। **(ग)** अति (अधिक), इव (तुल्य), चेत् (यदि), नोचेत् (नहीं तो)। (४) **(घ)** पटुः (चतुर), पटुतरः (उससे चतुर), गुरुः (१. भारी, २. श्रेष्ठ), गुरुतरः (उससे भारी या अच्छा), दूरम् (दूर), समीपम् (पास), पार्श्वम् (समीप), निकटम् (समीप)। (८)।

व्याकरण (युष्मद्, कृ धातु, पंचमी)

१. युष्मद् शब्द के पूरे स्मरण करो। (देखो शब्द० ३९)।

२. कृ धातु के विधिलिङ् और लट् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३६)

३. उद्भू आदि धातुओं के क्रमशः ये रूप होते हैं:—उद्भवति (भवतिवत्), प्रभवति (भवतिवत्), जायते, निलीयते।

★नियम ३२— उद्भवति, प्रभवति, उद्गच्छति, जायते (ये जब उत्पन्न होना या निकलना अर्थ में हो), निलीयते के साथ पंचमी होती है। जैसे—प्रजापति से संसार उत्पन्न होता है—प्रजापतेः लोकः जायते, उद्भवति वा। हिमालयात् गङ्गा उद्भवति, प्रभवति, उद्गच्छति वा। भार्यायाः पुत्रः जायते। बीजेभ्यः अङ्कुराः जायन्ते। नृपात् चोरः निलीयते।—

★नियम ३३— तुलना में जिससे तुलना की जाती है, उसमें पंचमी होती है। जैसे—राम से कृष्ण अधिक चतुर है—रामात् कृष्णः पटुतरः। धन से ज्ञान अधिक अच्छा है—धनात् ज्ञानं गुरुतरम्। दुर्जनात् सज्जनः गुरुतरः। असत्यात् सत्यं गुरुतरम्।

★नियम ३४— दूर और समीपवाची शब्द में पंचमी, द्वितीया और तृतीया तीनों विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—गाँव से दूर-ग्रामाद् दूरम्। जनकस्य समीपम्, समीपात्, समीपेन वा। पिता के पास से आया हूँ- जनकस्य समीपात्, पार्श्वात्, निकटात् वा आगच्छामि।

अभ्यास १३

१. उदाहरण वाक्य— १. बीजेभ्यः अङ्कुराः जायन्ते। २. रमायाः उमा पटुतरा। ३. अहं दूरात् आगच्छामि। ४. रामः कृष्ण इव अति पटुः गुरुः च अस्ति। ५. तुम पढ़ते हो तो पढ़ो, नहीं तो यहाँ से हट जाओ—त्वम् पठसि चेत् पठ, नो चेत् इतः दूरं गच्छ। ६. त्वं पठसि, यूयं पठथ। ७. त्वां पश्यामि, युष्मान् वदामि। ८. त्वया सहः कः एषः अस्ति? ९. तुभ्यं युष्मभ्यं वा किं रोचते? १०. तव गृहं कुत्र अस्ति? ११. सः एतत् कार्यं कुर्यात्, त्वं कुर्याः, अहं च कुर्याम्। १२. स भोजनं करिष्यति।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. बीजों से अंकुर उत्पन्न होते हैं। २. प्रजापति से प्रजा उत्पन्न होती है। ३. हिमालय से गंगा निकलती है। ४. सेनापति से चोर छिपता है। ५. देवदत्त से यज्ञदत्त अधिक चतुर है। ६. धन से विद्या अधिक अच्छी है। ७. मैं गुरु के पास से यहाँ आ रहा हूँ। ८. वह बहुत दूर से आ रहा है। ९. देवदत्त कृष्ण की तरह बहुत चतुर और श्रेष्ठ है। १०. तुम पत्र लिखते हो तो लिखो, नहीं तो यहाँ से हटो। (ख) ११. तू यहाँ आया। १२. मैं तुझको देखता हूँ। १३. तेरे साथ वहाँ कौन है? १४. तुझे फल अच्छा लगता है या लड्डू ? १५. तेरी पुस्तक कहाँ है? (ग) १६. वह काम करे। १७. तू काम कर। १८. मैं भोजन करूँ। १९. वह काम करेगा। २०. तू भोजन करेगा। २१. मैं स्नान करूँगा।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) सेनापतिना चोरः निलीयते।	सेनापतेः चोरः०।	३२
(२) धनेन विद्या गुरुः।	धनात् विद्या गुरुतरा।	३३, २०
(३) करोत्, करेः, करेयम्।	कुर्यात्, कुर्याः, कुर्याम्।	धातुरूप

४. अभ्यास—(क) २ (ख) को द्विवचन और बहुवचन में बदलो। (ख) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ग) युष्मद् शब्द के पूरे रूप लिखो। (घ) कृ धातु के विधिलिङ् और लृट् के रूप लिखो।

५. वाक्य बनाओ— जायते, उद्भवति, उद्गच्छति, निलीयते, त्वया. तुभ्यम्, त्वत्, कुर्यात्, कुर्याः, कुर्याम्, करिष्यति, करिष्यामि।

शब्दकोष २६०+२०=२८०] **अभ्यास १४** (व्याकरण)

(क) अस्मद् (मैं) (सर्वनाम)। छात्रः (विद्यार्थी), अन्नम्, (अन्न), निमित्तम् (कारण), कारणम् (कारण), हेतुः (कारण)। (६)। **(ग)** स्म (भूतकालबोधक अव्यय), उपरि (ऊपर), अधः (नीचे), नीचैः (नीचे), पुरः (सामने), पश्चात् (पीछे), अग्रे (आगे), अग्रतः (आगे), यावत् (१. जितना, २. जब तक), तावत् (१. उतना, २. तब तक), इयत् (इतना), कियत् (कितना)। (१२)। **(घ)** श्रेष्ठः (श्रेष्ठ), पटुतमः (सबसे चतुर)। (२)।

व्याकरण (अस्मद्, षष्ठी विभक्ति)

१. अस्मद् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द ४०)।

नियम ३५— धातु के लट् लकार वाले रूप के साथ 'स्म' अव्यय लगाने से भूतकाल अर्थ हो जाता है। जैसे—वह पढ़ता था—स पठति स्म।

★नियम ३६— सम्बन्धकारक के अर्थ में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—रामस्य पुस्तकम्। कृष्णस्य गृहम्। गङ्गायाः जलम्। वृक्षस्य पत्रम्।

नियम ३७— हेतु शब्द के साथ षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—अध्ययन के हेतु रहता है—अध्ययनस्य हेतोः वसति। धनस्य हेतोः पठति।

नियम ३८— निमित्त अर्थवाले शब्दों (निमित्त, हेतु, कारण, प्रयोजन) के साथ प्रायः सभी विभक्तियाँ होती हैं। जैसे—वह किसलिए पढ़ता है—स किं निमित्तं पठति, केन निमित्तेन, कस्मै निमित्ताय, कस्य हेतोः, कस्मात् कारणात्, केन प्रयोजनेन वा।

★नियम ३९— स्मरण अर्थ की धातुओं के साथ (खेदपूर्वक स्मरण में) कर्म में षष्ठी होती है। जैसे—मातुः स्मरति (माता को खेदपूर्वक स्मरण करता है)।

नियम ४०— बहुतों में से एक को छाँटने के अर्थ में, जिससे छाँटा जाय, उसमें षष्ठी और सप्तमी दोनों होती हैं। छात्रों में राम श्रेष्ठ है—छात्राणां छात्रेषु वा रामः श्रेष्ठः। बालकानां बालकेषु वा कृष्णः पटुतमः।

नियम ४१— उपरि, अधः, नीचैः, पुरः, पश्चात्, अग्रे, अग्रतः के साथ षष्ठी होती है। जैसे—गृहस्य उपरि, अधः, पुरः, पश्चात्, अग्रे वा।

अभ्यास १४

१. उदाहरण-वाक्य—१. यह राम का घर है—एतत् रामस्य गृहम् अस्ति। २. भोजनस्य हेतोः आगच्छ। ३. कस्मात् कारणात् हससि? ४. बालकः जनकस्य स्मरति। ५. शिष्याणां रामः श्रेष्ठः पटुतमः च अस्ति। ६. गृहस्य उपरि, पुरः, पश्चात् च के सन्ति? ७. अहं पठामि। ८. मां पश्य। ९. मया सह रामः अस्ति। १०. मह्यं मोदकं रोचते। ११. मम एतत् पुस्तकम् अस्ति। १२. मयि क्षमा सत्यं च स्तः। १३. यावत् इच्छसि तावत् भक्षय। १४. यावत् गुरुः अत्र अस्ति, तावत् अत्र एव तिष्ठ।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. यह राम की पुस्तक है। २. यह सुशीला का घर है। ३. गंगा का जल मधुर है। ४. वृक्ष के पत्ते लाओ। ५. मैं यहाँ अध्ययन के हेतु रहता हूँ। ६. धन के हेतु विद्या पढ़ो। ७. तुम किसलिए विद्यालय जाते हो? ८. किस कारण तुम पाठशाला नहीं आये? ९. बालक माता को स्मरण करता है। १०. छात्रों में कृष्ण श्रेष्ठ और सबसे चतुर है। ११. कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है। १२. घर के ऊपर, सामने और पीछे बालक हैं। १३. जितना चाहो उतना पढ़ो। १४. जब तक गुरु नहीं कहते हैं, तब तक यहाँ से न जाओ। १५. तुम कितना धन चाहते हो? १६. मैं इतना धन चाहता हूँ। (ख) १७. मुझको देखो। १८. मेरे साथ रमा यहाँ आयी। १९. मुझको फल अच्छे लगते हैं। २०. मेरा घर यह है। २१. मुझमें सत्य और विद्या है।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अध्ययनेन हेतुना वसामि।	अध्ययनस्य हेतोः०।	३७
(२) मातरं स्मरति।	मातुः स्मरति।	३९
(३) कविभ्यः कालिदासः श्रेष्ठतमः।	कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।	४०

४. अभ्यास—(क) २ (ख) को द्विवचन और बहुवचन में बदलो (ख) अस्मद् शब्द के पूरे रूप लिखो।

५. वाक्य बनाओ—अस्मान्, अस्मभ्यम्, अस्मत्, अस्माकम्, अस्मासु, हेतोः, श्रेष्ठः, पटुतमः, यावत्, कियत्, इयत्।

शब्दकोष २८०+२०=३००]   **अभ्यास १५**   (व्याकरण)

(क) कर्तृ (करनेवाला), हर्तृ (हरनेवाला), धर्तृ (धर्ता), श्रोतृ (श्रोता), वक्तृ (वक्ता), गन्तृ (जानेवाला), द्रष्टृ (देखनेवाला), नेतृ (नेता), दातृ (दाता), भोक्तृ (खानेवाला)। गमनम् (जाना), शयनम् (सोना), दानम् (देना), भाषणम् (भाषण, बोलना), भद्रम् (कुशल), कुशलम् (कुशल)। (१६)। **(ग)** समक्षम् (सामने), मध्ये (बीच में), अन्तः (अन्दर), अन्तरे (अन्दर)। (४)।

सूचना— (क) कर्तृ-भोक्तृ, कर्तृवत्। गमन—भाषण, गृहवत्।

व्याकरण (कर्तृ, षष्ठी विभक्ति)

१. कर्तृ शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ४)। हर्तृ आदि के रूप कर्तृ के तुल्य चलेंगे।

★नियम ४२— कृत् प्रत्यय (धातु के अन्त में तृ, ति, अ, अन आदि) लगाकर बने हुए शब्दों के कर्ता और कर्म में षष्ठी होती है। जैसे— बालक का जाना—बालकस्य गमनम्। इसी प्रकार बालक ग शयनम्। धनस्य दानम्। पुस्तकस्य पठनम्। कार्यस्य कर्ता। धनस्य हर्ता। भाषणस्य श्रोता। धनस्य दाता। नराणां नेता।

नियम ४३— कृते (लिए), समक्षम्, मध्ये, अन्तः, अन्तरे के साथ षष्ठी होती है। जैसे—भोजन के लिए—भोजनस्य कृते। घर के सामने, मध्य में या अन्दर—गृहस्य समक्षम्, मध्ये, अन्तः वा।

नियम ४४— दूर और समीपवाची शब्दों के साथ षष्ठी और पंचमी दोनों होती हैं। जैसे—गाँव से दूर—ग्रामस्य ग्रामाद् वा दूरम्। पिता के समीप से—जनकस्य समीपात्। गुरोः पार्श्वात् निकटात् वा।

नियम ४५— आशीर्वादसूचक शब्दों (भद्रम्, कुशलम्, सुखम्, शम् आदि) के साथ षष्ठी और चतुर्थी दोनों होती हैं। जैसे—राम का कुशल हो—रामस्य रामाय वा भद्रम्, कुशलम्, शं भूयात्। (भूयात्—होवे)।

अभ्यास १५

१. उदाहरण-वाक्य—१. बच्चे का पढ़ना मुझे अच्छा लगता है—शिशोः पठनं मह्यं रोचते। २. वालकस्य गमनम्, धनस्य दानम्। ३. कार्यस्य कर्ता, धनस्य हर्ता, दण्डस्य धर्ता, भाषणस्य श्रोता, सत्यस्य वक्ता, ग्रामं गन्ता, विद्यालयस्य द्रष्टा, नराणां नेता, धनस्य दाता, भोजनस्य भोक्ता च एतस्मिन् नगरे सन्ति। ४. कार्यस्य कर्तारं धनस्य हर्तारं च अत्र आनय। ५. वक्तृभ्यः श्रोतृभ्यः नेतृभ्यः च फलानि देहि। ६. दातुः दानं कस्मै न रोचते ?

२. संस्कृत बनाओ— (क) १. पुत्र का पढ़ना हमें अच्छा लगता है। २. बालक का जाना देखो। ३. बच्चे का सोना मनोहर है। ४. पुस्तक का पढ़ना हितकर है। ५. धन का देना अच्छा है। ६. पढ़ने के लिए (कृते) यहाँ आओ। ७. मेरे सामने आओ। ८. खेत के बीच में मनुष्य खड़ा है। ९. घर के अन्तर मनुष्य हैं। १०. मैं पिता के समीप से यहाँ आ रहा हूँ। ११. घर से दूर भ्रमण के लिए जाओ। १२. शिष्य का कुशल हो। (ख) १३. कार्य का कर्ता यहाँ है। १४. पुस्तक का हर्ता वहाँ जाता है। १५. सत्य का धर्ता सुख से रहता है। १६. भाषण सुननेवाला हँसता है। १७. सत्य बोलनेवाला सत्य बोलता है। १८. गाँव जानेवाला गाँव जाता है। १९. लता देखनेवाले को देखो। २०. नेता के साथ मनुष्य जा रहे हैं। २१. धन के दाता को ये फूल दो। २२. भोजन खानेवाले को फल और फूल दो।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) पुत्रं पठनं मम रोचते।	पुत्रस्य पठनं मह्यं रोचते।	४२, २३
(२) जनकं समीपात् आगच्छामि।	जनकस्य समीपात्०।	४४
(३) धनं दातारं फलानि यच्छ।	धनस्य दात्रे फलानि०।	४२, २१

४. अभ्यास—(क) २ (ख) को बहुवचन में बदलो। (ख) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—कर्तृ, हर्तृ, श्रोतृ, वक्तृ, नेतृ, दातृ।

५. वाक्य बनाओ—गमनम्, पठनम्, शयनम्, दानम्, भाषणम्, कर्तारः, हर्तारम्, धर्तारम्, श्रोता, वक्तृभ्यः, नेतारः, दातुः, समक्षम्, कृते, कुशलम्।

शब्दकोषं ३००+२०=३२०] **अभ्यास १६** (व्याकरण)

(क) पितृ (पिता), भ्रातृ (भाई), जामातृ (जवाँई, दामाद), धर्मः (धर्म), प्रातःकालः (प्रातःकाल), मध्याह्नः (दोपहर), सायंकालः (सायंकाल), दिनम् (दिन), वस्त्रम् (वस्त्र)। (९)। **(ख)** दह् (जलाना), ज्वल् (जलना), गै (गाना), आ+ह्वे (पुकारना, बुलाना), अभि+लष् (चाहना)। कृतः (किया), गतः (गया), आगतः (आया)। (८)। **(ग)** प्रातः (प्रातःकाल), सायम् (सायंकाल), नक्तम् (रात्रि)। (३)।

सूचना—(क) पितृ—जामातृ, पितृवत्। (ख) दह्—अभिलष्, भवतिवत्।

व्याकरण (पितृ, सप्तमी विभक्ति)

१. पितृ शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ५)। मातृ और जामातृ के रूप पितृ के तुल्य चलेंगे।

२. दह् आदि के रूप भू के तुल्य चलेंगे। दहति, ज्वलति, गायति, आह्वयति, अभिलषति।

★नियम ४६—अधिकरण कारक में सप्तमी होती है। जैसे—विद्यालय में पढ़ता है—विद्यालये पठति। गृहे वस्त्राणि सन्ति। नगरे मनुष्याः सन्ति। (देखो नियम ४० भी)।

★नियम ४७—'विषय में, बारे में' अर्थ में तथा समयबोधक शब्दों में सप्तमी होती है। जैसे—मोक्ष के बारे में इच्छा है—मोक्षे इच्छा अस्ति। धर्म के विषय में अभिलाषा है—धर्मे अभिलाषः अस्ति। वह प्रातःकाल यहाँ आता है—स प्रातःकाले प्रातः वा आगच्छति। स मध्याह्ने, सायंकाले सायं वा कार्यं करोति।

सूचना—प्रातः, सायम्, नक्तम्, के रूप नहीं चलते हैं, ये अव्यय हैं। प्रातःकाल आदि के रूप चलते हैं।

★नियम ४८—एक क्रिया के बाद दूसरी क्रिया होने पर पहली क्रिया में सप्तमी होती है। कर्तृवाच्य में कर्ता और कृदन्त में सप्तमी होगी। कर्मवाच्य में कर्म और कृदन्त में सप्तमी होगी तथा कर्ता में तृतीया। जैसे, राम के वन जाने पर भरत आये—रामे वनं गते भरतः आगतः। मेरे कार्य कर लेने पर गुरु आये—मया कार्ये कृते गुरुः आगतः। रामे आगते सीता अपि आगता।

अभ्यास १६

१. उदाहरण-वाक्य— १. गृहे बालकाः सन्ति। २. मम पठने अभिलाषः अस्ति। ३. प्रातःकाले सायंकाले च ईश्वरं नमत। ४. धर्मे अभिलाषं कुरु। ५. अध्ययने कृते भोजनं कुरु। ६. अग्निः गृहं दहति। ७. अग्निः गृहे ज्वलति। ८. शान्तिः गानं गायति। ९. पिता पुत्रम् आह्वयति। १०. शिष्यः विद्याम् अभिलषति। ११. नक्तम् (रात में) अधिकं न पठ।

२. संस्कृत बनाओ— (क) १. राम विद्यालय में पढ़ता है। २. इस कक्षा में १० बालक हैं। ३. घर में वस्त्र और पुस्तकें हैं। ४. गाँव में मनुष्य रहते हैं। ५. मेरी धर्म के विषय में इच्छा है। ६. पढ़ाई के विषय में अभिलाषा करो। ७. उसकी मोक्ष के बारे में इच्छा है। ८. प्रातःकाल और सायंकाल गुरु को प्रणाम करो। ९. दिन में पढ़ो। १०. रात्रि में अधिक न पढ़ो और न लिखो। ११. मेरे घर आने पर कृष्ण भी आया। १२. युधिष्ठिर के वन जाने पर अर्जुन भी वन गये। (ख) १३. पिताजी आ रहे हैं। १४. पिता को देखो। १५. पिता के साथ पुत्र भी आया। १६. पिता को भोजन दो। १७. पिता से विद्या पढ़ो। १८. पिता की यह पुस्तक है। १९. भाई को बुलाओ। २०. जँवाई को फल दो। (ग) २१. आग वस्त्रों और वृक्षों को जलाती है। २२. आग जल रही है। २३. बालिका गाना गा रही है। २४. गुरु शिष्य को बुलाता है। २५. वह धर्म को चाहता है।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) पठनस्य अभिलाषं कुरु।	पठने अभिलाषं कुरु।	४७
(२) मम गृहे आगते०।	मयि गृहम् आगते०।	४८, १३
(३) पितुः सह पुत्रः आगतः।	पित्रा सह पुत्रः०।	१५

४. अभ्यास— (क) २ (ग) को लोट्, लङ् और विधिलिङ् में बदलो। (ख) पितृ और भ्रातृ के पूरे रूप लिखो। (ग) इनके लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् के पूरे रूप लिखो—दह्, ज्वल्, गै, आ+ह्वे, अभि+लष्।

५. वाक्य बनाओ— प्रातःकाले, सायंकाले, नक्तम्, अदहत्, अज्वलत्, अगायत्, आह्वयत्, अभ्यलषत्, कृते, गते, आगते।

शब्दकोष ३२०+२०=३४०] **अभ्यास १७** (व्याकरण)

(क) भगवत् (भगवान्), भवत् (आप), श्रीमत् (श्रीमान्), बुद्धिमत् (बुद्धिमान्), धनवत् (धनवान्), बलवत् (बलवान्)। स्नेहः (स्नेह), विश्वासः (विश्वास), मृगः (हरिण), बाणः (बाण)। श्रद्धा (श्रद्धा)। (११)। **(ख)** क्षिप् (फेंकना), मुच् (छोड़ना)। (२)। **(घ)** आसक्तः (१. अनुरक्त, २. लगा हुआ), युक्तः (लगा हुआ), लग्नः (लगा हुआ), तत्परः (लगा हुआ), कुशलः (चतुर), निपुणः (चतुर), चतुरः (चतुर)। (७)।

सूचना— (क) भगवत्—बलवत् भगवत् के तुल्य।

व्याकरण (भगवत्, सप्तमी विभक्ति)

१. भगवत् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ८)। भवत् आदि के रूप भगवत् के तुल्य चलेंगे।

२. क्षिप् और मुच् के रूप लट् में क्षिपति, मुञ्चति हैं। इनके ये रूप बनाकर भवति के तुल्य रूप चलेंगे।

★नियम ४९— प्रेम, आसक्ति और आदरसूचक शब्दों और धातुओं के साथ सप्तमी होती है। जैसे-उसका मुझ पर स्नेह है—तस्य मयि स्नेहः अस्ति। तस्य कन्यायां स्नेहः अस्ति। पिता पुत्रे स्नेहं करोति। रामः रमायाम् आसक्तः अस्ति। मम गुरौ आदरः अस्ति।

★नियम ५०— संलग्न और चतुर अर्थवाले शब्दों के साथ सप्तमी होती है। जैसे—वह पढ़ाई में संलग्न है—सः पठने लग्नः, युक्तः, तत्परः, आसक्तः वा अस्ति। राम विद्या में निपुण है—रामः विद्यायां कुशलः, निपुणः, चतुरः, पटुः, दक्षः वा अस्ति।

★नियम ५१— फेंकना अर्थ की धातुओं के साथ तथा विश्वास और श्रद्धा अर्थ-वाली धातुओं और शब्दों के साथ सप्तमी होती है। जैसे—मृग पर बाण फेंकता है-मृगे बाणं क्षिपति, मुञ्चति वा। उसका धर्म पर विश्वास है—तस्य धर्मे विश्वासः श्रद्धा वा अस्ति। स धर्मे विश्वसिति। स मम वचने विश्वसिति।

अभ्यास १७

१. उदाहरण वाक्य—१. बुद्धिमान् शिष्येषु स्नेहं करोति। २. स धनवान् कन्यायाम् आसक्तः अस्ति। ३. अहं कार्ये लग्नः अस्मि। ४. सेनापतिः शत्रौ बाणं क्षिपति मुञ्चति वा। ५. मम भगवति श्रद्धा विश्वासः च स्तः। ६. भवान् कुतः आगच्छति? ७. श्रीमन्तं बुद्धिमन्तं च नमत। ८. धनवद्भिः श्रीमद्भिः च सह स वसेत्। ९. भवते नमः। १०. एतत् तस्य श्रीमतः गृहम् अस्ति। ११. भगवति विश्वासं श्रद्धां च कुरुत। १२. बुद्धिमत्सु विद्या धनवत्सु धनं बलवत्सु बलं च भवन्ति।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. गुरु शिष्य पर स्नेह करता है। २. कृष्ण का उस कन्या से स्नेह है। ३. राम रमा पर आसक्त है। ४. उस गुरु का शिष्यों में आदर है। ५. वह बुद्धिमान् पढ़ाई में संलग्न है। ६. कृष्ण वेद में निपुण और चतुर है। ७. मैं खेल में कुशल हूँ। ८. राजा दुर्जन पर बाण फेंकता है। ९. सेनापति मृग पर बाण छोड़ता है। १०. मेरा सत्य और धर्म पर विश्वास है। ११. तेरी भगवान् पर श्रद्धा है। १२. वह मेरे वचन पर विश्वास करता है। (ख) १३. भगवान् को नमस्कार करो। १४. आप क्या पढ़ते हैं? १५. आपके पास पढ़ने के लिए आया हूँ। १६. श्रीमान् को नमस्कार। १७. उस बुद्धिमान् को ये पुस्तकें दो। १८. यह उस धनवान् का घर है। १९. बलवान् बालक की रक्षा करता है। २०. आपमें ज्ञान, विद्या, सत्य और धर्म हैं।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) गुरुः शिष्यं स्नेहं करोति।	गुरुः शिष्ये स्नेहं०।	४९
(२) राजा दुर्जनं बाणं क्षिपति।	राजा दुर्जने बाणं०।	५१
(३) श्रीमानं नमः।	श्रीमते नमः।	२२, शब्दरूप
(४) तस्य धनवानस्य गृहम्०।	तस्य धनवतः गृहम्०।	शब्दरूप

४. अभ्यास—(क) २ (ख) को बहुवचन में बदलो। (ख) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—भगवत्, भवत्, श्रीमत्, बुद्धिमत्, धनवत्, बलवत्।

५. वाक्य बनाओ—स्नेहः, आसक्तः, आदरः, लग्नः, कुशलः, क्षिपति, मुञ्चति, श्रद्धा, विश्वसिति, भगवन्तम्, भवान्, धनवतः।

शब्दकोष ३४०+२०=३६०] **अभ्यास १८** (व्याकरण)

(क) करिन् (हाथी), पक्षिन् (पक्षी), दण्डिन् (१. संन्यासी, २. दण्डधारी), विद्यार्थिन् (विद्यार्थी), स्वामिन् (स्वामी), मन्त्रिन् (मन्त्री), ज्ञानिन् (ज्ञानी), योगिन् (योगी), त्यागिन् (त्यागी), धनिन् (धनी)। (१०)। **(ख)** सेव् (सेवा करना), लभ् (पाना), वृध् (बढ़ना), मुद् (प्रसन्न होना), सह् (सहन करना), याच् (माँगना)। (६)। **(ग)** सकृत् (एक बार), असकृत् (बार-बार), मुहुः (बार-बार), पुनः (फिर) (४)।

सूचना—(क) करिन्—धनिन्, करिन् के तुल्य। (ख) सेव्—याच्, सेवतेवत्।

व्याकरण (करिन्, लट्, अनुस्वार-सन्धि)

१. करिन् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० १०)। पक्षिन् आदि के रूप इसी प्रकार चलाओ। नियम १० इन शब्दों में लगेगा—करिन्, पक्षिन्, मन्त्रिन्।

२. सेव्—लट् (आत्मनेपद) **संक्षिप्त रूप**

सेवते	सेवेते	सेवन्ते	प्र० पु०	अते	एते	अन्ते
सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे	म० पु०	असे	एथे	अध्वे
सेवे	सेवावहे	सेवामहे	उ० पु०	ए	आवहे	आमहे

संक्षिप्त रूप लगाकर लभ् आदि के रूप बनाओ। जैसे—लभते, वर्धते, मोदते, सहते, याचते।

सूचना—भ्वादिगण (१) की सभी आत्मनेपदी धातुओं के रूप सेव् के तुल्य चलेंगे।

३. **सूचना**— जिन धातुओं के अन्त में लट् में अति, अतः, अन्ति आदि लगते हैं, उन्हें परस्मैपदी कहते हैं और जिनके अन्त में अते, एते, अन्ते आदि लगते हैं, उन्हें आत्मनेपदी कहते हैं।

४. अभ्यास ५, ६, ७ में दिये प्रथमा, द्वितीया के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

★**नियम ५२—(मोऽनुस्वारः)** पद (शब्द) के अन्तिम म् के बाद कोई व्यंजन हो तो म् को अनुस्वार (ं) हो जाता है। बाद में स्वर होगा तो म् नीचे रहेगा। जैसे—कार्यम् + करोति = कार्यं करोति। सत्यम् + वद = सत्यं वद। गृहम् + गच्छति = गृहं गच्छति। गृहम् + अगच्छत् = गृहमगच्छत्।

अभ्यास १८

१. उदाहरण-वाक्य— १. वने करिणः सन्ति। २. रामः पक्षिणः पश्यति। ३. दण्डी दण्डेन सह भ्रमति। ४. विद्यार्थिनः स्वामिनः मन्त्रिणः ज्ञानिनः योगिनः त्यागिनः धनिनः च अत्र सन्ति। ५. विद्यार्थी गुरुं सेवते। ६. मन्त्री धनं लभते। ७. त्वं सुखेन वर्धसे। ८. अहं विद्यया मोदे। ९. योगी दुःखं सहते। १०. विद्यार्थी नृपं धनं याचते। ११. सकृत् कार्यं कुरु। १२. असकृत् मुहुः पुनः वा विद्यां पठ, सत्यं वद, धर्मं च कुरु।

२. संस्कृत बनाओ— (क) १. इस नगर में पाँच हाथी हैं। २. इन पक्षियों को देखो। ३. दण्डी इधर आ रहा है। ४. विद्यार्थी ज्ञानी, योगी और त्यागी की सेवा करता है। ५. स्वामी धनी से धन माँगता है। ६. योगी दुःख सहता है। ७. मन्त्री धन पाता है और सुखपूर्वक बढ़ता है। ८. योगी और त्यागी प्रसन्न होते हैं। (ख) ९. योगी एक बार भोजन करता है। १०. धनी बार-बार भोजन करता है। ११. ज्ञानी के चारों ओर विद्यार्थी हैं। १२. मन्त्री के दोनों ओर ज्ञानी हैं। १३. त्यागी वन में जाता है। १४. विद्यार्थी विद्यालय जाते हैं। (ग) १५. वह गुरु की सेवा करता है। १६. वह धन पाता है। १७. तू बढ़ता है। १८. तू प्रसन्न होता है। १९. मैं दुःख सहता हूँ। २०. मैं राजा से धन माँगता हूँ।

३. अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
(१) एतत् नगरे पञ्च हस्ती सन्ति।	एतस्मिन् नगरे पञ्च हस्तिनः।	२०
(२) स्वामी धनिनः धनं याचते।	स्वामी धनिनं धनं याचते।	११
(३) अहं नृपात् धनं याचे।	अहं नृपं धनं याचे।	११

४. अभ्यास— (क) २ (ग) को द्विवचन और बहुवचन में बदलो। (ख) इन शब्दों के पूरे रूप लिखो—करिन्, पक्षिन्, दण्डिन्, विद्यार्थिन्, धनिन्। (ग) इनके लट् के पूरे रूप लिखो—सेव्, लभ्, वृध्, मुद्, सह्, याच्।

५. वाक्य बनाओ—विद्यार्थिनः, धनिनाम्, सेवते, सहसे, सकृत्, मुहुः।

६. सन्धि करो—कार्यम् + करोति। पुस्तकम् + पठति। गृहम् + गच्छति। लेखम् + लिखति। त्वम् + पठसि। सत्यम् + वद। पुस्तकम् + आनय।

शब्दकोष ३६०+२०=३८०] **अभ्यास १९** (व्याकरण)

(क) राजन् (राजा), मूर्धन् (सिर), तक्षन् (बढ़ई)। (३)। **(ख)** वृत् (होना), ईक्ष् (देखना), भाष् (कहना), कूर्द् (कूदना), यत् (यत्न करना), रम् (१. लगना, २. रमण करना), वन्द् (वन्दना करना), शिक्ष् (सीखना), कम्प् (काँपना), परा + अय् = पलाय् (भागना), चेष्ट् (चेष्टा करना), आलम्ब् (सहारा लेना), ध्वंस् (नष्ट होना)। (१३)। **(ग)** अन्यथा (नहीं तो), शीघ्रम् (शीघ्र), सहसा (एकदम), किंचित् (कुछ)। (४)।

सूचना—(क) राजन्—तक्षन्, राजन् के तुल्य। (ख) वृत्—ध्वंस्, सेव् के तुल्य।

व्याकरण (राजन्, लोट्, यण्-सन्धि, तृतीया)

१. राजन् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० १३)। मूर्धन् और तक्षन् के रूप राजन् के तुल्य चलाओ।

२. सेव्-लोट् (आत्मनेपद)

				संक्षिप्त रूप		
सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्	प्र० पु०	अताम्	एताम्	अन्ताम्
सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्	म० पु०	अस्व	एथाम्	अध्वम्
सेवै	सेवावहै	सेवामहै	उ० पु०	ऐ	आवहै	आमहै

संक्षिप्त-रूप लगाकर लभ् आदि तथा वृत् आदि के रूप बनाओ।

३. वृत् आदि के लट् में ये रूप होते हैं—वर्तते, ईक्षते, भाषते, कूर्दते, यतते, रमते, वन्दते, शिक्षते, कम्पते, पलायते, चेष्टते, आलम्बते, ध्वंसते। लोट् में सेव् के तुल्य इनके रूप चलाओ।

४. अभ्यास ८, ९ में दिये तृतीया के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

★नियम ५३—(इको यणचि) इ ई को य्, उ ऊ को व्, ऋ को र्, ऌ को ल् हो जाता हो। यदि बाद में कोई स्वर हो तो। (सवर्ण वैसा ही स्वर हो तो नहीं) जैसे—(१) प्रति + एकः = प्रत्येकः। इति + आह = इत्याह। यदि + अपि = यद्यपि। सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः। (२) मधु + अरिः = मध्वरिः। वधू + औ = वध्वौ। गुरु + आज्ञा = गुर्वाज्ञा। (३) पितृ + आ = पित्रा। धातृ + अंशः = धात्रंशः (४) ऌ + आकृतिः = लाकृतिः।

अभ्यास १९

१. उदाहरण-वाक्य— १. राजा राज्यं करोति। २. राजानं पश्य। ३. राज्ञा सह मंत्री वर्तते। ४. राज्ञः आज्ञां पालय, अन्यथा स कोपिष्यति। ५. बालकस्य मूर्ध्नि फलम् अपतत्। ६. तक्षा कार्यं करोति। ७. अत्र रामः वर्तते, स ईक्षते, भाषते, कूर्दते च। ८. सः पुत्रम् ईक्षताम्, वचनं भाषताम्, कूर्दताम्, यतताम्, रमतां च। ९. त्वं गुरुं वन्दस्व, विद्यां शिक्षस्व, ज्ञानं लभस्व च। १०. अहं चेष्टै, वर्धै, मोदै, दुःखं सहै च। ११. दुर्जनः पलायताम्। १२. वन्दे मातरम्।

संस्कृत बनाओ— (क) १. राजा आ रहा है। २. राजा को नमस्कार करो। ३. राजा के साथ सेनापति है। ४. राजा को धन दो। ५. राजा का राज्य बढ़े। ६. बालक का सिर सूँघो। ७. शिष्य के सिर पर फूल गिरा। ८. बढ़ई इधर आ रहा है। ९. विद्या पढ़ो, नहीं तो दुःख होगा। १०. वह स्वभाव से सज्जन है। ११. वह आँख का काणा है। १२. विवाद मत करो। **(ख)** १३. यहाँ सुख हो। १४. वह लता को देखे। १५. वह सत्य बोले। १६. तू वृक्ष से नीचे कूद। १७. तू पढ़ाई में यत्न कर। १८. तू काम में लग। १९. मैं गुरु की वन्दना करूँ। २०. मैं विद्या सीखूँ। २१. दुर्जन सहसा काँपे। २२. चोर शीघ्र भाग जावे। २३. शिष्य चेष्टा करे। २४. बालक पिता का सहारा ले। २५. यह घर नष्ट हो। २६. वह धन पावे और बढ़े।

३. अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
(१) राजाम्, राजेन, राजाय।	राजानम्, राज्ञा, राज्ञे।	शब्दरूप
(२) त्वं पठने यत।	त्वं पठने यतस्व।	धातुरूप
(३) बालकः पितुः आलम्बतु।	बालकः पितरम् आलम्बताम्।	धातुरूप, ११

४. अभ्यास—(क) २ (ख) को बहुवचन में बदलो। **(ख)** राजन् शब्द के पूरे रूप लिखो। **(ग)** इनके लोट् के पूरे रूप लिखो—सेव्, लभ्, वृध्, याच्, मुद्, वृत्, ईक्ष्, कूर्द्, यत्, भाष्।

५. वाक्य बनाओ—अन्यथा, प्रकृत्या, भाषताम्, कूर्दस्व, यतस्व, शिक्षै।

६. सन्धि करो— यदि + अपि। इति + अत्र। पठति + अत्र। लिखतु + अत्र।

शब्दकोष ३८०+२०=४००] **अभ्यास २०** (व्याकरण)

(क) सिंहः (शेर), व्याघ्रः (बाघ), ऋक्षः (रीछ), शूकरः (सूअर), वृकः (भेड़िया), शृगालः (गीदड़), शशकः (खरगोश), वानरः (बन्दर), वृषभः (बैल), उष्ट्रः (ऊँट), गर्दभः (गधा), कुक्कुरः (कुत्ता), मार्जारः (बिल्ली), अजः (बकरा), मूषकः (चूहा)। (१५) (ख) गच्छत् (जाता हुआ), पठत् (पढ़ता हुआ), लिखत् (लिखता हुआ), कुर्वत् (करता हुआ), (४)। (ग) यत् (कि)। (१)।

सूचना—(क) सिंह—मूषक, रामवत्। (ख) गच्छत्—कुर्वत्, गच्छत् के तुल्य।

व्याकरण (गच्छत्, लङ्, अयादि सन्धि, चतुर्थी)

१. गच्छत् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ९)। पठत् आदि के रूप गच्छत् के तुल्य चलाओ। इस प्रकार के बने हुए अन्य शब्दों के लिए देखो अभ्यास २६ का व्याकरण।

२. सेव्-लङ् (आत्मनेपद) **संक्षिप्त रूप**

असेवत	असेवेताम्	असेवन्त	प्र० पु०	अत	एताम्	अन्त
असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्	म० पु०	अथाः	एथाम्	अध्वम्
असेवे	असेवावहि	असेवामहि	उ० पु०	ए	आवहि	आमहि

सूचना— लङ् लकार में धातु से पहले अ लगता है। यदि धातु का पहला अक्षर कोई स्वर हो तो आ लगेगा। संक्षिप्त रूप लगाकर अभ्यास १८ और १९ में दी गयी लभ् आदि धातुओं के रूप चलाओ।

३. अभ्यास १०, ११ में दिये चतुर्थी के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

४. 'यत्' अव्यय 'कि' अर्थ में आता है। जैसे, उसने कहा कि मैं नहीं जाऊँगा—सः अभाषत यत् अहं न गमिष्यामि।

नियम ५४— (एचोऽयवायावः) ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय् और औ को आव् हो जाता है, बाद में कोई स्वर हो तो। (शब्द के अन्तिम ए या ओ के बाद अ होगा तो नहीं)। जैसे—(१) हरे + ए = हरये। जे + अः = जयः। कवे + ए = कवये। (२) भो + अति = भवति। पो + अनः = पवनः। (३) नै + अकः = नायकः। गै + अकः गायकः। (४) पौ + अकः पावकः। द्वौ + एतौ = द्वावेतौ।

अभ्यास २०

१. उदाहरण-वाक्य—१. बालकः पठन्, लिखन्, कार्यं च कुर्वन् अस्ति। २. गच्छन्तं सिंहं पश्य। ३. पठता बालकेन सह रामः तिष्ठति। ४. गच्छते शिष्याय पुस्तकं यच्छ। ५. गच्छतः अश्वात् बालकः अपतत्। ६. लिखतः शिष्यस्य लेखं पश्य। ७. वृकः गच्छन् आसीत्। ८. रामः अभाषत यत् स सदा सत्यं वदिष्यति। ९. रामः गुरुम् असेवत, धनम् अलभत, अवर्धत, अमोदत च। १०. त्वं दुःखम् असहथाः, कन्याम् ऐक्षथाः च।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. शिष्य जा रहा है। २. राम काम कर रहा है। ३. कृष्ण लिख रहा है। ४. एक शेर जा रहा था। ५. जाते हुए बाघ को देखो। ६. जाते हुए कुत्ते के साथ बकरा और बिल्ली भी हैं। ७. पढ़ते हुए बालक को लड्डू दो। ८. काम करते हुए शिष्य का काम देखो। ९. राम ने कहा कि वह घर जा रहा है। १०. वन में शेर, बाघ, रीछ, सूअर, भेड़िया, गीदड़, खरगाश और बन्दर रहते हैं। ११. नगर में घोड़े, बैल, ऊँट, गधे, कुत्ते, बिल्ली, बकरे और चूहे भी रहते हैं। (ख) १२. कुत्ते को भोजन दो। १३. मुझे लड्डू अच्छा लगता है। १४. गुरु को नमस्कार। १५. धन के लिए पढ़ो। (ग) १६. उसने धन पाया। १७. उसने गुरु की सेवा की। १८. तूने वृक्ष देखा। १९. तूने कहा। २०. मैंने यत्न किया। २१. मैंने विद्या सीखी।

३. अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
(१) गच्छन् व्याघ्रं पश्य।	गच्छन्तं व्याघ्रं पश्य।	२०
(२) पठन् बालकं मोदकं यच्छ।	पठते बालकाय मोदकं यच्छ।	२०, २३
(३) कार्यं कुर्वन् शिष्यस्य०।	कार्यं कुर्वतः शिष्यस्य०।	२०

४. अभ्यास—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) गच्छत्, पठत्, कुर्वत् के पूरे रूप लिखो। (ग) इनके लङ् के रूप लिखो—सेव्, लभ्, वृध्, सह्, याच्, वृत्, भाष्, कूर्द्, यत्, वन्द्।

५. वाक्य बनाओ—गच्छन्तम्, कुर्वतः, अलभत, ऐक्षत, असहत।

६. सन्धि करो—मुने + ए। कवे + ए। जे + अति। भो + अति। पो + अन। गुरो + ए। गो + अकः। नौ + अति। गौ + अकः। द्वौ + इमौ।

शब्दकोष ४००+२०=४२०] **अभ्यास २१** (व्याकरण)

(क) मतिः (बुद्धि), बुद्धिः (बुद्धि), गतिः (चाल), धृतिः (धैर्य), कृतिः (कार्य), भूतिः (ऐश्वर्य), उक्तिः (कथन), मुक्तिः (मोक्ष), युक्तिः ([illegible]). भक्तिः (भक्ति), श्रुतिः (वेद), स्मृतिः (स्मृति), शक्तिः (बल), शान्तिः (शान्ति), प्रवृत्तिः (प्रवृत्ति), प्रणतिः (प्रणाम), भूमिः (पृथ्वी), समृद्धिः (ऐश्वर्य), रात्रिः (रात), अंगुलिः (उँगली)। (२०) सूचना— मति—अंगुलि, मतिवत्।

व्याकरण (मति, विधिलिङ्, गुण-सन्धि, पञ्चमी)

१. मति शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० १६)। बुद्धि आदि के रूप मति के तुल्य चलाओ।

२. सेव्—विधिलिङ् (आत्मनेपद) **संक्षिप्त रूप**

सेवत	सेवेयाताम्	सेवेरन्	प्र० पु०	एत	एयाताम्	एरन्
सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्	म० पु०	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि	उ० पु०	एय	एवहि	एमहि

अभ्यास १८, १९ में दी गयी लभ् आदि धातुओं के रूप इसी प्रकार बनाओ।

३. अभ्यास १२, १३ में दिये पंचमी के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

★नियम ५५— दीर्घ, गुण, वृद्धि, संप्रसारण के लिए यह विवरण स्मरण कर लें। ऊपर स्वर दिये हैं। गुण, वृद्धि आदि कहने पर ऊपर के स्वर के नीचे गुण आदि के सामने जो स्वर दिये हैं, वे होंगे—

स्वर	अ आ,	इ, ई	उ, ऊ	ऋ, ॠ	ऌ	ए	ऐ	ओ	औ
१. दीर्घ	- आ	ई	ऊ	ॠ	-	-	-	-	-
२. गुण	- अ	ए	ओ	अर्	अल्	ए	-	ओ	-
३. वृद्धि	- आ	ऐ	औ	आर्	आल्	ऐ	ऐ	औ	औ

४. संप्रसारण— य् को इ, व् को उ, र् को ऋ।

★नियम ५६—(आद्गुणः) अ या आ के बाद (१) इ या ई हो तो दोनों को 'ए', (२) उ या ऊ हो तो दोनों को 'ओ', (३) ऋ या ॠ हो तो दोनों को अर्, (४) ऌ हो तो दोनों को 'अल्' होगा। जैसे— रमा + ईशः = रमेशः। पर + उपकारः = परोपकारः। महा + उत्सवः = महोत्सवः। महा + ऋषिः = महर्षिः। तव + ऌकारः = तवल्कारः।

अभ्यास २१

१. उदाहरण-वाक्य—१. मतिम् इच्छ। २. बुद्ध्या कार्यं कुरु। ३. करिणः गतिम् ईक्षस्व। ४. रामे धृतिः भक्तिः शक्तिः भूतिः शान्तिः च सन्ति। ५. मधुराम् उक्तिं भाषेथाः। ६. भूमौ युक्त्या वर्तेथाः। ७. श्रुतिं स्मृतिं च पठ। ८. भक्त्या ईश्वरम् ईक्षेथाः। ९. स गुरुं सेवेत, धनं लभेत, वर्धेत, मोदेत च। १०. त्वं दुःखं सहेथाः, ईश्वरं मतिं याचेथाः, ईश्वरं वन्देथाः, विद्यां च शिक्षेथाः। ११. अहं सत्यं भाषेय, फलम् ईक्षेय, यतेय, कार्ये रमेय, कुशलं वर्तेय च।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. बालक की मति अच्छी है। २. बुद्धि से कार्यों को करो। ३. बालक की चाल देखो। ४. दुःख में धैर्य रखो (धारय)। ५. रघुवंश कालिदास की कृति है। ६. इस नगर में राजा की भूति, समृद्धि और शक्ति को देखो। ७. श्रुति और स्मृति को शान्ति में पढ़ो। ८. यति भक्ति से मोक्ष को पावे। ९. बालक भूमि पर बैठें। १०. मधुर उक्ति ही कहो। (ख) ११. रात्रि में बन्दर वृक्ष से पृथ्वी पर गिरा। १२. मुनि से श्रुति और स्मृति पढ़ो। १३. शिष्य सिंह से डरता है। १४. राम कृष्ण से अधिक चतुर है। (ग) (विधिलिङ्) १५. शिष्य गुरु की सेवा करे, ज्ञान पावे, बढ़े और प्रसन्न हो। १६. तू ईश्वर से बुद्धि माँग, दुःखों को सह और भक्ति से मुक्ति को पा। १७. मैं गुरु की वन्दना करूँ, विद्या सीखूँ, यत्न करूँ, सत्य बोलूँ और धर्म में रमूँ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) बुद्धिना, शान्तिना, भक्तिना।	बुद्ध्या, शान्त्या, भक्त्या।	शब्दरूप
(२) सेवेत्, लभेत्, वर्धेत्।	सेवेत, लभेत, वर्धेत।	धातुरूप
(३) वन्देयम्, शिक्षेयम्, यतेयम्।	वन्देय, शिक्षेय, यतेय।	धातुरूप

४. अभ्यास—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) इनके रूप लिखो—मति, बुद्धि, गति, कृति, युक्ति। (ग) इनके विधिलिङ् के रूप लिखो—सेव्, लभ्, वृध्, मुद्, सह्, याच्, वृत्, ईक्ष्, भाष्। (घ) दीर्घ, गुण, वृद्धि, संप्रसारण से क्या समझते हो, लिखो।

५. सन्धि करो— महा + ईशः। रमा + ईशः। तथा + इति। न + इति। पर + उपकारः। हित + उपदेशः। राज + ऋषिः। सप्त + ऋषिः। ब्रह्म + ऋषिः।

शब्दकोष ४२०+२०=४४०] **अभ्यास २२** (व्याकरण)

(क) नदी (नदी), गौरी (पार्वती), मही (पृथ्वी), रजनी (रात्रि), सखी (सखी), दासी (दासी), पुरी (नगरी), वाणी (वचन), सरस्वती (सरस्वती), बुद्धिमती (बुद्धिमान् स्त्री), ब्राह्मणी (१. ब्राह्मण स्त्री, २. ब्राह्मण की स्त्री), मृगी (हिरनी), सिंही (सिंहनी), सर्पिणी (साँपिन), राज्ञी (रानी), भवती (आप, स्त्रीलिंग), श्रीमती (ऐश्वर्यशाली स्त्री), कौमुदी (चाँदनी), कमलिनी (कमलिनी), इन्द्राणी (इन्द्र की स्त्री)! (२०)।

सूचना—(क) नदी—इन्द्राणी, नदीवत्।

व्याकरण (नदी, लृट्, वृद्धि-सन्धि, षष्ठी)

१. नदी शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० १७)। गौरी आदि नदीवत्।

२. अभ्यास १४, १५ में दिये षष्ठी के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

४. सेव्-लृट् (आत्मनेपद) **संक्षिप्त रूप**

सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते	प्र० पु०	इष्यते	इष्येते	इष्यन्ते
सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे	म० पु०	इष्यसे	इष्येथे	इष्यध्वे
सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे	उ० पु०	इष्ये	इष्यावहे	इष्यामहे

★सूचना— अभ्यास १८, १९ की इन धातुओं में, 'इष्यते' वाला रूप लगेगा-सेविष्यते, वर्धिष्यते, मोदिष्यते, सहिष्यते, याचिष्यते, वर्तिष्यते, ईक्षिष्यते, भाषिष्यते, कूर्दिष्यते, यतिष्यते, वन्दिष्यते, शिक्षिष्यते, कम्पिष्यते, पलायिष्यते, चेष्टिष्यते, आलम्बिष्यते, ध्वंसिष्यते। इन धातुओं में 'स्यते' वाला रूप लगेगा-लभ्-लप्स्यते, रम्-रंस्यते।

★नियम ५७—(**वृद्धिरेचि**) (१) अ या आ के बाद ए या ऐ होगा, तो दोनों को 'ऐ' होगा। (२) अ या आ के बाद ओ या औ होगा तो दोनों को 'औ' होगा। जैसे-अत्र + एकः = अत्रैकः। राज + ऐश्वर्यम् = राजैश्वर्यम्। सा + एषा = सैषा। महा + ओषधिः = महौषधिः। तण्डुल + ओदनम् = तण्डुलौदनम्।

अभ्यास २२

१. उदाहरण-वाक्य—१. रमा गौरीं वन्दिष्यते। २. ब्राह्मणी नद्यां स्नानं करिष्यति। ३. सरस्वती वाणीं भाषिष्यते। ४. राज्ञी सखीभिः सह पुर्यां भ्रमति। ५. बुद्धिमती दासीं पृच्छति। ६. सिंही मृगीम् इच्छति। ७. इन्द्राणी श्रीमतीं भवतीं किं पृच्छति? ८. राज्ञी नृपं सेविष्यते, वन्दिष्यते, भाषिष्यते, ईक्षिष्यते च। ९. श्रीमती धनं लप्स्यते रंस्यते च।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. नदी को देखो। २. नदी में स्नान करो। ३. नदी का जल मीठा है। ४. जल के लिए नदी पर जाओ। ५. रानी पार्वती को प्रणाम करेगी। ६. पृथ्वी पर ब्राह्मणी बैठी है। ७. आप क्या पढ़ती हैं? ८. इन्द्राणी इन्द्र के साथ घूमेगी। ९. रात्रि में रानी दासियों और सखियों के साथ घूमती है। १०. बुद्धिमती वचन कहेगी। ११. ब्राह्मणी सरस्वती की वन्दना करेगी। १२. मृगी सिंहनी से डरती है। १३. चाँदनी में नगर में आदमी घूमते हैं। (ख) १४. पुत्र माता को स्मरण करता है। १५. कमलिनी के फूल को देखो। १६. पुस्तकों में वेद श्रेष्ठ है। १७. धर्मों में वैदिक धर्म श्रेष्ठ है। १८. साँपिन की गति देखो। (ग) १९. कृष्ण गुरु की सेवा करेगा, दुःख सहेगा, सत्य बोलेगा और प्रसन्न रहेगा। २०. तू यत्न करेगा, विद्या सीखेगा, धर्म का सहारा लेगा और बढ़ेगा। २१. मैं सत्य बोलूँगा, धन पाऊँगा, यत्न करूँगा, धर्म में रमूँगा और प्रसन्न रहूँगा।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) मृगी सिंहीं बिभेति।	मृगी सिंह्याः बिभेति।	२९
(२) लभिष्ये, रमिष्ये।	लप्स्ये, रंस्ये।	धातुरूप

४. अभ्यास—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) इनके रूप लिखो—नदी, गौरी, बुद्धिमती, भवती, श्रीमती। (ग) इनके ऌट् के रूप लिखो—लभ्, वृध्, मुद्, सह्, याच्, भाष्, लभ्, रम्।

५. वाक्य बनाओ—सेविष्यते, शिक्षिष्ये, सहिष्ये, लप्स्यते, रंस्ये।

६. सन्धि करो—अत्र + एषः। न + एतत्। पश्य + एतम्। सा + एषा। देव + औदार्यम्। राज + ऐश्वर्यम्। जल + ओघः। गंगा + ओषधिः।

शब्दकोष ४४०+२०=४६०] **अभ्यास २३** (व्याकरण)

(क) धेनुः (गाय), रेणुः (धूल), रज्जुः (रस्सी)। सुलेखः (सुलेख), परिणामः (परिणाम), अङ्कः (अंक), अवकाशः (छुट्टी), कक्षा (श्रेणी), परीक्षा (परीक्षा), संचिका (कापी), लेखनी (कलम), मसी (स्याही)। मसीपात्रम् (दावात), मित्रम् (मित्र), उत्तरम् (उत्तर), क्रीडाक्षेत्रम् (क्रीडाक्षेत्र)। (१६)। **(ख)** उत्तीर्णः (उत्तीर्ण), अनुत्तीर्णः (फेल), उपस्थितः (उपस्थित), अनुपस्थितः (अनुपस्थित)। (४)।

सूचना—(क) धेनु—रज्जु, धेनुवत्।

व्याकरण (धेनु, क्त प्रत्यय, दीर्घ-सन्धि)

१. धेनु शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० १९)। रेणु, रज्जु, धेनुवत्।

२. अभ्यास १६, १७ में दिये सप्तमी के नियमों का पुनः अभ्यास करो।

★नियम ५८—(अकः सवर्णे दीर्घः) अ इ उ ऋ के बाद सवर्ण (समान) अक्षर हो तो दोनों के स्थान पर उसी वर्ण का दीर्घ अक्षर हो जाता है। अर्थात् (१) अ या आ + अ या आ = आ। (२) इ या ई + इ या ई = ई। (३) उ या ऊ + उ या ऊ = ऊ। (४) ऋ + ऋ = ॠ। जैसे—हिम + आलयः = हिमालयः। विद्या + आलयः = विद्यालयः। श्री + ईशः = श्रीशः। गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः। होतृ + ऋकारः = होतॄकारः।

★नियम ५९—भूतकाल अर्थ में धातु से क्त (त) प्रत्यय होता है। क्त का त शेष रहता है। जिन धातुओं के साथ अन्य स्थानों पर बीच में इ लगता है, उनमें 'इत' जुड़ेगा, अन्य धातुओं में केवल 'त' जुड़ेगा। जैसे—पठ्—पठितः (पढ़ा), लिख्—लिखितः (लिखा), कृ—कृतः (किया), गम्—गतः (गया)।

★नियम ६०—'त' प्रत्यय लगाकर अनुवाद बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर लें—(१) जब सकर्मक धातु से 'त' प्रत्यय होगा तो कर्म में प्रथमा, कर्ता में तृतीया, क्रिया का लिंग, वचन और विभक्ति कर्म के अनुसार होगी, कर्ता के अनुसार नहीं। (२) अकर्मक धातु से 'त' प्रत्यय होने पर कर्ता में तृतीया, क्रिया में नपुंसक-लिंग एकवचन। (३) 'त' प्रत्ययान्त शब्द कर्म के अनुसार पुंलिंग होगा तो उसके रूप रामवत्, स्त्रीलिंग होगा तो रमावत्, नपुंसकलिंग होगा तो गृहवत्। जैसे—उसने काम किया—तेन कार्यं कृतम्। तेन पुस्तकं पठितम्। तेन लेखः लिखितः। तेन हसितम्। तेन भोजनं खादितम्। तेन बालकः रक्षितः।

अभ्याय २३

१. उदाहरण-वाक्य—१. धेनुः गच्छति। २. धेनुं पश्य। ३. धेनवे अ... ४. तस्यां कक्षायां दश छात्राः सन्ति। ५. तेषां समीपे पुस्तकानि संचिकाः ... मसीपात्राणि च सन्ति। ६. परीक्षायां षट् छात्राः उत्तीर्णाः, अन्ये च अनुत्तीर्णाः सन्ति। ७. मया भोजनं भक्षितम्। ८. तेन पुस्तकानि पठितानि। ९. मया पत्रं लिखितम्, पत्रे लिखिते, पत्राणि च लिखितानि। १०. त्वया कार्यं कृतम्, कार्याणि च कृतानि।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. गाय आयी। २. गाय को लाओ। ३. गाय का दूध पीओ। ४. गाय को अन्न और जल दो। ५. धूल उठ रही है (उत्तिष्ठति)। ६. धूल पर न बैठो। ७. रस्सी लाओ। (ख) ८. यह विद्यालय है। ९. यहाँ पर छात्र पढ़ते हैं। १०. कक्षा में ९ छात्र उपस्थित हैं और १ अनुपस्थित है। ११. परीक्षा में सात छात्र उत्तीर्ण हैं और अन्य अनुत्तीर्ण। १२. कापी पर कलम से सुलेख लिखो। १३. परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करो। १४. आज विद्यालय में छुट्टी है, अतः क्रीडाक्षेत्र में खेलो। १५. इन छात्रों के पास पुस्तकें, कलम, स्याही और दावात हैं। १६. सत्य के बोलने में तत्पर होओ। १७. धर्मग्रन्थों में वेद श्रेष्ठ हैं। (ग) १८. बालक ने पुस्तक पढ़ी। १९. मैंने पुस्तकें पढ़ीं। २०. तूने काम किया। २१. मैंने लेख लिखा। २२. हमने लेख लिखे। २३. मैंने भोजन खाया। २४. सेनापति ने बालक की रक्षा की। २५. मैं हँसा। २६. तूने फल खाये। २७. मैंने ग्रंथ पढ़े।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अहं पुस्तकानि पठितम्।	मया पुस्तकानि पठितानि।	६०
(२) सेनापतिः बालकस्य रक्षितम्।	सेनापतिना बालकः रक्षितः।	६०
(३) त्वं फलानि खादितम्।	त्वया फलानि खादितानि।	६०

४. अभ्यास—(क) धेनु शब्द के पूरे रूप लिखो। (ख) इन धातुओं के क्त प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—पठ्, लिख्, गम्, कृ, रक्ष्, हस्।

५. वाक्य बनाओ—कृतम्, रक्षितः, पठितानि, लिखितः, धेनोः, मित्रस्य।

६. सन्धि करो—विद्या + आलयः। शिष्ट + आचारः। महा + आत्मा। श्री + ईशः। गिरि + ईशः। पठति + इदम्। गुरु + उपदेशः। भानु + उदयः।

शब्दकोष ४६०+२०=४८०] **अभ्यास २४** (व्याकरण)

(क) वारि (जल)। हस्तः (हाथ), दन्तः (दाँत), ओष्ठः (ओष्ठ), अधरः (नीचे का ओष्ठ), स्कन्धः (कन्धा), कण्ठः (गला), केशः (बाल), नखः (नाखून), पादः (पैर)। नासिका (नाक), ग्रीवा (गर्दन), जिह्वा (जीभ), जंघा (जाँघ)। मुखम् (मुँह), उरःस्थलम् (छाती), हृदयम् (हृदय), उदरम् (पेट), शरीरम् (शरीर)। (१९)। **(घ)** शुचि (स्वच्छ, पवित्र)। (१)।

सूचना—(क) हस्त—पाद, रामवत्। नासिका—जंघा, रमावत्।

(वारि, क्त, दा धातु, पूर्वरूप-सन्धि)

१. वारि शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २७)। शुचि, वारिवत्।

२. दा धातु के लट्, लोट्, लङ् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २४)।

★नियम ६१—(एङः पदान्तादति)—पद (शब्दरूप या धातुरूप) के अन्तिम ए या ओ के बाद अ हो तो वह हट जाता है। (अ हटा है, इस बात को बताने के लिए ऽ अवग्रह-चिह्न लगा दिया जा है)। जैसे—लोके+अस्मिन् = लोकेऽस्मिन्। हरे + अव = हरेऽव। को + अपि = कोऽपि। विष्णो + अव = विष्णोऽव। को + अयम् = कोऽयम्।

★नियम ६२—जाना, चलना अर्थ की धातुओं और अकर्मक धातुओं से 'त' प्रत्यय होने पर कर्ता में प्रथमा और कर्म में द्वितीया होती है। जैसे—सः गृहं गतः। सः विद्यालयं प्राप्तः। सः आगतः। सः सुप्तः। सः मृतः।

सूचना—'त' प्रत्यय से बने कुछ प्रसिद्ध रूप ये हैं—(देखो प्रत्यय-विचार)

अस् (२प.)	भूतः	चुर्	चोरितः	धृ	धृतः	भू	भूतः
आप्	आप्तः	छिद्	छिन्नः	नम्	नतः	लिख्	लिखितः
ईक्ष्	ईक्षितः	जन्	जातः	नश्	नष्टः	वद्	उदितः
कथ्	कथितः	ज्ञा	ज्ञातः	पठ्	पठितः	वस्	उषितः
कृ	कृतः	त्यज्	त्यक्तः	पा (१प.)	पीतः	वह्	ऊढः
क्रीड्	क्रीडितः	दा	दत्तः	प्रच्छ्	पृष्टः	श्रु	श्रुतः
खाद्	खादितः	दृश्	दृष्टः	ब्रू	उक्तः	स्था	स्थितः
गम्	गतः	धा	हितः	भक्ष्	भक्षितः	हृ	हृतः

अभ्यास २४

१. उदाहरण-वाक्य—१. शुचि वारि पिब। २. शुचिना वारिणा स्नानं कुरु। ३. शुचिने वारिणे नदीं गच्छ। ४. रामः गृहं गतः। ५. कृष्णः गृहम् आगतः। ६. स नदीं प्राप्तः। ७. रामेण रावणस्य मूर्धा छिन्नः। ८. रामेण ब्राह्मणाय धनं दत्तम्, जलं पीतम्, भारः नीतः, वचनम् उक्तम्, कार्यं कृतम्, फलं हृतम्, पुस्तकं धृतम्, भोजनं खादितम्, प्रश्नः पृष्टः, गृहं त्यक्तम्, रावण हतः, शत्रुः बद्धः, कार्यम् आरब्धम्, सीता दृष्टा, वने उषितः च। ९. देवः पुत्राय धनं ददाति, ददातु, अददात् वा। १०. त्वं शिष्याय धनं ददासि, देहि, अददाः वा।

संस्कृत बनाओ—(क) १. राम स्वच्छ जल पीता है। २. तू स्वच्छ जल ला। ३. स्वच्छ जल के लिए तू नदी पर जा। ४. तू हाथ, पैर, मुँह, आँख, नाक, कान, बाल और गले को स्वच्छ कर। ५. उस कन्या के दाँत, ओष्ठ, नाखून, गर्दन, जंघा और मुँह सुन्दर हैं। ६. हृदय को सदा पवित्र रखो (स्थापय)। (ख) ७. शिष्य विद्यालय गया। ८. बालक आया। ९. बच्चा सोया। १०. रावण मरा (मृतः)। ११. मैंने धर्म जाना, दान दिया, दूध पिया, वचन कहा, कार्य किया और धर्म धारण किया। १२. तूने स्नान किया, भोजन खाया, प्रश्न पूछा, कार्य आरम्भ किया और शिष्य की रक्षा की। (ग) १३. वह दान देता है। १४. तू धन देता है। १५. मैं बालक को धन देता हूँ। १६. पिता बालक को फूल दे। १७. तू मुझे पुस्तक दे। १८. मैं तुझे धन दूँ। १९. उसने धन दिया। २०. तूने ब्राह्मण को भोजन दिया। २१. मैंने निर्धन को धन दिया।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अहं धर्मं ज्ञातः, दानं दत्तः।	मया धर्मः ज्ञातः, दानं दत्तम्।	६०
(२) त्वं स्नानं कृतः, भोजनं खादितः०।	त्वया स्नानं कृतम्, ०खादितम्।	६०

४. अभ्यास—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) वारि शब्द के पूरे रूप लिखो। (ग) इन धातुओं में क्त प्रत्यय लगाकर रूप बनाओ—कृ, हृ, धृ, मृ, दा, पा, स्था, ब्रू, प्रच्छ्, त्यज्, भिद्, हन्, स्वप्, दृश्, वह्। (घ) दा धातु के लट्, लोट् और लङ् के रूप लिखो।

५. सन्धि करो—हरे + अव। गृहे + अस्मिन्। के + अत्र। धर्मे + अयम्। विष्णो + अव। को + आगम्। को + अत्र। को + अपि। सो + अपि।

शब्दकोष ४८०+२०=५००] **अभ्यास २५** (व्याकरण)

(क) मधु (शहद), दारु (लकड़ी), जानु (घुटना), अम्बु (जल), वस्तु (वस्तु), वसु (धन), अश्रु (आँसू)। (७)। (ख) प्र + आप् (पाना), स्वप् (सोना), ज्ञा (जानना), स्ना (नहाना), ब्रू (बोलना), धृ (धारण करना), मृ (मरना), त्यज् (छोड़ना), भिद् (तोड़ना), छिद् (काटना), हन् (मारना), आरभ् (आरम्भ करना), वह् (१. ढोना, २. बहना)। (१३)।

सूचना—(क) मधु—अश्रु, मधुवत्। (ख) धृ—त्यज्, वह्, भवतिवत्।

व्याकरण (मधु, क्तवतु, दा धातु, श्चुत्व-सन्धि)

१. मधु शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २९)। दारु आदि के रूप मधु के तुल्य चलाओ।

२. दा धातु के विधिलिङ् और लृट् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २४)

★नियम ६३—(स्तोः श्चुना श्चुः) स् या तवर्ग से पहले या बाद में श् या चवर्ग कोई भी हो तो स् को श् और तवर्ग को चवर्ग (त् को च्, द् को ज्, न् को ञ्) हो जाता है। जैसे-रामस् + च = रामश्च। कस् + चित् = कश्चित्। हरिस् + च = हरिश्च। (२) तत् + च = तच्च। सत् + चित् = सच्चित्। उत् + चारणम् = उच्चारणम्। (३) सद् + जनः = सज्जनः। उद् + ज्वलः = उज्ज्वलः। (४) याच् + ना = याच्ञा।

★नियम ६४—भूतकाल अर्थ में धातु से क्तवतु (तवत्) प्रत्यय होता है। क्तवतु का तवत् शेष रहता है। तवत् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि क्त (त) प्रत्यय लगाकर जो रूप बनता है, उसमें बाद में 'वत्' और जोड़ दो। जैसे—कृ-कृतः, तवत् में कृतवत्। पठ्-पठितम्, तवत् में पठितवत्।

★नियम ६५—तवत्-प्रत्ययान्त रूप के साथ अनुवाद के लिए यह नियम स्मरण कर लें—कर्ता के तुल्य ही तवत्-प्रत्ययान्त के लिंग, विभक्ति और वचन होंगे। कर्ता में प्रथमा होगी, कर्म में द्वितीया, क्रिया कर्ता के तुल्य। तवत्-प्रत्ययान्त के रूप पुंलिंग में भगवत् (शब्द० ८) के तुल्य, स्त्रीलिंग में 'ई' लगाकर नदी (शब्द० १७) के तुल्य और नपुंसक लिंग में जगत् (शब्द० ३३) के तुल्य चलेंगे। जैसे—उसने पुस्तक पढ़ी—स पुस्तकं पठितवान्। तौ पुस्तकं पठितवन्तौ। ते पुस्तकानि पठितवन्तः। रमा पुस्तकं पठितवती।

अभ्यास २५

१. उदाहरण-वाक्य—१. स मधु खदितवान्। २. मधु आनय। ३. मधुने वैश्यस्य गृहं गच्छ। ४. मधुनः भक्षणं कुरु। ५. शुचि अम्बु पिब। ६. एतत् वस्तु अत्रानय। ७. सः त्वम् अहं वा गृहं गतवान्। ८. तौ युवाम् आवां वा गृहं गतवन्तौ। ९. ते यूयं वयं वा गृहं गतवन्तः। १०. स भाषणं दत्तवान्। ११. सा वचनम् उक्तवती। १२. ते गृहं त्यक्तवन्तः। १३. स दारु छिन्नवान्। १४. रामः ब्राह्मणाय धनं दद्यात्, त्वं दद्याः, अहं च दद्याम्। १५. स धनं दास्यति, त्वं च दास्यसि।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. शहद लाओ। २. शहद खाओ। ३. शहद के लिए बर्तन लाओ। ४. शहद का सेवन करो। ५. अच्छी लकड़ी लाओ। ६. अपने घुटने को स्वच्छ करो। ७. स्वच्छ जल पीओ। ८. जल के लिए नदी पर जाओ। ९. मेरी वस्तु यहाँ लाओ। १०. इस वस्तु को ले जाओ। ११. बालक के आँसू भूमि पर गिर रहे हैं। (ख) (तवत् प्रत्यय)। १२. उसने पुस्तक पढ़ी। १३. उसने लेख लिखा। १४. तू घर गया। १५. मैं यहाँ आया। १६. उसने धन पाया। १७. वह भूमि पर सोया। १८. उसने धर्म को जाना। १९. मैं नहाया। २०. लड़की वचन बोली। (ग) २१. उन्होंने बालक पकड़ा (धृ)। २२. वे मरे। २३. तुम सबने घर छोड़ा। २४. तुमने घड़ा (घटः) तोड़ा। २५. हमने लकड़ियाँ काटीं। २६. हमने शेर मारा। २७. हमने काम आरम्भ किया। २८. हमने भार ढोया। (घ) २९. वह धन दे। ३०. तू फल दे। ३१. मैं निर्धन को धन दूँ। ३२. वह विद्या देगा। ३३. तू रमा को फूल देगा। ३४. मैं साधु को भोजन दूँगा।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) तेन लेखः लिखितवन्तः।	स लेखं लिखितवान्।	६५
(२) तैः बालकः धृतवान्।	ते बालकं धृतवन्तः।	६५

४. अभ्यास—(क) २ (ख) को बहुवचन में बदलो। (ख) २ (ग) को एकवचन में बदलो। (ग) २ (घ) को बहुवचन में बदलो। (घ) मधु, अम्बु, वस्तु, अश्रु के पूरे रूप लिखो। (ङ) दा धातु के विधिलिङ् और लृट् के रूप लिखो।

५. सन्धि करो—कृष्णः + च। गुरुः + च। कस् + चन। सत् + चरित्रः। सत् + चित्। सद् + जनः। तद् + जलम्। याच् + ना।

शब्दकोष ५००+२०=५२०] **अभ्यास २६** (व्याकरण)

(क) पयस् (१. जल, २. दूध), यशस् (यश), शिरस् (शिर), सरस् (तालाब), मनस् (मन), तमस् (अन्धकार)। कोकिलः (कोयल), मयूरः (मोर), हंसः (हंस), शुकः (तोता), कपोतः (कबूतर), काकः (कौआ), बकः (बगुला), उलूकः (उल्लू)। (१४)। **(ख)** श्रु (सुनना), शक् (सकना), आप् (पाना)। (३)। **(घ)** स्वकीयः (अपना), परकीयः (दूसरे का), त्वदीयः (तेरा), मदीयः (मेरा)। (४)।

सूचना—(क) पयस्—तमस्, पयस् के तुल्य। (ख) श्रु—आप्, श्रु के तुल्य।

व्याकरण (पयस्, शतृ प्रत्यय, श्रु धातु, जशत्व-सन्धि)

१. पयस् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ३०) यशस् आदि के रूप पयस् के तुल्य चलाओ।

२. श्रु धातु के लट्, लोट् और लङ् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २९)। शक् और आप् धातु के रूप श्रु के तुल्य चलाओ।

★नियम ६६—(झलां जश् झशि) वर्ग के १, २, ३, ४ (पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा वर्ण) को ३ (अपने वर्ग का तीसरा अक्षर) हो जाता है, बाद में वर्ग के ३ या ४ (तीसरा या चौथा वर्ण) हों तो। जैसे—बुध् + धिः = बुद्धिः। सिध् + धिः = सिद्धिः। दुग्ध् + धम् = दुग्धम्। लभ् + धः = लब्धः। युध् + धः = युद्धः।

★नियम ६७—'रहा है', 'रहा था' आदि 'रहा' वाले प्रयोगों का अनुवाद संस्कृत में शतृ (अत्) प्रत्यय लगाकर होता है। परस्मैपदी धातु में लट् के स्थान पर शतृ होता है। शतृ का अत् शेष बचता है। शतृ प्रत्यय लगाकर रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि धातु के लट् के प्रथम पुरुष बहुवचन के रूप में से अन्तिम इ और बीच के न् को हटा दें। इस प्रकार शतृ वाला रूप बचता है। शतृ प्रत्ययान्त के रूप पुंलिंग में गच्छत् (शब्द० ९) के तुल्य चलेंगे स्त्रीलिंग में ई लगाकर नदीवत्, नपुंसक० में जगत् (शब्द० ३३) के तुल्य। शतृ के रूप—पठ्—पठन्ति—पठत्। लिख्—लिखन्ति—लिखत्। इसी प्रकार कृ—कुर्वत्। गम्—गच्छत्। हस्—हसत्। पच्—पचत्। दृश्—पश्यत्। स्था—तिष्ठत्। पा—पिबत्। घ्रा—जिघ्रत् आदि। शतृ-प्रत्ययान्त के बाद में अर्थ के अनुसार अस् धातु के लट् या लङ् का प्रयोग करो। जैसे—वह पढ़ रहा है—स पठन् अस्ति।

अभ्यास २६

१. उदाहरण-वाक्य—१. वह पढ़ रहा है—सः पठन् अस्ति। २. वे दो पढ़ रहे हैं—तौ पठन्तौ स्तः। ३. ते पठन्तः सन्ति। ४. त्वम् पठन् असि। ५. यूयं पठन्तः स्थ। ६. अहं पठन् अस्मि। ७. वयं पठन्तः स्मः। ८. सा पठन्ती अस्ति। ९. स पठन् आसीत्। १०. स पठन् भविष्यति। ११. पठन्तं शिष्यं पश्य। १२. पठते शिष्याय दुग्धं देहि। १३. स हसन्, भोजनं पचन्, बालिकां पश्यन्, पुष्पं जिघ्रन्, जलं च पिबन् अस्ति। १४. पयः पिब। १५. यशांसि इच्छ। १६. स वचनं शृणोति, शृणोतु, अशृणोत् वा। १७. स धनम् आप्नोति, आप्नोतु, आप्नोत् वा।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. वह लिख रहा है। २. वे दो लिख रहे हैं। ३. वे सब लिख रहे हैं। ४. तू काम कर रहा है। ५. तुम दोनों जा रहे हो। ६. तुम सब हँस रहे हो। ७. मैं फलों को देख रहा हूँ। ८. हम दोनों जल पी रहे हैं। ९. हम सब फूल सूँघ रहे हैं। १०. वह पढ़ रहा था। ११. तू भोजन कर रहा था। १२. मैं काम कर रहा था। १३. रमा पढ़ रही थी। १४. बालक लिख रहा होगा। १५. इधर आते हुए कोयल, हंस, मोर और तोते को देखो। १६. वहाँ बैठे हुए कबूतरों, कौओं, बगुलों और उल्लुओं को देखो। १७. काम करते हुए बालक को लड्डू दो। १८. काम करते हुए मनुष्य का यश होता है। (ख) १९. जल पीओ। २०. यश के लिए यत्न करो। २१. अपना शिर छुओ। २२. तालाब में बगुले हैं। २३. अपना मन पवित्र करो। २४. अन्धकार में मत बैठो। (ग) २५. वह मेरा भाषण सुनता है। २६. तू दूसरे का वचन सुनता है। २७. मैं तेरा वचन सुनता हूँ। २८. वह सुने। २९. तू सुन। ३०. मैं सुनूँ। ३१. उसने सुना। ३२. तूने सुना। ३३. मैंने सुना।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) वयं पुष्पं जिघ्रन् सन्ति।	वयं पुष्पाणि जिघ्रन्तः स्मः।	६७
(२) कार्यं कुर्वन् नरं यशं भवति।	कार्यं कुर्वतः नरस्य यशः भवति।	६७, २०

४. अभ्यास—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) इनके रूप लिखो—पयस्, यशस्, मनस्। (ग) श्रु धातु के लट् लोट् और लङ् के पूरे रूप लिखो।

५. सन्धि करो—क्रुध् + धिः। शुध् + धिः। बुध् + धिः। वृध् + धिः।

शब्दकोष ५२०+२०=५४०] **अभ्यास २७** (व्याकरण)

(क) नामन् (नाम), प्रेमन् (प्रेम), व्योमन् (आकाश)। स्वर्णकारः (सुनार), लौहकारः (लोहार), चर्मकारः (चमार), कुम्भकारः (कुम्हार), रजकः (धोबी), नापितः (नाई), व्याधः (बहेलिया), क्षुरः (उस्तरा)। ऋतुः (ऋतु)। (१२)। **(ख)** प्र + क्षल्, प्रक्षालि (धोना), प्रेर्, प्रेरि (प्रेरणा देना), तड्, ताडि (पीटना), धारि (१. रखना २. पहनना), स्थापि (रखना), कृत् (काटना)। (६)। **(ग)** ह्यः (बीता हुआ कल), श्वः (आगामी कल)। (२)।

सूचना—(क) नामन्—व्योमन्, नामन् के तुल्य। (ख) प्रक्षल्—स्थापि, चुर् के तुल्य।

व्याकरण (नामन्, शानच् प्रत्यय, श्रु धातु, चर्त्व-सन्धि)

१. नामन् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ३१)। प्रेमन् और व्योमन् के रूप नामन् के तुल्य चलाओ।

२. प्रक्षल् आदि के ये रूप बनाकर भवति के तुल्य रूप चलाओ-प्रक्षालयति, प्रेरयति, ताडयति, धारयति, स्थापयति, कृन्तति।

३. ह्यः और श्वः के अन्तर के लिए यह स्मरण कर लो—'ह्यो गतेऽनागतेऽह्नि श्वः'। बीते हुए दिन के लिए ह्यः, आगामी के लिए श्वः।

४. श्रु धातु के विधिलिङ् और लृट् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २९)। शक् और आप् के रूप श्रु के तुल्य चलाओ।

५. ६ ऋतुएँ और १२ मास ये हैं—वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरद्, हेमन्तः, शिशिरः। चैत्रः, वैशाखः, ज्येष्ठः, आषाढः, श्रावणः, भाद्रपदः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गशीर्षः, पौषः, माघः, फाल्गुनः।

★नियम ६८—**(खरि च)** वर्ग के १, २, ३, ४ को १ (उसी वर्ग का पहला अक्षर) हो जाता है, बाद में वर्ग के १, २, श ष स कोई हो तो। जैसे—सद् + कारः = सत्कारः। तद् + परः = तत्परः। उद् + साहः = उत्साहः। सद् + पुत्रः = सत्पुत्रः।

★नियम ६९—आत्मनेपदी धातुओं के लट् के स्थान पर शानच् (आन) हो जाता है, 'रहा' अर्थवाले प्रयोगों में। शानच् का आन शेष रहता है। कहीं पर 'मान' रहता है। शानच्-प्रत्ययान्त के रूप पुंलिंग में रामवत्, स्त्रीलिंग में रमावत्, नपुंसक० में गृहवत्। शतृ के तुल्य शानच् में भी अर्थ के अनुसार अस् धातु का प्रयोग करो। शानच् के बने रूप—वर्तते—वर्तमानः। यजते—यजमानः। वर्धते—वर्धमानः। मोदते—मोदमानः। सहते—सहमानः। याचते—याचमानः।

अभ्यास २७

१. उदाहरण-वाक्य—१. वह माँग रहा है—स याचमानः अस्ति। २. स मोदमानः आसीत्। ३. अहं वर्तमानः आसम्। ४. मयि वर्तमाने (मेरे रहते हुए) कः एतत् कर्म कुर्यात्। ५. तव किं नाम अस्ति ? ६. मम नाम देवदत्तः अस्ति। ७. सर्वेषु प्रेम कुरु। ८. व्योम्नि पक्षिणः सन्ति। ९. रजकः वस्त्राणि प्रक्षालयति। १०. नापितः क्षुरेण केशान् कृन्तति। ११. वर्षे षड् ऋतवः, द्वादश मासाः च भवन्ति। १२. स मधुरं वचनं शृणुयात् , त्वं शृणुयाः, अहं च शृणुयाम्। १३. स भाषणं श्रोष्यति।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. वह प्रसन्न हो रहा है। २. वह माँग रहा था। ३. तू विद्यमान था। ४. तू बढ़ रहा है। ५. तेरे रहते हुए कौन दुष्ट यह काम कर सकता है? ६. आपका क्या नाम है? ७. मेरा नाम दयानन्द है। ८. इसका क्या नाम है? ९. शिष्यों से, पुत्रों से और मित्रों से प्रेम करो। १०. सबसे प्रेम करो। ११. आकाश स्वच्छ है। १२. आकाश में हंस हैं। १३. वह कल आया था और आज गया। १४. तुम आज जाओ और कल आना। १५. वर्ष में ६ ऋतुएँ और १२ मास होते हैं। १६. इस नगर में सुनार, लोहार, कुम्हार, धोबी, नाई, चमार और बहेलिये सभी रहते हैं । १७. नाई उस्तरे से बाल बनाता (काटता) है। १८. धोबी वस्त्रों को धोवे। १९. कुम्हार घड़ा बनाता है (रच्)। २०. लोहार लोहे को (लौहम्) पीटता है। २१. कुम्हार घड़े को पृथ्वी पर रखता है (स्थापि)। २२. बालक कपड़ा पहनता है (धारि)। २३. गुरु शिष्य को प्रेरणा देता है। (ख) २४. वह भाषण सुने। २५. तू सुन। २६. मैं सुनूँ। २७. वह सुनेगा। २८. तू सुनेगा। २९. मैं सुनूँगा।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) नामः, प्रेमम्, व्योमे।	नाम, प्रेम, व्योम्नि।	शब्दरूप
(२) कुम्भकारः घटः पृथ्वीं स्थापयति।	कुम्भकारः घटं पृथ्व्यां०।	११, ४६

४. अभ्यास—(क) २ (ख) को बहुवचन में बदलो। (ख) इनके पूरे रूप लिखो—नामन्, प्रेमन्, व्योमन्। (ग) श्रु, आप् और शक् के पाँचों लकारों के रूप लिखो। (घ) इनके शानच् के रूप लिखो—याच्, मुद्, वृत्, वृध्, यज्।

५. सन्धि करो—सद् + कार्यम्। सद् + पात्रम्। उत् + कृष्टः। उत् + साहः।

शब्दकोष ५४०+२०=५६०] **अभ्यास २८** (व्याकरण)

(क) अग्रजः (बड़ा भाई), अनुजः (छोटा भाई), पितृव्यः (चाचा), मातुलः (मामा), पितामहः (दादा), मातामहः (नाना), पौत्रः (पोता), श्वशुरः (श्वशुर)। श्वश्रूः (सास), भगिनी (बहिन)। (१०)। **(ख)** क्री (खरीदना), ग्रह् (ग्रहण करना), ज्ञा (जानना), शुभ् (शोभित होना)। (३)। **(घ)** कति (कितने), श्वेतः (सफेद), हरितः (हरा), रक्तः (लाल), कृष्णः (काला), पीतः (पीला), नीलः (नीला)। (७)।

सूचना—(क) अग्रज—श्वशुर, रामवत्। (ख) क्री—ज्ञा, क्री के तुल्य।

व्याकरण (एक, द्वि, तुमुन्, क्री धातु, विसर्ग-सन्धि)

१. एक और द्वि शब्द के तीनों लिंगों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ४२-४३)।

२. क्री, ग्रह् और ज्ञा धातु के लट्, लोट् और लङ् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३७-३९)। क्री के तुल्य ही ज्ञा और ग्रह् धातु के रूप चलाओ।

३. 'कति' के रूप बहुवचन में ही चलते हैं। प्रथमा आदि के रूप क्रमशः ये हैं—कति, कति, कतिभिः, कतिभ्यः, कतिभ्यः, कतीनाम्, कतिषु।

४. अग्रज आदि के स्त्रीलिंग बोधक शब्द ये हैं—अग्रजा (बड़ी बहन), अनुजा (छोटी बहन), पितृव्या (चाची), मातुलानी (मामी), पितामही (दादी), मातामही (नानी), पौत्री (पोती)।

५. १ से १० तक क्रमवाची संख्या-शब्द ये हैं—प्रथमः (पहला), द्वितीयः (दूसरा), तृतीयः, चतुर्थः, पञ्चमः, षष्ठः, सप्तमः, अष्टमः, नवमः, दशमः।

★नियम ७०—(विसर्जनीयस्य सः) विसर्ग के बाद वर्ग के १, २ या श् ष् स् हों तो विसर्ग को स् हो जाता है। श् या चवर्ग बाद में हो तो स् को श् हो जायेगा। जैसे—रामः + तिष्ठति = रामस्तिष्ठति । कः + चित् + कश्चित् । रामः + च = रामश्च ।

★नियम ७१—को, के लिए, अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है। तुमुन् का तुम् शेष रहता है। यह अव्यय होता है, अतः इसके रूप नहीं चलते हैं। धातु को गुण होता है। जैसे—कृ—कर्तुम् (करने को), पठितुम् (पढ़ने को), लेखितुम् (लिखने को), स्नातुम् (नहाने को)। इन धातुओं के ये रूप होते हैं—हृ—हर्तुम्। धृ—धर्तुम्। रुद्—रोदितुम्। गम्—गन्तुम्। हन्—हन्तुम्। पच्—पक्तुम्। खाद्—खादितुम्। छिद्—छेत्तुम्। दा—दातुम्। पा—पातुम्। नी—नेतुम्। दृश—द्रष्टुम्। वह्—वोढुम्। सह्—सोढुम्। प्रच्छ्—प्रष्टुम्।

अभ्यास २८

१. उदाहरण-वाक्य—१. मैं पढ़ना चाहता हूँ—अहं पठितुम् इच्छामि। २. अहं कार्यं कर्तुं शक्नोमि। ३. सः पुस्तकं पठितुम्, गृहं गन्तुम्, भोजनं खादितुम्, धनं दातुम्, भारं नेतुम्, शिष्यं द्रष्टुम्, प्रश्नं प्रष्टुम्,दुःखं सोढुम्, जलं पातुम्, भारं वोढुं च इच्छति। ४. एकः बालकः, एका बालिका, एकं पुस्तकं चात्र सन्ति। ५. एकस्मै बालकाय, एकस्यै बालिकायै च फलं देहि। ६. एकस्मिन् वने एकः सिंहः वसति स्म। ७. द्वौ छात्रौ, द्वे बालिके, द्वे पुस्तके चात्र सन्ति। ८. स वस्त्रं क्रीणाति, क्रीणातु, अक्रीणात् वा। ९. स धर्मं जानाति, जानातु, अजानात् वा। १०. स धनं गृह्णाति।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. बड़ा भाई घर जाना चाहता है। २. छोटा भाई पुस्तक पढ़ना चाहता है। ३. मेरी बहिन काम करना चाहती है। ४. मैं पढ़ने के लिए विद्यालय जाता हूँ। ५. चाचा, दादा और मामा भोजन खाने को घर जाते हैं। ६. मेरा पौत्र यह काम कर सकता है। ७. राम पाठ पढ़ने को, फल खाने को, प्रश्न पूछने को, लेख लिखने को, जल पीने को, भोजन खाने को और खेल देखने को वहाँ जाता है। ८. वह पुस्तक रखने को (धृ), धन ले जाने को, शत्रु को मारने को, वृक्ष काटने को (छिद्) और नहाने को यहाँ आता है। (ख) ९. यहाँ पर एक बालक, एक कन्या और एक पीला फूल हैं। १०. एक शिष्य और एक बालिका को यह लाल पुस्तक दो। ११. एक वन में एक बाघ रहता था। १२. वहाँ पर दो शिष्य, दो बालिकाएँ और दो नीली पुस्तकें हैं। (ग) १३. वह हरी पुस्तक खरीदता है। १४. तू फल खरीदता है। १५. मैं सफेद वस्त्र खरीदता हूँ। १६. वह अन्न खरीदे। १७. उसने पशु खरीदा। १८. वह धर्म को जानता है। १९. तू सत्य को जान। २०. मैं पुस्तक को ग्रहण करूँ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) लिखितुम्, प्रच्छितुम्, दर्शितुम्।	लेखितुम्, प्रष्टुम्, द्रष्टुम्।	७१
(२) क्रयति, जानति, जान।	क्रीणाति, जानाति, जानीहि।	धातुरूप

४. अभ्यास—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) एक और द्वि शब्द के तीनों लिंगों के पूरे रूप लिखो। (ग) क्री, ज्ञा, ग्रह् के लट् और लङ् के रूप लिखो। (घ) इनके तुमुन् के रूप लिखो—कृ, गम्, पठ्, लिख्, दृश्, नी, दा, पा।

५. सन्धि करो—हरिः + तत्र। कः + तिष्ठति। रामः + च। हरिः + च।

शब्दकोष ५६०+२०=५८०] **अभ्यास २९** (व्याकरण)

(क) पाचकः (रसोइया), सूपः (दाल), शाकः (साग), रोटिका (रोटी), शर्करा (शक्कर), लप्सिका (हलुआ)। भक्तम् (भात), पायसम् (खीर), मिष्टान्नम् (मिठाई), पक्वान्नम् (पकवान), नवनीतम् (मक्खन), घृतम् (घी), लवणम् (नमक), वासरः (दिन)। (१४)। **(घ)** शतम् (सौ), सहस्रम् (हजार), लक्षम् (लाख), कोटिः (करोड़), अधिकम् (अधिक), न्यूनम् (कम)। (६)।

व्याकरण (त्रि, चतुर्, क्त्वा, ल्यप्, उत्व-सन्धि)

१. त्रि और चतुर् शब्द के तीनों लिंगों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ४४-४५)।

२. क्री, ग्रह् और ज्ञा धातु के विधिलिङ् और लृट् के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३७-३९)।

३. २० आदि के लिए संस्कृत शब्द ये हैं—विंशतिः (२०), त्रिंशत् (३०), चत्वारिंशत् (४०), पञ्चाशत् (५०), षष्टिः (६०), सप्ततिः (७०), अशीतिः (८०), नवतिः (९०)।

४. सात दिन ये हैं—रविवारः, सोमवारः, मङ्गलवारः, बुधवारः, बृहस्पतिवारः, शुक्रवारः, शनिवारः।

★नियम ७२—(ससजुषो रुः) शब्द के अन्तिम स् को रु (र्) हो जाता है। सूचना—प्रथमा के एकवचन में इसी र् का विसर्ग दिखाई देता है। सन्धि में यह 'र्' अ आ के अतिरिक्त अन्य स्वरों के बाद रहेगा। जैसे—हरिः + अवदत् = हरिरवदत्। गुरुः + अस्ति = गुरुरस्ति। वधूः + एषा = वधूरेषा। गुरोः + भाषणम् = गुरोर्भाषणम्।

★नियम ७३—(अतो रोरप्लुतादप्लुते) अः को ओ हो जाता है, बाद में अ हो तो। अर्थात् अः + अ = ओऽ। जैसे—कः + अपि = कोऽपि। कः + अस्ति = कोऽस्ति। कः + अयम् = कोऽयम्। सः + अपठत् = सोऽपठत्।

★नियम ७४—'कर' या 'करके' के अर्थ में क्त्वा (त्वा) प्रत्यय होता है। इसका त्वा बचता है। इसके रूप नहीं चलेंगे, अव्यय है। जैसे, पढ़कर-पठित्वा। इसी प्रकार कृ-कृत्वा, ह-हृत्वा, लिख्-लिखित्वा, गम्-गत्वा, हन्-हत्वा, नम्-नत्वा, दा-दत्त्वा, ब्रू-उक्त्वा, स्वप्-सुप्त्वा, ग्रह्-गृहीत्वा, प्रच्छ्-पृष्ट्वा, वस्-उषित्वा, दृश्-दृष्ट्वा, पच्-पक्त्वा, खाद्-खादित्वा, पा-पीत्वा, लभ्-लब्ध्वा।

★नियम ७५—यदि कोई उपसर्ग (प्र, निर्, सम्, वि आदि) धातु से पहले हो तो त्वा के स्थान पर ल्यप् (य) होगा। जैसे—आदाय (लेकर), विक्रीय (बेचकर), आगत्य, आगम्य (आकर), प्रहृत्य (प्रहार करके), विहृत्य (घूमकर), आनीय (लाकर), आहूय (बुलाकर)।

अभ्यास २९

१. उदाहरण-वाक्य—१. वह पढ़कर घर जाता है—स पठित्वा गृहं गच्छति। २. स स्नात्वा, पठित्वा, लिखित्वा, भोजनं खादित्वा, जलं पीत्वा च विद्यालयं गच्छति। ३. स धनम् आदाय, फलानि विक्रीय, शत्रुं प्रहृत्य, गृहम् आगत्य च तिष्ठति। ४. त्रयः छात्राः, तिस्रः बालिकाः, त्रीणि फलानि चात्र सन्ति। ५. चत्वारः शिष्याः, चतस्रः कन्याः, चत्वारि पुस्तकानि च तत्र सन्ति। ६. वस्त्रं क्रीणीयात्, पुस्तकं गृह्णीयात्, धर्मं जानीयात् च। ७. स पुस्तकं क्रेष्यति, वस्त्रं ग्रहीष्यति, धर्मं ज्ञास्यति च।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. छात्र पाठ पढ़कर, लेख लिखकर, भोजन खाकर और जल पीकर विद्यालय जाता है। २. बालक नहाकर, ईश्वर को नमस्कार कर, रोटी, भात, दाल, साग खाकर और पुस्तक लेकर (ग्रह्) पाठशाला गया। ३. रसोइया भात, दाल, रोटी, साग, हलुआ और खीर पकाकर छात्र को देता है। ४. राम मिठाई, पकवान, मक्खन, घी, दूध और चीनी खाकर यहाँ आता है। ५. कृष्ण वाटिका को देखकर, बालक को धन देकर, पुस्तकें पाकर (लभ्), प्रश्न पूछकर और वचन कहकर (ब्रू) यहाँ आया। ६. १०० छात्र, १ हजार पुस्तकें और एक लाख मनुष्य। ७. साग में नमक कुछ कम है। ८. सप्ताह में सात दिन होते हैं—रविवार, सोमवार आदि। (ख) ९. ३ शिष्य, ३ लड़कियाँ और तीन फूल वहाँ है। १०. ४ मनुष्य, ४ बालिकाएँ और ४ पुस्तकें यहाँ हैं। ११. ४ छात्रों और ४ छात्राओं को ४ पुस्तकें दो। (ग) १२. वह फल खरीदे। १३. तू वस्त्र खरीद। १४. मैं पुस्तक खरीदूँ। १५. वह फल खरीदेगा। १६. वह धर्म को जाने।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) पात्वा, नमित्वा, ग्रहित्वा।	पीत्वा, नत्वा, गृहीत्वा।	७४
(२) पश्यत्वा, दात्वा, ब्रूत्वा।	दृष्ट्वा, दत्त्वा, उक्त्वा।	७४

४. अभ्यास—(क) २ (ग) को बहुवचन में बदलो। (ख) त्रि, चतुर् के तीनों लिंगों के पूरे रूप लिखो। (ग) क्री, ग्रह, ज्ञा के विधिलिङ् और लृट् के रूप लिखो। (घ) इनके क्त्वा (त्वा) प्रत्यय बनाकर रूप बनाओ—पठ्, लिख्, गम्, हन्, स्ना, खाद्, पच्, दृश्, लभ्, प्रच्छ्, ब्रू, वस्, ग्रह् , दा, पा।

५. सन्धि करो—(क) कः + अपि। देवः + अधुना। सः + अयम्। रामः + अवदत्। (ख) हरिः + आगच्छत्। शिशुः + आगच्छत्। पितुः + इच्छा।

शब्दकोष ५८०+२०=६००] **अभ्यास ३०** (व्याकरण)

(क) यानम् (सवारी), संस्करणम् (१. पुस्तक आदि का संस्करण, २. सफाई), आम्रम् (आम), दाडिमम् (अनार), द्राक्षाफलम् (अंगूर), बदरीफलम् (बेर), कदलीफलम् (केला), जम्बूफलम् (जामुन), बिल्वफलम् (बेल)। कञ्चुकः (कुर्ता), उत्तरीयः (चादर), कम्बलः (कम्बल), पादयामः (पायजामा), आभूषणम् (गहना), अधोवस्त्रम् (धोती), अङ्गप्रोक्षणम् (अंगोछा), मुखप्रोक्षणम् (रूमाल), शाटिका (साड़ी), शय्या (बिस्तर), उपानह्-त् (जूता)। (२०)।

व्याकरण (पञ्चन् से दशन्; तव्य, अनीय, ल्युट्; उत्व-सन्धि)

१. पञ्चन् से दशन् तक के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द ४६-५१)।

२. आम्र आदि नपुंसकलिंग होंगे तो इनका अर्थ आम आदि फल होगा। पुंलिंग आम्रः, दाडिमः आदि का अर्थ आम आदि का वृक्ष होगा।

★नियम ७६—(हशि च) अः को ओ हो जाता है, बाद में वर्ग के ३, ४, ५, ह, य, व र, ल, कोई हों तो। जैसे—रामः गच्छति—रामो गच्छति। कृष्णः + वदति = कृष्णो वदति। कः + वा = को वा। बालः + लिखति = बालो लिखति।

★नियम ७७—(एतत्तदोः सुलोपः०) एषः और सः के विसर्ग का लोप हो जाता है, बाद में कोई व्यंजन हो तो। जैसे—सः + पठति = स पठति। सः + लिखति—स लिखति। सः + गच्छति = स गच्छति। एषः + गच्छति = एष गच्छति।

★नियम ७८—'चाहिए' अर्थ में धातु के साथ 'तव्य' प्रत्यय लगता है। धातु को गुण होता है। जैसे—कृ + तव्य = कर्तव्यम् (करना चाहिए)। इसी प्रकार हर्तव्यम्, पठितव्यम्, लेखितव्यम्, गन्तव्यम्, हसितव्यम्, वक्तव्यम्।

★नियम ७९—'चाहिए' अर्थ में धातु के साथ 'अनीय' प्रत्यय भी लगता है। धातु को गुण होता है। तव्य और अनीय के साथ कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा होगी। इनके रूप कर्म के अनुसार चलेंगे। जैसे—मया भोजनं कर्तव्यं करणीयं वा। त्वया पुस्तकानि पठितव्यानि, पठनीयानि वा। मया लेखः लेखनीयः।

★नियम ८०—भाववाचक शब्द बनाने के लिए धातु से ल्युट् (अन) प्रत्यय होता है। ल्युट् का 'अन' बचता है। गुण होता है। नपुंसक० में ही रूप चलेगा। जैसे—कृ—करणम् (करना)। इसी प्रकार पठनम्, गमनम्, लेखनम्, भाषणम्, हरणम्, भरणम्, स्थानम् आदि।

अभ्यास ३०

१. उदाहरण-वाक्य—१. मुझे पुस्तक पढ़नी चाहिए—मया पुस्तकं पठितव्यं पठनीयं वा। २. मया भोजनं खादितव्यम्। ३. त्वया ग्रामः गन्तव्यः। ४. त्वया मया अस्माभिः वा कार्यं करणीयं कर्तव्यं वा। ५. त्वया पुस्तकानि पठनीयानि। ६. अस्मिन् वने आम्राः, दाडिमाः बदर्यः, कदल्यः, बिल्वाः च (इनके वृक्ष) सन्ति। ७. अस्मिन् उपवने (बगीचे में) आम्राणि, दाडिमानि, द्राक्षाफलानि, कदलीफलानि (इनके फल) सन्ति। ८. पञ्चभिः, षड्भिः, सप्तभिः, अष्टभिः, नवभिः वा छात्रैः एतत् कार्यं करणीयम्।

२. संस्कृत बनाओ—(क) १. मेरे लिए सवारी लाओ। २. शरीर की सफाई करो। ३. वह प्रतिदिन (प्रतिदिनम्) आम, अनार, अंगूर और केला खाता है। ४. तू जामुन, बेल और बेर खाता है। ५. उस छात्र के पास कुर्ता, धोती, पायजामा, अँगोछा, रूमाल, चादर, कम्बल, बिस्तर और जूते हैं। ६. इस लड़की के पास साड़ी, अँगोछा, रूमाल और बहुत से (बहूनि) आभूषण हैं। (ख) ७. मुझे पुस्तक पढ़नी चाहिए। ८. मुझे खाना खाना चाहिए। ९. उसे गाँव जाना चाहिए। १०. तुझे हँसना चाहिए। ११. मुझे लेख लिखना चाहिए। १२. तुझे ग्रंथ पढ़ना चाहिए। १३. उसे काम करना चाहिए। १४. तुझे सत्य बोलना चाहिए (वक्तव्यम्)। (ग) १५. इस बगीचे में ५ आम, ६ अनार, ७ बेर, ८ केले और ९ बेल के पेड़ हैं। १६. पाँच छात्रों ने यह पुस्तक पढ़ी है। १७. दस छात्रों का आज भाषण होगा। १८. सदा सत्य बोलो, धर्म करो, यत्न करो, सुखी हो और सदा यश पाओ।

३. अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
(१) अहं भोजनं खादितव्यः।	मया भोजनं खादितव्यम्।	७९
(२) स कार्यं कर्तव्यः।	तेन कार्यं कर्तव्यम्।	७९

४. अभ्यास—(क) २ (ख) को बहुवचन में बदलो। (ख) पञ्चन् से दशन् तक के पूरे रूप लिखो। (ग) इन धातुओं के तव्य, अनीय और ल्युट् प्रत्यय लगाकर रूप लिखो— कृ, हृ, धृ, भृ, पठ्, लिख्, गम्, हस्, खाद्।

५. सन्धि करो—शिष्यः + गच्छति। रामः + लिखति। बालकः + वदति। रामः + जयति। देवः + हसति। सः + पठति। सः + लिखति। सः + गच्छति।

व्याकरण

आवश्यक निर्देश

१. जिन शब्दों और धातुओं के तुल्य अन्य शब्दों और धातुओं के रूप चलते हैं, उनके रूपों के सामने उनका संक्षिप्त रूप दिया गया है। संक्षिप्त रूप का भाव यह है कि उस प्रकार के सभी शब्दों या धातुओं के अन्त में वह अंश रहेगा। अतः उस प्रकार से चलनेवाले सभी शब्दों और धातुओं के अन्त में संक्षिप्त रूप लगाकर रूप बनावें। संक्षिप्त रूपों को शुद्ध स्मरण कर लें।

२. शब्दों और धातुओं के रूप के साथ अभ्यासों की संख्याएँ दी हैं। उसका भाव यह है कि उस शब्द या धातु का प्रयोग उस अभ्यास में हुआ है और उस प्रकार से चलने वाले शब्द या धातु भी उसी अभ्यास में दिये हुए हैं।

३. संक्षेप के लिए निम्नलिखित संकेतों का उपयोग किया गया है—

(क) शब्दरूपों में प्रथमा आदि के लिए उनकें प्रथम अक्षर रखे गये हैं। जैसे—प्र०—प्रथमा, द्वि०—द्वितीया, तृ०—तृतीया, च०—चतुर्थी, पं०—पंचमी, ष०—षष्ठी, स०—सप्तमी, सं०—सम्बोधन।

(ख) पुं०—पुंलिंग, स्त्री०—स्त्रीलिंग, नपुं०—नपुंसकलिंग। एक०—एकवचन, द्वि०—द्विवचन, बहु०—बहुवचन। प्रत्येक शब्द और धातु के रूप में ऊपर से नीचे की ओर प्रथम पंक्ति एकवचन की है, दूसरी द्विवचन की और तीसरी बहुवचन की। जो शब्द किसी विशेष वचन में ही चलते हैं, उनमें उसी वचन के रूप हैं। दे०—देखो। अ०—अभ्यास।

(ग) धातुरूपों में प्र० पु० या प्र०—प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष), म० पु० या म०—मध्यम पुरुष, उ० पु० या उ०—उत्तम पुरुष। प०—परस्मैपद, आ०—आत्मनेपद, उ०—उभयपद।

४. सर्वनाम शब्दों का संबोधन नहीं होता, अतः उनके रूप संबोधन में नहीं होते।

५. संक्षिप्त रूपों में न् का ण् होता है, यदि वह र् या ष् के बाद हो तो। यदि र् या ष् के बाद और न् से पहले स्वर, ह य व र, कवर्ग, पवर्ग और न् बीच में हों तो भी न् का ण् हो जायगा। संक्षिप्त रूपों में न् ही रखा गया है, यही सर्वसाधारण है। (देखो अभ्यास ५ में नियम १०।)

(१) (क) शब्दरूप-संग्रह

(१) राम (राम) अकारान्त पुंलिंग — **(१) राम (संक्षिप्तरूप) (देखो अभ्यास ५)**

रामः	रामौ	रामाः	प्र०	अः	औ	आः
रामम्	रामौ	रामान्	द्वि०	अम्	औ	आन्
रामेण	रामाभ्याम्	रामैः	तृ०	एन	आभ्याम्	ऐः
रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः	च०	आय	आभ्याम्	एभ्यः
रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः	पं०	आत्	आभ्याम्	एभ्यः
रामस्य	रामयोः	रामाणाम्	ष०	अस्य	अयोः	आनाम्
रामे	रामयोः	रामेषु	स०	ए	अयोः	एषु
हे राम	हे रामौ	हे रामाः	सं०	अ	औ	आः

(२) हरि (विष्णु) इकारान्त पुं० — **(२) हरि (सं० रूप) (दे० अ० ८)**

हरिः	हरी	हरयः	प्र०	इः	ई	अयः
हरिम्	हरी	हरीन्	द्वि०	इम्	ई	ईन्
हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः	तृ०	इना	इभ्याम्	इभिः
हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः	च०	अये	इभ्याम्	इभ्यः
हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः	पं०	एः	इभ्याम्	इभ्यः
हरेः	हर्योः	हरीणाम्	ष०	एः	योः	ईनाम्
हरौ	हर्योः	हरिषु	स०	औ	योः	इषु
हे हरे	हे हरी	हे हरयः	सं०	ए	ई	अयः

(३) गुरु (गुरु) उकारान्त पुं० — **(३) गुरु (सं० रूप) (दे० अ० ९)**

गुरुः	गुरू	गुरवः	प्र०	उः	ऊ	अवः
गुरुम्	गुरू	गुरून्	द्वि०	उम्	ऊ	ऊन्
गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः	तृ०	उना	उभ्याम्	उभिः
गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः	च०	अवे	उभ्याम्	उभ्यः
गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः	पं०	ओः	उभ्याम्	उभ्यः
गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्	ष०	ओः	वोः	ऊनाम्
गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु	स०	औ	वोः	उषु
हे गुरो	हे गुरू	हे गुरवः	सं०	ओ	ऊ	अवः

(४) कर्तृ (करने वाला) ऋकारान्त पुं०(४) कर्तृ (सं० रूप) (दे० अ० १५)

कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	प्र०	आ	आरौ	आरः
कर्तारम्	कर्तारौ	कर्तॄन्	द्वि०	आरम्	आरौ	ॠन्
कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः	तृ०	रा	ऋभ्याम्	ऋभिः
कर्त्रे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः	च०	रे	ऋभ्याम्	ऋभ्यः
कर्तुः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः	पं०	उः	ऋभ्याम्	ऋभ्यः
कर्तुः	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्	ष०	उः	रोः	ॠणाम्
कर्तरि	कर्त्रोः	कर्तृषु	स०	अरि	रोः	ऋषु
हे कर्तः	हे कर्तारौ	हे कर्तारः	सं०	अः	आरौ	आरः

(२) पितृ (पिता) ऋकारान्त पुं० (५) पितृ (सं० रूप) (दे० अ० १६)

पिता	पितरौ	पितरः	प्र०	आ	अरौ	अरः
पितरम्	पितरौ	पितॄन्	द्वि०	अरम्	अरौ	ॠन्
पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः	तृ०	शेष कर्तृवत् (दे० शब्द ४)		
पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः	च०			
पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः	पं०			
पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्	ष०			
पितरि	पित्रोः	पितृषु	स०			
हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः	सं०			

(६) गो (गाय या बैल) ओकारान्त पुं०, स्त्री०

गौः	गावौ	गावः	प्र०
गाम्	गावौ	गाः	द्वि०
गवा	गोभ्याम्	गोभिः	तृ०
गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः	च०
गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः	पं०
गोः	गवोः	गवाम्	ष०
गवि	गवोः	गोषु	स०
हे गौः	हे गावौ	हे गावः	सं०

सूचना—
साधारणतया (द्यो शब्द को छोड़कर) अन्य कोई शब्द गो शब्द के तुल्य नहीं चलता।

(३९) युष्मद् (तू) (देखो अ० १३) (४०) अस्मद् (मैं) (दे० अ० १४)

त्वम्	युवाम्	यूयम्	प्र०	अहम्	आवाम्	वयम्
त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः	द्वि०	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः	तृ०	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः	च०	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्	पं०	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः	ष०	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
त्वयि	युवयोः	युष्मासु	स०	मयि	आवयोः	अस्मासु

(४१) (क) इदम् (यह) पुं० (४१) (ग) इदम् (यह) स्त्री०

अयम्	इमौ	इमे	प्र०	इयम्	इमे	इमाः
इमम्	इमौ	इमान्	द्वि०	इमाम्	इमे	इमाः
अनेन	आभ्याम्	एभिः	तृ०	अनया	आभ्याम्	आभिः
अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	च०	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः	पं०	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
अस्य	अनयोः	एषाम्	ष०	अस्याः	अनयोः	आसाम्
अस्मिन्	अनयोः	एषु	स०	अस्याम्	अनयोः	आसु

(४१) (ख) इदम् (यह) नपुं० (४२) एक (एक) (दे० अ० २८)

				पुंलिंग	नपुंसक	स्त्रीलिंग
इदम्	इमे	इमानि	प्र०	एकः	एकम्	एका
इदम्	इमे	इमानि	द्वि०	एकम्	एकम्	एकाम्
अनेन	आभ्याम्	एभिः	तृ०	एकेन	एकेन	एकया
अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	च०	एकस्मै	एकस्मै	एकस्यै
अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः	पं०	एकस्मात्	एकस्मात्	एकस्याः
अस्य	अनयोः	एषाम्	ष०	एकस्य	एकस्य	एकस्याः
अस्मिन्	अनयोः	एषु	स०	एकस्मिन्	एकस्मिन्	एकस्याम्

सूचना–एकवचन में ही रूप चलते हैं।

(४३) द्वि (दो) (देखो अ० २८) (४४) त्रि (तीन) (दे० अ० २९)

पुंलिंग	नपुं०, स्त्रीलिंग		पुं०	नपुं०	स्त्री०
द्वौ	द्वे	प्र०	त्रयः	त्रीणि	तिस्रः
द्वौ	द्वे	द्वि०	त्रीन्	त्रीणि	तिस्रः
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	तृ०	त्रिभिः	त्रिभिः	तिसृभिः
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	च०	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	पं०	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
द्वयोः	द्वयोः	ष०	त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्
द्वयोः	द्वयोः	स०	त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु

सूचना- केवल द्विवचन में रूप चलेंगे। सूचना- बहु० में ही रूप चलेंगे।

(४५) चतुर् (चार) (देखो अ० २९) (४६) पञ्चन् (पाँच), (७) षष् (छः)

पुं०	नपुं०	स्त्री०			
चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः	प्र०	पञ्च	षट्
चतुरः	चत्वारि	चतस्रः	द्वि०	पञ्च	षट्
चतुर्भिः	चतुर्भिः	चतसृभिः	तृ०	पञ्चभिः	षड्भिः
चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	च०	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः
चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	पं०	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः
चतुर्णाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	ष०	पञ्चानाम्	षण्णाम्
चतुर्षु	चतुर्षु	चतसृषु	स०	पञ्चसु	षट्सु

(४८) सप्तन् (सात),(४९) अष्टन् (आठ),(५०) नवन् (नौ), (५१) दशन् (दस)

सप्त	अष्ट	अष्टौ	प्र०	नव	दश
सप्त	अष्ट	अष्टौ	द्वि०	नव	दश
सप्तभिः	अष्टभिः	अष्टाभिः	तृ०	नवभिः	दशभिः
सप्तभ्यः	अष्टभ्यः	अष्टाभ्यः	च०	नवभ्यः	दशभ्यः
सप्तभ्यः	अष्टभ्यः	अष्टाभ्यः	पं०	नवभ्यः	दशभ्यः
सप्तानाम्	अष्टानाम्	अष्टानाम्	ष०	नवानाम्	दशानाम्
सप्तसु	अष्टसु	अष्टासु	स०	नवसु	दशसु

सूचना- त्रि से दशन् तक के रूप बहुवचन में ही चलेंगे। (देखो अ० २९-३०)।

(ख) शब्दरूप-संग्रह

(५२) सखि (मित्र) इकारान्त पुं०				(५३) सरित् (नदी) तकारान्त स्त्री०		
सखा	सखायौ	सखायः	प्र०	सरित्	सरितौ	सरितः
सखायम्	सखायौ	सखीन्	द्वि०	सरितम्	सरितौ	सरितः
सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः	तृ०	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः	च०	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः	पं०	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
सख्युः	सख्योः	सखीनाम्	ष०	सरितः	सरितोः	सरिताम्
सख्यौ	सख्योः	सखिषु	स०	सरिति	सरितोः	सरित्सु
हे सखे !	हे सखायौ !	हे सखायः !	सं०	हे सरित्	हे सरितौ	हे सरितः

(५४) शर्मन् (सुख) अन्नन्त नपुं०				(५५) मनस् (मन) असन्त नपुं०		
शर्म	शर्मणी	शर्माणि	प्र०	मनः	मनसी	मनांसि
शर्म	शर्मणी	शर्माणि	द्वि०	मनः	मनसी	मनांसि
शर्मणा	शर्मभ्याम्	शर्मभिः	तृ०	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
शर्मणे	शर्मभ्याम्	शर्मभ्यः	च०	मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
शर्मणः	शर्मभ्याम्	शर्मभ्यः	पं०	मनसः	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
शर्मणः	शर्मणोः	शर्मणाम्	ष०	मनसः	मनसोः	मनसाम्
शर्मणि	शर्मणोः	शर्मसु	स०	मनसि	मनसोः	मनःसु-स्सु
हे शर्म, शर्मन्	हे शर्मणी	हे शर्माणि	सं०	हे मनः	हे मनसी	हे मनांसि

(५६) (क) पूर्व (प्रथम, पूर्व) पुंलिंग				(५६) (ख) पूर्व-स्त्रीलिंग		
पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे	प्र०	पूर्वा	पूर्वे	पूर्वाः
पूर्वम्	पूर्वौ	पूर्वान्	द्वि०	पूर्वाम्	पूर्वे	पूर्वाः
पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वैः	तृ०	पूर्वया	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभिः
पूर्वस्मै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः	च०	पूर्वस्यै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभ्यः
पूर्वस्मात्	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः	पं०	पूर्वस्याः	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभ्यः
पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्	ष०	पूर्वस्याः	पूर्वयोः	पूर्वासाम्
पूर्वस्मिन्	पूर्वयोः	पूर्वेषु	स०	पूर्वस्याम्	पूर्वयोः	पूर्वासु

(५६) (ग) पूर्व-नपुंसकलिंग (५७) कति (कितने), (५८) उभ (दोनों)

					पुं०	स्त्री०, नपुं०
पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि	प्र०	कति	उभौ	उभे
पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि	द्वि०	कति	उभौ	उभे
पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वैः	तृ०	कतिभिः	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
पूर्वस्मै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः	च०	कतिभ्यः	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
पूर्वस्मात्	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः	पं०	कतिभ्यः	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्	ष०	कतीनाम्	उभयोः	उभयोः
पूर्वस्मिन्	पूर्वयोः	पूर्वेषु	स०	कतिषु	उभयोः	उभयोः



(२) संख्याएँ

१. एकः, एकम्, एका
२. द्वौ, द्वे, द्वे
३. त्रयः, त्रीणि, तिस्रः
४. चत्वारः, चत्वारि, चतस्रः
५. पञ्च
६. षट्
७. सप्त
८. अष्ट, अष्टौ
९. नव
१०. दश
११. एकादश
१२. द्वादश
१३. त्रयोदश
१४. चतुर्दश
१५. पञ्चदश
१६. षोडश
१७. सप्तदश
१८. अष्टादश
१९. एकोनविंशतिः
२०. विंशतिः
२१. एकविंशतिः
२२. द्वाविंशतिः
२३. त्रयोविंशतिः
२४. चतुर्विंशतिः
२५. पञ्चविंशतिः
२६. षड्विंशतिः
२७. सप्तविंशतिः
२८. अष्टाविंशतिः
२९. एकोनत्रिंशत्
३०. त्रिंशत्
३१. एकत्रिंशत्
३२. द्वात्रिंशत्
३३. त्रयस्त्रिंशत्
३४. चतुस्त्रिंशत्
३५. पञ्चत्रिंशत्
३६. षट्त्रिंशत्
३७. सप्तत्रिंशत्
३८. अष्टात्रिंशत्
३९. एकोनचत्वारिंशत्
४०. चत्वारिंशत्
४१. एकचत्वारिंशत्
४२. द्विचत्वारिंशत्
४३. त्रिचत्वारिंशत्
४४. चतुश्चत्वारिंशत्
४५. पञ्चचत्वारिंशत्
४६. षट्चत्वारिंशत्
४७. सप्तचत्वारिंशत्
४८. अष्टचत्वारिंशत्
४९. एकोनपञ्चाशत्
५०. पञ्चाशत्
५१. एकपञ्चाशत्
५२. द्विपञ्चाशत्
५३. त्रिपञ्चाशत्
५४. चतुःपञ्चाशत्
५५. पञ्चपञ्चाशत्
५६. षट्पञ्चाशत्
५७. सप्तपञ्चाशत्
५८. अष्टपञ्चाशत्
५९. एकोनषष्टिः
६०. षष्टिः
६१. एकषष्टिः
६२. द्विषष्टिः
६३. त्रिषष्टिः
६४. चतुःषष्टिः
६५. पञ्चषष्टिः
६६. षट्षष्टिः
६७. सप्तषष्टिः
६८. अष्टषष्टिः
६९. एकोनसप्ततिः
७०. सप्ततिः
७१. एकसप्ततिः
७२. द्विसप्ततिः
७३. त्रिसप्ततिः
७४. चतुःसप्ततिः
७५. पञ्चसप्ततिः
७६. षट्सप्ततिः
७७. सप्तसप्ततिः
७८. अष्टसप्ततिः
७९. एकोनाशीतिः
८०. अशीतिः
८१. एकाशीतिः
८२. द्व्यशीतिः
८३. त्र्यशीतिः

८४. चतुरशीतिः
८५. पञ्चाशीतिः
८६. षडशीतिः
८७. सप्ताशीतिः
८८. अष्टाशीतिः
८९. एकोननवतिः
९०. नवतिः
९१. एकनवतिः
९२. द्विनवतिः
९३. त्रिनवतिः
९४. चतुर्नवतिः
९५. पञ्चनवतिः
९६. षण्णवतिः
९७. सप्तनवतिः
९८. अष्टनवतिः
९९. नवनवतिः, एकोनशतम्
१००. शतम्

१. हजार—सहस्रम्। १० हजार—अयुतम्। १ लाख—लक्षम्। १० लाख—नियुतम्, प्रयुतम्। १ करोड़—कोटिः। १० करोड़—दशकोटिः। १ अरब—अर्बुदम्।

सूचना—१. (क) १०१ आदि संख्याओं के लिए अधिक शब्द लगाकर संख्या-शब्द बनावें। जैसे—१०१ एकाधिकं शतम्। १०२ द्व्यधिकं शतम् आदि। (ख) २०० आदि के लिए दो आदि संख्यावाचक शब्द पहले रखकर बाद में 'शती' रखें, या शत पहले रखकर द्वयम्, त्रयम्, चतुष्टयम् आदि रखें। जैसे—२०० द्विशती, शतद्वयम्, ३०० त्रिशती, शतत्रयम्। ४०० चतुःशती, ५०० पञ्चशती, ६०० षट्शती, ७०० सप्तशती (हिन्दी, सतसई) आदि।

२. त्रि (३) से अष्टादशन् (१८) तक सारे शब्दों के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं। दशन् से अष्टादशन् तक के रूप दशन् के तुल्य।

३. एकोनविंशति (१९) से नवविंशति (२९) तक सारे शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिंग हैं। इनके रूप एकवचन में ही चलते हैं। इकारान्त विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति तथा जिनके अन्त में ये हों, उनके रूप 'मति' के तुल्य चलेंगे। तकारान्त त्रिंशत्, चत्वारिंशत् के रूप स्त्रीलिंग एकवचन में चलेंगे।

४. शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम्, प्रयुतम्, आदि शब्द सदा एकवचनान्त नपुंसकलिंग हैं। गृहवत् एक० में रूप चलेंगे। कोटि के मतिवत्।

५. संख्येय (क्रमवाचक विशेषण) बनाने के लिए ये नियम हैं: (१) १ से १० तक के क्रमवाचक प्रथम, द्वितीय आदि अभ्यास २८ में दिये हैं। (२) ११ से १८ तक के संख्येय शब्दों के अन्त में 'अ' लग जाता है। जैसे—एकादशः (११ वाँ)। (३) १९ से आगे संख्येय शब्दों के अन्त में 'तम' लगता है। जैसे—विंशतितमः (२० वाँ), त्रिंशत्तमः (३० वाँ), शततमः (१०० वाँ)।

(३) धातुरूप-संग्रह (क)

भ्वादिगण (परस्मैपदी धातुएँ)

(१) भू (होना) लट् (वर्तमान) — (१) भू (सं० रूप) (दे० अ० ५)

भवति	भवतः	भवन्ति	प्र० पु०	अति	अतः	अन्ति
भवसि	भवथः	भवथ	म० पु०	असि	अथः	अथ
भवमि	भवावः	भवामः	उ० पु०	आमि	आवः	आमः

लोट् (आज्ञा अर्थ) — लोट् (सं० रूप) (दे० अ० ६)

भवतु	भवताम्	भवन्तु	प्र० पु०	अतु	अताम्	अन्तु
भव	भवतम्	भवत	म० पु०	अ	अतम्	अत
भवानि	भवाव	भवाम	उ० पु०	आनि	आव	आम

लङ् (अनद्यतन भूतकाल) — लङ् (सं० रूप) (दे० अ० ७)

अभवत्	अभवताम्	अभवन्	प्र० पु०	अत्	अताम्	अन्
अभवः	अभवतम्	अभवत	म० पु०	अः	अतम्	अत
अभवम्	अभवाव	अभवाम	उ० पु०	अम्	आव	आम

सूचना— धातु के पहले अ लगेगा।

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ) — विधिलिङ् (सं० रूप) (दे० अ० ८)

भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	प्र० पु०	एत्	एताम्	एयुः
भवेः	भवेतम्	भवेत	म० पु०	एः	एतम्	एत
भवेयम्	भवेव	भवेम	उ० पु०	एयम्	एव	एम

लृट् (भविष्यत्) — लृट् (सं० रूप) (दे० अ० ९)

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र० पु०	इष्यति	इष्यतः	इष्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म० पु०	इष्यसि	इष्यथः	इष्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ० पु०	इष्यामि	इष्यावः	इष्यामः

सूचना—(१) कुछ धातुओं में इष्यति वाले रूप लगते हैं और कुछ में स्यति, स्यतः, स्यन्ति आदि बिना इ वाले रूप लगते हैं।

(२) भ्वादिगण (१) की परस्मैपदी सभी धातुओं के रूप पाँचों लकारों में भू धातु के तुल्य चलते हैं। उपर्युक्त संक्षिप्त रूप अन्त में लगेंगे।

(२) हस् (हँसना) (दे० अ० ५-९) (३) पठ् (पढ़ना) (दे० अ० ५-९)

सूचना-भू के तुल्य रूप चलेंगें। सूचना-भू के तुल्य रूप चलेंगें।

लट् — लट्

हसति	हसतः	हसन्ति	प्र०	पठति	पठतः	पठन्ति
हससि	हसथः	हसथ	म०	पठसि	पठथः	पठथ
हसामि	हसावः	हसामः	उ०	पठामि	पठावः	पठामः

लोट् — लोट्

हसतु	हसताम्	हसन्तु	प्र०	पठतु	पठताम्	पठन्तु
हस	हसतम्	हसत	म०	पठ	पठतम्	पठत
हसानि	हसाव	हसाम	उ०	पठानि	पठाव	पठाम

लङ् — लङ्

अहसत्	अहसताम्	अहसन्	प्र०	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
अहसः	अहसतम्	अहसत	म०	अपठः	अपठतम्	अपठत
अहसम्	अहसाव	अहसाम	उ०	अपठम्	अपठाव	अपठाम

विधिलिङ् — विधिलिङ्

हसेत्	हसेताम्	हसेयुः	प्र०	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
हसेः	हसेतम्	हसेत	म०	पठेः	पठेतम्	पठेत
हसेयम्	हसेव	हसेम	उ०	पठेयम्	पठेव	पठेम

लृट् — लृट्

हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति	प्र०	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ	म०	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः	उ०	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

(४) रक्ष् (रक्षा करना) (दे० अ० ५-९) (५) वद् (बोलना) (दे० अ० ५-९)

सूचना-भू के तुल्य रूप चलेंगें। सूचना-भू के तुल्य रूप चलेंगे।

	लट्				लट्	
रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति	प्र०	वदति	वदतः	वदन्ति
रक्षसि	रक्षथः	रक्षथ	म०	वदसि	वदथः	वदथ
रक्षामि	रक्षावः	रक्षामः	उ०	वदामि	वदावः	वदामः
	लोट्				लोट्	
रक्षतु	रक्षताम्	रक्षन्तु	प्र०	वदतु	वदताम्	वदन्तु
रक्ष	रक्षतम्	रक्षत	म०	वद	वदतम्	वदत
रक्षाणि	रक्षाव	रक्षाम	उ०	वदानि	वदाव	वदाम
	लङ्				लङ्	
अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्	प्र०	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
अरक्षः	अरक्षतम्	अरक्षत	म०	अवदः	अवदतम्	अवदत
अरक्षम्	अरक्षाव	अरक्षाम	उ०	अवदम्	अवदाव	अवदाम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
रक्षेत्	रक्षेताम्	रक्षेयुः	प्र०	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
रक्षेः	रक्षेतम्	रक्षेत	म०	वदेः	वदेतम्	वदेत
रक्षेयम्	रक्षेव	रक्षेम	उ०	वदेयम्	वदेव	वदेम
	लृट्				लृट्	
रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति	प्र०	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
रक्षिष्यसि	रक्षिष्यथः	रक्षिष्यथ	म०	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ
रक्षिष्यामि	रक्षिष्यावः	रक्षिष्यामः	उ०	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः

(६) पच् (पकाना) (दे० अ० ५-९) (७) नम् (प्रणाम करना) (दे० अ० ५-९)

सूचना-भू के तुल्य रूप चलेंगें। सूचना-भू के तुल्य रूप चलेंगें।

	लट्				लट्	
पचति	पचतः	पचन्ति	प्र०	नमति	नमतः	नमन्ति
पचसि	पचथः	पचथ	म०	नमसि	नमथः	नमथ
पचामि	पचावः	पचामः	उ०	नमामि	नमावः	नमामः
	लोट्				लोट्	
पचतु	पचताम्	पचन्तु	प्र०	नमतु	नमताम्	नमन्तु
पच	पचतम्	पचत	म०	नम	नमतम्	नमत
पचानि	पचाव	पचाम	उ०	नमानि	नमाव	नमाम
	लङ्				लङ्	
अपचत्	अपचताम्	अपचन्	प्र०	अनमत्	अनमताम्	अनमन्
अपचः	अपचतम्	अपचत	म०	अनमः	अनमतम्	अनमत
अपचम्	अपचाव	अपचाम	उ०	अनमम्	अनमाव	अनमाम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
पचेत्	पचेताम्	पचेयुः	प्र०	नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
पचेः	पचेतम्	पचेत	म०	नमेः	नमेतम्	नमेत
पचेयम्	पचेव	पचेम	उ०	नमेयम्	नमेव	नमेम
	लृट्				लृट्	
पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति	प्र०	नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ	म०	नंस्यसि	नंस्यथः	नंस्यथ
पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः	उ०	नंस्यामि	नंस्यावः	नंस्यामः

(८) गम् (जाना) (दे० अ० ५-९)

सूचना-भू के तुल्य रूप चलेंगें। गम् को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में गच्छ् होता है।

(९) दृश् (देखना) (दे० अ० ५-९)

सूचना-भू के तुल्य रूप चलेंगें। दृश् को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में पश्य् होता है।

	लट्				लट्	
गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति	प्र०	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ	म०	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः	उ०	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः
	लोट्				लोट्	
गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु	प्र०	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
गच्छ	गच्छतम्	गच्छत	म०	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम	उ०	पश्यानि	पश्याव	पश्याम
	लङ्				लङ्	
अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्	प्र०	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत	म०	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम	उ०	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः	प्र०	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत	म०	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम	उ०	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम
	लृट्				लृट्	
गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति	प्र०	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ	म०	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः	उ०	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

(१०) सद् (बैठना) (दे० अ० ५-९)

सूचना-भू के तुल्य रूप चलेंगें। सद् को लट्, लोट्, लङ्, विधि-लिङ् में सीद् होता है।

(११) स्था (देखना) (दे० अ० ५-९)

सूचना-भू के तुल्य रूप चलेंगें। स्था को लट्, लोट्, लङ्, विंधि-लिङ् में तिष्ठ् होता है।

	लट्				लट्	
सीदति	सीदतः	सीदन्ति	प्र०	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
सीदसि	सीदथः	सीदथ	म०	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
सीदामि	सीदावः	सीदामः	उ०	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः
	लोट्				लोट्	
सीदतु	सीदताम्	सीदन्तु	प्र०	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
सीद	सीदतम्	सीदत	म०	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
सीदानि	सीदाव	सीदाम	उ०	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम
	लङ्				लङ्	
असीदत्	असीदताम्	असीदन्	प्र०	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
असीदः	असीदतम्	असीदत	म०	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
असीदम्	असीदाव	असीदाम	उ०	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
सीदेत्	सीदेताम्	सीदेयुः	प्र०	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
सीदेः	सीदेतम्	सीदेत	म०	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
सीदेयम्	सीदेव	सीदेम	उ०	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम
	लृट्				लृट्	
सत्स्यति	सत्स्यतः	सत्स्यन्ति	प्र०	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
सत्स्यसि	सत्स्यथः	सत्स्यथ	म०	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
सत्स्यामि	सत्स्यावः	सत्स्यामः	उ०	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

(१२) पा (पीना) (भू के तुल्य)

सूचना-पा को लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में पिब् होता है।

	लट्		
पिबति	पिबतः	पिबन्ति	प्र०
पिबसि	पिबथः	पिबथ	म०
पिबामि	पिबावः	पिबामः	उ०
	लोट्		
पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु	प्र०
पिब	पिबतम्	पिबत	म०
पिबानि	पिबाव	पिबाम	उ०
	लङ्		
अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्	प्र०
अपिबः	अपिबतम्	अपिबत	म०
अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम	उ०
	विधिलिङ्		
पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः	प्र०
पिबेः	पिबेतम्	पिबेत	म०
पिबेयम्	पिबेव	पिबेम	उ०
	लृट्		
पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति	प्र०
पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ	म०
पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः	उ०

(१३) स्मृ (स्मरण करना) (दे० अ० ५-९)

सूचना-भू के तुल्य रूप चलेंगें।

		लट्	
प्र०	स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति
म०	स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ
उ०	स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः
		लोट्	
प्र०	स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु
म०	स्मर	स्मरतम्	स्मरत
उ०	स्मराणि	स्मराव	स्मराम
		लङ्	
प्र०	अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्
म०	अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत
उ०	अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम
		विधिलिङ्	
प्र०	स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः
म०	स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत
उ०	स्मरेयम्	स्मरेव	स्मरेम
		लृट्	
प्र०	स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति
म०	स्मरिष्यसि	स्मरिष्यथः	स्मरिष्यथ
उ०	स्मरिष्यामि	स्मरिष्यावः	स्मरिष्यामः

(१४) जि (जीतना) (भू के तुल्य) लट्—जयति, जयतः, जयन्ति। जयसि, जयथः, जयथ। जयामि, जयावः, जयामः। लोट्—जयतु, जयताम्, जयन्तु। जय, जयतम्, जयत। जयानि, जयाव, जयाम। लङ्—अजयत्, अजयताम्, अजयन्। अजयः, अजयतम्, अजयत। अजयम्, अजयाव, अजयाम। विधिलिङ्—जयेत्, जयेताम्, जयेयुः। जये., जयेतम्, जयेत। जयेयम्, जयेव, जयेम। लृट्—जेष्यति, जेष्यतः, जेष्यन्ति। जेष्यसि, जेष्यथः, जेष्यथ। जेष्यामि, जेष्यावः, जेष्यामः।

आत्मनेपदी धातुएँ

(१५) सेव् (सेवा करना) लट् (वर्तमान) (१५) लट् (सं० रूप) (दे० अ० १८)

सेवते	सेवेते	सेवन्ते	प्र० पु०	अते	एते	अन्ते
सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे	म० पु०	असे	एथे	अध्वे
सेवे	सेवावहे	सेवामहे	उ० पु०	ए	आवहे	आमहे

लोट् (आज्ञा अर्थ) लोट् (सं० रूप) (दे० अ० १९)

सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्	प्र० पु०	अताम्	एताम्	अन्ताम्
सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्	म० पु०	अस्व	एथाम्	अध्वम्
सेवै	सेवावहै	सेवामहै	उ० पु०	ऐ	आवहै	आमहै

लङ् (अनद्यतन भूतकाल) लङ् (सं० रूप) (दे० अ० २०)

असेवत	असेवेताम्	असेवन्त	प्र० पु०	अत	एताम्	अन्त
असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्	म० पु०	अथाः	एथाम्	अध्वम्
असेवे	असेवावहि	असेवामहि	उ० पु०	ए	आवहि	आमहि

सूचना—धातु के पहले 'अ' लगेगा।

विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ) विधिलिङ् (सं० रूप) (दे० अ० २१)

सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्	प्र० पु०	एत	एयाताम्	एरन्
सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्	म० पु०	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि	उ० पु०	एय	एवहि	एमहि

लृट् (भविष्यत्) लृट् (सं० रूप) (दे० अ० २२)

सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते	प्र० पु०	इष्यते	इष्येते	इष्यन्ते
सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे	म० पु०	इष्यसे	इष्येथे	इष्यध्वे
सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे	उ० पु०	इष्ये	इष्यावहे	इष्यामहे

सूचना—(१) कुछ धातुओं में इष्यते वाले रूप लगते हैं और कुछ में स्यते, स्येते, स्यन्ते आदि बिना इ वाले रूप लगते हैं।

(२) भ्वादिगण (१) की आत्मनेपदी सभी धातुओं के रूप पाँचों लकारों में सेव् धातु के तुल्य चलते हैं। उपर्युक्त संक्षिप्त रूप अन्त में लगेंगे।

(१६) लभ् (पाना) (दे० अ० १८-२२) (१७) वृध् (बढ़ना) (दे० अ० १८-२२)

सूचना-सेव् के तुल्य रूप चलेंगे। सूचना-सेव् के तुल्य रूप चलेंगे।

	लट्				लट्	
लभते	लभेते	लभन्ते	प्र०	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
लभसे	लभेथे	लभध्वे	म०	वर्धसे	वर्धेथे	वर्धध्वे
लभे	लभावहे	लभाभहे	उ०	वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे
	लोट्				लोट्	
लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्	प्र०	वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्
लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्	म०	वर्धस्व	वर्धेथाम्	वर्धध्वम्
लभै	लभावहै	लभामहै	उ०	वर्धै	वर्धावहै	वर्धामहै
	लङ्				लङ्	
अलभत	अलभेताम्	अलभन्त	प्र०	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्	म०	अवर्धथाः	अवर्धेथाम्	अवर्धध्वम्
अलभे	अलभावहि	अलभामहि	उ०	अवर्धे	अव्रर्धावहि	अवर्धामहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्	प्र०	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्	म०	वर्धेथाः	वर्धेयाथाम्	वर्धेध्वम्
लभेय	लभेवहि	लभेमहि	उ०	वर्धेय	वर्धेवहि	वर्धेमहि
	ऌट्				ऌट्	
लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते	प्र०	वर्धिष्यते	वर्धिष्येते	वर्धिष्यन्ते
लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे	म०	वर्धिष्यसे	वर्धिष्येथे	वर्धिष्यध्वे
लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे	उ०	वर्धिष्ये	वर्धिष्यावहे	वर्धिष्यामहे

(१८) मुद् (प्रसन्न होना) (दे० अ० १८-२२) (१९) सह् (सहना) (दे० अ० १८-२२)

सूचना-सेव् के तुल्य रूप चलेंग। सूचना-सेव् के तुल्य रूप चलेंगें।

	लट्				लट्	
मोदते	मोदेते	मोदन्ते	प्र०	सहते	सहेते	सहन्ते
मोदसे	मोदेथे	मोदध्वे	म०	सहसे	सहेथे	सहध्वे
मोदे	मोदावहे	मोदामहे	उ०	सहे	सहावहे	सहामहे
	लोट्				लोट्	
मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्	प्र०	सहताम्	सहेताम्	सहन्ताम्
मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्	म०	सहस्व	सहेथाम्	सहध्वम्
मोदै	मोदावहै	मोदामहै	उ०	सहै	सहावहै	सहामहै
	लङ्				लङ्	
अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त	प्र०	असहत	असहेताम्	असहन्त
अमोदथाः	अमोदेथाम्	अमोदध्वम्	म०	असहथाः	असहेथाम्	असहध्वम्
अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि	उ०	असहे	असहावहि	असहामहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्	प्र०	सहेत	सहेयाताम्	सहेरन्
मोदेथाः	मोदेयाथाम्	मोदेध्वम्	म०	सहेथाः	सहेयाथाम्	सहेध्वम्
मोदेय	मोदेवहि	मोदेमहि	उ०	सहेय	सहेवहि	सहेमहि
	लृट्				लृट्	
मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते	प्र०	सहिष्यते	सहिष्येते	सहिष्यन्ते
मोदिष्यसे	मोदिष्येथे	मोदिष्यध्वे	म०	सहिष्यसे	सहिष्येथे	सहिष्यध्वे
मोदिष्ये	मोदिष्यावहे	मोदिष्यामहे	उ०	सहिष्ये	सहिष्यावहे	सहिष्यामहे

(२०) याच् (माँगना) (सेव् के तुल्य) (२१) नी (ले जाना) उभयपदी धातु

	लट्				लट्	
याचते	याचेते	याचन्ते	प्र०	नयति	नयतः	नयन्ति
याचसे	याचेथे	याचध्वे	म०	नयसि	नयथः	नयथ
याचे	याचावहे	याचामहे	उ०	नयामि	नयावः	नयामः
	लोट्				लोट्	
याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्	प्र०	नयतु	नयताम्	नयन्तु
याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्	म०	नय	नयतम्	नयत
याचै	याचावहै	याचामहै	उ०	नयानि	नयाव	नयाम
	लङ्				लङ्	
अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त	प्र०	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
अयाचथाः	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्	म०	अनयः	अनयतम्	अनयत
अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि	उ०	अनयम्	अनयाव	अनयाम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्	प्र०	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
याचेथाः	याचेयाथाम्	याचेध्वम्	उ०	नयेः	नयेतम्	नयेत
याचेय	याचेवहि	याचेमहि	म०	नयेयम्	नयेव	नयेम
	लृट्				लृट्	
याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते	प्र०	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे	म०	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे	उ०	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

(२१) नी (आत्मनेपद)—लट् नयते, नयेते, नयन्ते। नयसे, नयेथे, नयध्वे। नये, नयावहे, नयामहे। लोट्—नयताम्, नयेताम्, नयन्ताम्। नयस्व, नयेथाम्, नयध्वम्। नयै, नयावहै, नयामहै। लङ् —अनयत, अनयेताम्, अनयन्त। अनयथाः, अनयेथाम्, अनयध्वम्। अनये, अनयावहि, अनयामहि। विधिलिङ् —नयेत, नयेयाताम्, नयेरन् नयेथाः, नयेयाथाम्, नयेध्वम्। नयेय, नयेवहि, नयेमहि। लृट्—नेष्यते, नेष्येते, नेष्यन्ते। नेष्यसे, नेष्येथे, नेष्यध्वे। नेष्ये, नेष्यावहे, नेष्यामहे।

(२२) हृ (ले जाना) उभयपदी धातु (भू और सेव् के तुल्य)

	परस्मैपद— लट्				आत्मनेपद—लट्	
हरति	हरतः	हरन्ति	प्र०	हरते	हरेते	हरन्ते
हरसि	हरथः	हरथ	म०	हरसे	हरेथे	हरध्वे
हरामि	हरावः	हरामः	उ०	हरे	हरावहे	हरामहे
	लोट्				लोट्	
हरतु	हरताम्	हरन्तु	प्र०	हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
हर	हरतम्	हरत	म०	हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्
हराणि	हराव	हराम	उ०	हरै	हरावहै	हरामहै
	लङ्				लङ्	
अहरत्	अहरताम्	अहरन्	प्र०	अहरत	अहरेताम्	अहरन्त
अहरः	अहरतम्	अहरत	म०	अहरथाः	अहरेथाम्	अहरध्वम्
अहरम्	अहराव	अहराम	उ०	अहरे	अहरावहि	अहरामहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
हरेत्	हरेताम्	हरेयुः	प्र०	हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्
हरेः	हरेतम्	हरेत	म०	हरेथाः	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
हरेयम्	हरेव	हरेम	उ०	हरेय	हरेवहि	हरेमहि
	लृट्				लृट्	
हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति	प्र०	हरिष्यते	हरिष्येते	हरिष्यन्ते
हरिष्यसि	हरिष्यथः	हरिष्यथ	म०	हरिष्यते	हरिष्येथे	हरिष्यध्वे
हरिष्यामि	हरिष्यावः	हरिष्यामः	उ०	हरिष्ये	हरिष्यावहे	हरिष्यामहे

(२३) अस् (होना) (दे० अ० १०-११) (२४) दा (देना) (दे० अ० ५-९)

सूचना-अस् को लृट् में भू हो जाता है। (परस्मैपद के रूप ये हैं)

अदादिगण-लट्				जुहोत्यादिगण-लट्		
अस्ति	स्तः	सन्ति	प्र०	ददाति	दत्तः	ददति
असि	स्थः	स्थ	म०	ददासि	दत्थः	दत्थ
अस्मि	स्वः	स्मः	उ०	ददामि	दद्वः	दद्मः
	लोट्				लोट्	
अस्तु	स्ताम्	सन्तु	प्र०	ददातु	दत्ताम्	ददतु
एधि	स्तम्	स्त	म०	देहि	दत्तम्	दत्त
असानि	असाव	असाम	उ०	ददानि	ददाव	ददाम
	लङ्				लङ्	
आसीत्	आस्ताम्	आसन्	प्र०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
आसीः	आस्तम्	आस्त	म०	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
आसम्	आस्व	आस्म	उ०	अददाम्	अदद्व	अदद्म
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
स्यात्	स्याताम्	स्युः	प्र०	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
स्याः	स्यातम्	स्यात	म०	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
स्याम्	स्याव	स्याम	उ०	दद्याम्	दद्याव	दद्याम
	लृट्				लृट्	
भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म०	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ०	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

(२५) दिव् (चमकना आदि) (दे० अ० ८) (२६) नृत् (नाचना) (दे० अ० ८)

सूचना-धातु में य लगाकर भू के तुल्य। सूचना- दिव् के तुल्य रूप चलेंगे।

दिवादिगण-लट्				लट्		
दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति	प्र०	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ	म०	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः	उ०	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः
	लोट्				लोट्	
दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु	प्र०	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत	म०	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम	उ०	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम
	लङ्				लङ्	
अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्	प्र०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत	म०	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम	उ०	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः	प्र०	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत	म०	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम	उ०	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम
	लृट्				लृट्	
देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति	प्र०	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ	म०	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः	उ०	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

(२७) नश् (नष्ट होना) (दे० अ० ८)
सूचना–दिव् के तुल्य रूप चलेंगे।

(२८) भ्रम् (घूमना) (दे० अ० ८)
सूचना–दिव् के तुल्य रूप चलेंगे।

लट्

नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति	प्र०	भ्राम्यति	भ्राम्यतः	भ्राम्यन्ति
नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ	म०	भ्राम्यसि	भ्रांम्यथः	भ्राम्यथ
नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः	म०	भ्राम्यामि	भ्राम्यावः	भ्राम्यामः

लोट्

नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु	प्र०	भ्राम्यतु	भ्राम्यताम्	भ्राम्यन्तु
नश्य	नश्यतम्	नश्यत	म०	भ्राम्य	भ्राम्यतम्	भ्राम्यत
नश्यानि	नश्याव	नश्याम	उ०	भ्राम्याणि	भ्राम्याव	भ्राम्याम

लङ्

अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्	प्र०	अभ्राम्यत्	अभ्राम्यताम्	अभ्राम्यन्
अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत	म०	अभ्राम्यः	अभ्राम्यतम्	अभ्राम्यत
अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम	उ०	अभ्राम्यम्	अभ्राम्याव	अभ्राम्याम

विधिलिङ्

नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः	प्र०	भ्राम्येत्	भ्राम्येताम्	भ्राम्येयुः
नश्येः	नश्येतम्	नश्येत	म०	भ्राम्येः	भ्राम्येतम्	भ्राम्येत
नश्येयम्	नश्येव	नश्येम	उ०	भ्राम्येयम्	भ्राम्येव	भ्राम्येम

लृट्

(क)

नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति	प्र०	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति
नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ	म०	भ्रमिष्यसि	भ्रमिष्यथः	भ्रमिष्यथ
नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः	उ०	भ्रंमिष्यामि	भ्रमिष्यावः	भ्रमिष्यामः

(ख)

नङ्क्ष्यति	नङ्क्ष्यतः	नङ्क्ष्यन्ति	प्र०
नङ्क्ष्यसि	नङ्क्ष्यथः	नङ्क्ष्यथ	म०
नङ्क्ष्यामि	नङ्क्ष्यावः	नङ्क्ष्यामः	उ०

सूचना — भ्रम् के रूप भू धातु के तुल्य भी चलते है। जैसे — भ्रमति, भ्रमतु, अभ्रमत्, भ्रमेत्, भ्रमिष्यति।

(२९) श्रु (सुनना) (दे० अ० २६-२७) (३०) आप् (पाना) (दे० अ० २६-२७)

	भ्वादिगण-लट् (श्रु को शृ)			स्वादिगण-लट्	
शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति	प्र०	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति
शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ	म०	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ
शृणोमि	शृणुवः	शृणुमः	उ०	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः
	लोट् (श्रु को शृ)				लोट्	
शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु	प्र०	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु
शृणु	शृणुतम्	शृणुत	म०	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत
शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम	उ०	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम
	लङ् (श्रु को शृ)				लङ्	
अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्	प्र०	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्
अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत	म०	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत
अशृणवम्	अशृणुव	अशृणुम	उ०	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम
	विधिलिङ् (श्रु को शृ)				विधिलिङ्	
शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः	प्र०	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः
शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात	म०	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात
शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम	उ०	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम
	लृट्				लृट्	
श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति	प्र०	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति
श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ	म०	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ
श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः	उ०	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः

(३१) शक् (सकना)। सूचना—आप् के तुल्य रूप चलेंगें।

लट्—शक्नोति, शक्नुतः, शक्नुवन्ति। शक्नोषि, शक्नुथः, शक्नुथ। शक्नोमि, शक्नुवः, शक्नुमः। लोट् —शक्नोतु, शक्नुताम्, शक्नुवन्तु। शक्नुहि, शक्नुतम्, शक्नुत। शक्नवानि, शक्नवाव, शक्नवाम। लङ्—अशक्नोत्, अशक्नुताम्, अशक्नुवन्। अशक्नोः, अशक्नुतम्, अशक्नुत। अशक्नवम्, अशक्नुव, अशक्नुम। विधिलिङ् —शक्नुयात्, शक्नुयाताम्, शक्नुयुः। शक्नुयाः शक्नुयातम्, शक्नुयात। शक्नुयाम्, शक्नुयाव, शक्नुयाम। लृट् —शक्ष्यति, शक्ष्यतः, शक्ष्यन्ति। शक्ष्यसि, शक्ष्यथः, शक्ष्यथ। शक्ष्यामि, शक्ष्यावः, शक्ष्यामः।

(३२) तुद् (दुःख देना) (दे० अ० ६)

सूचना—तुद् को लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में गुण नहीं होगा। भू के तुल्य रूप चलेंगे।

(३३) इष् (चाहना) (दे० अ० ६)

सूचना—इष् को लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में इच्छ् होता है। भू के तुल्य रूप चलेंगे।

	तुदादिगण-लट्				लट्	
तुदति	तुदतः	तुदन्ति	प्र०	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति
तुदसि	तुदथः	तुदथ	म०	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ
तुदामि	तुदावः	तुदामः	उ०	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः
	लोट्				लोट्	
तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु	प्र०	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु
तुद	तुदतम्	तुदत	म०	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत
तुदानि	तुदाव	तुदाम	उ०	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम
	लङ्				लङ्	
अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्	प्र०	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्
अतुदः	अतुदतम्	अतुदत	म०	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत
अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम	उ०	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः	प्र०	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः
तुदेः	तुदेतम्	तुदेत	म०	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत
तुदेयम्	तुदेव	तुदेम	उ०	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेव
	लृट्				लृट्	
तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति	प्र०	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति
तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ	म०	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ
तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः	उ०	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः

(३४) प्रच्छ् (पूछना) (दे० अ० ६)

सूचना—लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में प्रच्छ् को पृच्छ् हो जाता है। भू या तुद् के तुल्य रूप चलेंगे।

(३५) लिख् (लिखना) (दे० अ० ६)

सूचना—लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में लिख् को गुण नहीं होगा। भू या तुद् के तुल्य रूप चलेंगे।

	लट्				लट्	
पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति	प्र०	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ	म०	लिखसि	लिखथः	लिखथ
पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः	उ०	लिखामि	लिखावः	लिखामः
	लोट्				लोट्	
पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु	प्र०	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत	म०	लिख	लिखतम्	लिखत
पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम	उ०	लिखानि	लिखाव	लिखाम
	लङ्				लङ्	
अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्	प्र०	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत	म०	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम	उ०	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः	प्र०	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत	म०	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत्त
पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम	उ०	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम
	लृट्				लृट्	
प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति	प्र०	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ	म०	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ
प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः	उ०	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः

(३६) कृ (करना)(दे० अ० १२-१३)(३७) क्री (खरीदना) (दे० अ० २८-२९)
(केवल परस्मैपद के रूप यहाँ दिये हैं।) (केवल परस्मैपद के रूप यहाँ दिये हैं।)

	तनादिगण-लट्				क्र्यादिगण-लट्	
करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	प्र०	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
करोषि	कुरुथः	कुरुथ	म०	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
करोमि	कुर्वः	कुर्मः	उ०	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः
	लोट्				लोट्	
करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु	प्र०	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
कुरु	कुरुतम्	कुरुत	म०	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत
करवाणि	करवाव	करवाम	उ०	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम
	लङ्				लङ्	
अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	प्र०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्
अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	म०	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत
अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म	उ०	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः	प्र०	क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात	म०	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम	उ०	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम
	लृट्				लृट्	
करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति	प्र०	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ	म०	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः	उ०	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

(३८) ज्ञा (जानना) (दे० अ० २८-२९) (३९) ग्रह् (लेना) (दे० अ० २८-२९)

सूचना—लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में ज्ञा को 'जा' हो जाता है।
क्री के तुल्य रूप चलेंगे

सूचना—लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में ग्रह् को गृह् हो जाता है।
क्री के तुल्य रूप चलेंगे।

	लट्				लट्	
जानाति	जानीतः	जानन्ति	प्र०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
जानासि	जानीथः	जानीथ	म०	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
जानामि	जानीवः	जानीमः	उ०	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः
	लोट्				लोट्	
जानातु	जानीताम्	जानन्तु	प्र०	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
जानीहि	जानीतम्	जानीत	म०	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
जानानि	जानाव	जानाम	उ०	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम
	लङ्				लङ्	
अजानात्	अजानीताम्	अजानन्	प्र०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
अजानाः	अजानीतम्	अजानीत	म०	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
अजानाम्	अजानीव	अजानीम	उ०	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः	प्र०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः
जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात	म०	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम	उ०	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम
	लृट्				लृट्	
ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति	प्र०	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ	म०	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः	उ०	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः

(४०) चुर् (चुराना) (दे० अ० ७) (४१) चिन्त् (सोचना) (दे० अ० ७)

सूचना—चुर् और चिन्त् के अन्त में अय लगाकर भू के तुल्य रूप चलते हैं। केवल परस्मैद के रूप यहाँ दिये हैं।

	चुरादिगण-लट्				लट्	
चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति	प्र०	चिन्तयति	चिन्तयतः	चिन्तयन्ति
चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ	म०	चिन्तयसि	चिन्तयथः	चिन्तयथ
चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः	उ०	चिन्तयामि	चिन्तयावः	चिन्तयामः
	लोट्				लोट्	
चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु	प्र०	चिन्तयतु	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु
चोरय	चोरयतम्	चोरयत	म०	चिन्तय	चिन्तयतम्	चिन्तयत
चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम	उ०	चिन्तयानि	चिन्तयाव	चिन्तयाम
	लङ्				लङ्	
अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्	प्र०	अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्
अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत	म०	अचिन्तयः	अचिन्तयतम्	अचिन्तयत
अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम	उ०	अचिन्तयम्	अचिन्तयाव	अचिन्तयाम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः	प्र०	चिन्तयेत्	चिन्तयेताम्	चिन्तयेयुः
चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत	म०	चिन्तयेः	चिन्तयेतम्	चिन्तयेत
चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम	उ०	चिन्तयेयम्	चिन्तयेव	चिन्तयेम
	लृट्				लृट्	
चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति		चिन्तयिष्यति	चिन्तयिष्यतः	चिन्तयिष्यन्ति
चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ		चिन्तयिष्यसि	चिन्तयिष्यथः	चिन्तयिष्यथ
चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः		चिन्तयिष्यामि	चिन्तयिष्यावः	चिन्तयिष्यामः

(४२) कथ् (कहना) (दे० अ० ७) **(४३) भक्ष् (खाना) (दे० अ० ७)**

सूचना— कथ् और भक्ष् के अन्त में 'अय' लगाकर भू या चुर् के तुल्य रूप चलते हैं। केवल परस्मैपद के रूप यहाँ दिये हैं।

लट्

कथयति	कथयतः	कथयन्ति	प्र०	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
कथयसि	कथयथः	कथयथ	म०	भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ
कथयामि	कथयावः	कथयामः	उ०	भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः

लोट्

कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु	प्र०	भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
कथय	कथयतम्	कथयत	म०	भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत
कथयानि	कथयाव	कथयाम	उ०	भक्षयाणि	भक्षयाव	भक्षयाम

लङ्

अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्	प्र०	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
अकथयः	अकथयतम्	अकथयत	म०	अभक्षयः	अभक्षयतम्	अभक्षयत
अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम	उ०	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम

विधिलिङ्

कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः	प्र०	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः
कथयेः	कथयेतम्	कथयेत	म०	भक्षयेः	भक्षयेतम्	भक्षयेत
कथयेयम्	कथयेव	कथयेम	उ०	भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम

लृट्

कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति	प्र०	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यन्ति
कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ	म०	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यथ
कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः	उ०	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्यावः	भक्षयिष्यामः

धातुरूप-संग्रह (ख)

भ्वादिगण — (४४) वस् (रहना) (भू के तुल्य)

अदादिगण — (४५) अद् (खाना) परस्मैपद

	लट्				**लट्**	
वसति	वसतः	वसन्ति	प्र०	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
वससि	वसथः	वसथ	म०	अत्सि	अत्थः	अत्थ
वसामि	वसावः	वसामः	उ०	अद्मि	अद्वः	अद्मः
	लोट्				**लोट्**	
वसतु	वसताम्	वसन्तु	प्र०	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु
वस	वसतम्	वसत	म०	अद्धि	अत्तम्	अत्त
वसानि	वसाव	वसाम	उ०	अदानि	अदानि	अदाम
	लङ्				**लङ्**	
अवसत्	अवसताम्	अवसन्	प्र०	आदत्	आत्ताम्	आदन्
अवसः	अवसतम्	अवसत	म०	आदः	आत्तम्	आत्त
अवसम्	अवसाव	अवसाम	उ०	आदम्	आद्व	आद्म
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
वसेत्	वसेताम्	वसेयुः	प्र०	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
वसेः	वसेतम्	वसेत	म०	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
वसेयम्	वसेव	वसेम	उ०	अद्याम्	अद्याव	अद्याम
	लृट्				**लृट्**	
वत्स्यति	वत्स्यतः	वत्स्यन्ति	प्र०	अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति
वत्स्यसि	वत्स्यथः	वत्स्यथ	म०	अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ
वत्स्यामि	वत्स्यावः	वत्स्यामः	उ०	अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः

(४६) ब्रू (कहना)

सूचना— दोनों पदों में लृट् में ब्रू को 'वच्' हो जाता है।

	परस्मैपद			आत्मनेपद		
	लट्			लट्		
ब्रवीति आह	ब्रूतः आहतुः	ब्रुवन्ति आहुः	प्र०	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
ब्रवीषि आत्थ	ब्रूथः आहतुः	ब्रूथ	म०	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः	उ०	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे
	लोट्			लोट्		
ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु	प्र०	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत	म०	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम	उ०	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै
	लङ्			लङ्		
अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्	प्र०	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत	म०	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम	उ०	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि
	विधिलिङ्			विधिलिङ्		
ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः	प्र०	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात	म०	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम	उ०	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि
	लृट् (ब्रू को वच्)			लृट् (ब्रू को वच्)		
वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति	प्र०	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
वक्ष्यसि	वक्ष्यथः	वक्ष्यथ	म०	वक्ष्यसे	वक्ष्येथे	वक्ष्यध्वे
वक्ष्यामि	वक्ष्यावः	वक्ष्यामः	उ०	वक्ष्ये	वक्ष्यावहे	वक्ष्यामहे

(४७) दुह् (दुहना) परस्मैपद

सूचना— धातु उभयपदी है। यहाँ केवल परस्मैपद के रूप दिये गये हैं।

(४८) रुद् (रोना) परस्मैपद

	लट्				लट्	
दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति	प्र०	रोदिति	रुदितः	रुदन्ति
धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध	म०	रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ
दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः	उ०	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः
	लोट्				लोट्	
दोग्धु	दुग्धाम्	दुहन्तु	प्र०	रोदितु	रुदिताम्	रुदन्तु
दुग्धि	दुग्धम्	दुग्ध	म०	रुदिहि	रुदितम्	रुदित
दोहानि	दोहाव	दोहाम	उ०	रोदानि	रोदाव	रोदाम
	लङ्				लङ्	
अधोक्	अदुग्धाम्	अदुहन्	प्र०	अरोदीत्, अरोदत्	अरुदिताम्	अरुदन्
अधोक्	अदुग्धम्	अदुग्ध	म०	अरोदीः, अरोदः	अरुदितम्	अरुदित
अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म	उ०	अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः	प्र०	रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः
दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात	म०	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात
दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम	उ०	रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम
	लृट्				लृट्	
धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति	प्र०	रोदिष्यति	रोदिष्यतः	रोदिष्यन्ति
धोक्ष्यसि	धोक्ष्यथः	धोक्ष्यथ	म०	रोदिष्यसि	रोदिष्यथः	रोदिष्यथ
धोक्ष्यामि	धोक्ष्यावः	धोक्ष्यामः	उ०	रोदिष्यामि	रोदिष्यावः	रोदिष्यामः

(४९) स्वप् (सोना) परस्मैपद | (५०) हन् (मारना) परस्मैपद

	लट्				लट्	
स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति	प्र०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ	म०	हन्सि	हथः	हथ
स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः	उ०	हन्मि	हन्वः	हन्मः
	लोट्				लोट्	
स्वपितु	स्वपिताम्	स्वपन्तु	प्र०	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
स्वपिहि	स्वपितम्	स्वपित	म०	जहि	हतम्	हत
स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम	उ०	हनानि	हनाव	हनाम
	लङ्				लङ्	
अस्वपीत् / अस्वपत्	अस्वपिताम्	अस्वपन्	प्र०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
अस्वपीः / अस्वपः	अस्वपितम्	अस्वपित	म०	अहः	अहतम्	अहत
अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम	उ०	अहनम्	अहन्व	अहन्म
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः	प्र०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात	म०	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम	उ०	हन्याम्	हन्याव	हन्याम
	लृट्				लृट्	
स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः	स्वप्स्यन्ति	प्र०	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
स्वप्स्यसि	स्वप्स्यथः	स्वप्स्यथ	म०	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
स्वप्स्यामि	स्वप्स्यावः	स्वप्स्यामः	उ०	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

(५१) इ (जाना) परस्मैपद				(५२) आस् (बैठना) आत्मनेपद		
	लट्				लट्	
एति	इतः	यन्ति	प्र०	आस्ते	आसाते	आसते
एषि	इथः	इथ	म०	आस्से	आसाथे	आध्वे
एमि	इवः	इमः	उ०	आसे	आस्वहे	आस्महे
	लोट्				लोट्	
एतु	इताम्	यन्तु	प्र०	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्
इहि	इतम्	इत	म०	आस्स्व	आसाथाम्	आध्वम्
अयानि	अयाव	अयाम	उ०	आसै	आसावहै	आसामहै
	लङ्				लङ्	
ऐत्	ऐताम्	आयन्	प्र०	आस्त	आसाताम्	आसत
ऐः	ऐतम्	ऐत	म०	आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्
आयम्	ऐव	ऐम	उ०	आसि	आस्वहि	आस्महि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
इयात्	इयाताम्	इयुः	प्र०	आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्
इयाः	इयातम्	इयात	म०	आसीथाः	आसीयाथाम्	आसीध्वम्
इयाम्	इयाव	इयाम	उ०	आसीय	आसीवहि	आसीमहि
	लृट्				लृट्	
एष्यति	एष्यतः	एष्यन्ति	प्र०	आसिष्यते	आसिष्येते	आसिष्यन्ते
एष्यसि	एष्यथः	एष्यथ	म०	आसिष्यसे	आसिष्येथे	आसिष्यध्वे
एष्यामि	एष्यावः	एष्यामः	उ०	आसिष्ये	आसिष्यावहे	आसिष्यामहे

(५३) शी (सोना) — अदादिगण। आत्मनेपद
(५४) हु (हवन करना) — जुहोत्यादिगण। परस्मैपद

	लट्				लट्	
शेते	शयाते	शेरते	प्र०	जुहोति	जुहुत:	जुह्वति
शेषे	शयाथे	शेध्वे	म०	जुहोषि	जुहुथ:	जुहुथ
शये	शेवहे	शेमहे	उ०	जुहोमि	जुहुव:	जुहुम:
	लोट्				लोट्	
शेताम्	शयाताम्	शेरताम्	प्र०	जुहोतु	जुहुताम्	जुह्वतु
शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्	म०	जुहुधि	जुहुतम्	जुहुत
शयै	शयावहै	शयामहै	उ०	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम
	लङ्				लङ्	
अशेत	अशयाताम्	अशेरत	प्र०	अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवु:
अशेथा:	अशयाथाम्	अशेध्वम्	म०	अजुहो:	अजुहुतम्	अजुहुत
अशयि	अशेवहि	अशेमहि	उ०	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्	प्र०	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयु:
शयीथा:	शयीयाथाम्	शयीध्वम्	म०	जुहुया:	जुहुयातम्	जुहुयात
शयीय	शयीवहि	शयीमहि	उ०	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम
	लृट्				लृट्	
शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते	प्र०	होष्यति	होष्यत:	होष्यन्ति
शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे	म०	होष्यसि	होष्यथ:	होष्यथ
शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे	उ०	होष्यामि	होष्याव:	होष्याम:

(५५) भी (डरना) परस्मैपद

(५६) दा (देना) आत्मनेपद

सूचना— परस्मैपद के रूप, देखो पृष्ठ ९५

	लट्				लट्	
बिभेति	बिभीतः	बिभ्यति	प्र०	दत्ते	ददाते	ददते
बिभेषि	बिभीथः	बिभीथ	म०	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
बिभेमि	बिभीवः	बिभीमः	उ०	ददे	दद्वहे	दद्महे
	लोट्				लोट्	
बिभेतु	बिभीताम्	बिभ्यतु	प्र०	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
बिभीहि	बिभीतम्	बिभीत	म०	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम	उ०	ददै	ददावहै	ददामहै
	लङ्				लङ्	
अबिभेत्	अबिभीताम्	अबिभयुः	प्र०	अदत्त	अददाताम्	अददत
अबिभेः	अबिभीतम्	अबिभीत	म०	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
अबिभयम्	अबिभीव	अबिभीम	उ०	अददि	अदद्वहि	अदद्महि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
बिभीयात्	बिभीयाताम्	बिभीयुः	प्र०	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
बिभीयाः	बिभीयातम्	बिभीयात	म०	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
बिभीयाम्	बिभीयाव	बिभीयाम	उ०	ददीय	ददीवहि	ददीमहि
	लृट्				लृट्	
भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति	प्र०	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
भेष्यसि	भेष्यथः	भेष्यथ	म०	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
भेष्यामि	भेष्यावः	भेष्यामः	उ०	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

(५७) धा (धारण करना)

जुहोत्यादिगण। उभयपदी

	लट्–परस्मैपद			लट्–आत्मनेपद		
दधाति	धत्तः	दधति	प्र०	धत्ते	दधाते	दधते
दधासि	धत्थः	धत्थ	म०	धत्से	दधाथे	दद्ध्वे
दधामि	दध्वः	दध्मः	उ०	दधे	दध्वहे	दध्महे
	लोट्			लोट्		
दधातु	धत्ताम्	दधतु	प्र०	धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्
धेहि	धत्तम्	धत्त	म०	धत्स्व	दधाथाम्	धद्ध्वम्
दधानि	दधाव	दधाम	उ०	दधै	दधावहै	दधामहै
	लङ्			लङ्		
अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः	प्र०	अधत्त	अदधाताम्	अदधत
अदधाः	अधत्तम्	अधत्त	म०	अधत्थाः	अदधाथाम्	अधद्ध्वम्
अदधाम्	अदध्व	अदध्म	उ०	अदधि	अदध्वहि	अदध्महि
	विधिलिङ्			विधिलिङ्		
दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः	प्र०	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
दध्याः	दध्यातम्	दध्यात	म०	दधीथाः	दधीयाथाम्	दधीध्वम्
दध्याम्	दध्याव	दध्याम	उ०	दधीय	दधीवहि	दधीमहि
	लृट्			लृट्		
धास्यति	धास्यतः	धास्यन्ति	प्र०	धास्यते	धास्येते	धास्यन्ते
धास्यसि	धास्यथः	धास्यथ	म०	धास्यसे	धास्येथे	धास्यध्वे
धास्यामि	धास्यावः	धास्यामः	उ०	धास्ये	धास्यावहे	धास्यामहे

(५८) युध् (लड़ना) आत्मनेपद **(५९) जन् (उत्पन्न होना) आत्मनेपद**

सूचना—लट्, लोट्, लङ्, विधि-लिङ् में जन् को जा होता है।

	लट्				लट् (जन् को जा)	
युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते	प्र०	जायते	जायेते	जायन्ते
युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे	म०	जायसे	जायेथे	जायध्वे
युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे	उ०	जाये	जायावहे	जायामहे
	लोट्				लोट् (जन् को जा)	
युध्यताम्	युध्येताम्	युध्यन्ताम्	प्र०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
युध्यस्व	युध्येथाम्	युध्यध्वम्	म०	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै	उ०	जायै	जायावहै	जायामहै
	लङ्				लङ् (जन् को जा)	
अयुध्यत	अयुध्येताम्	अयुध्यन्त	प्र०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
अयुध्यथाः	अयुध्येथाम्	अयुध्यध्वम्	म०	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
अयुध्ये	अयुध्यावहि	अयुध्यामहि	उ०	अजाये	अजायावहि	अजायामहि
	विधिलिङ्				विधिलिङ् (जन् को जा)	
युध्येत	युध्येयाताम्	युध्येरन्	प्र०	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
युध्येथाः	युध्येयाथाम्	युध्येध्वम्	म०	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि	उ०	जायेय	जायेवहि	जायेमहि
	लृट्				लृट्	
योत्स्यते	योत्स्येते	योत्स्यन्ते	प्र०	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
योत्स्यसे	योत्स्येथे	योत्स्यध्वे	म०	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
योत्स्ये	योत्स्यावहे	योत्स्यामहे	उ०	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

(६०) सु (स्नान करना या कराना, रस निकालना)

स्वादिगण। उभयपदी

	लट्-परस्मैपद			लट्-आत्मनेपद		
सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति	प्र०	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ	म०	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
सुनोमि	सुनुवः सुन्वः	सुनुमः सुन्मः	उ०	सुन्वे	सुनुवहे सुन्वहे	सुनुमहे सुन्महे

	लोट्			लोट्		
सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु	प्र०	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
सुनु	सुनुतम्	सुनुत	म०	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम	उ०	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै

	लङ्			लङ्		
असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्	प्र०	असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
असुनोः	असुनुतम्	असुनुत	म०	असुनुथाः	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
असुनवम्	असुनुव	असुनुम	उ०	असुन्वि	असुनुवहि असुन्वहि	असुनुमहि असुन्महि

	विधिलिङ्			विधिलिङ्		
सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः	प्र०	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात	म०	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम	उ०	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

	लृट्			लृट्		
सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति	प्र०	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
सोष्यसि	सोष्यथः	सोष्यथ	म०	सोष्यसे	सोष्येथे	सोष्यध्वे
सोष्यामि	सोष्यावः	सोष्यामः	उ०	सोष्ये	सोष्यावहे	सोष्यामहे

(६१) स्पृश् (छूना) परस्मैपद

(६२) मृ (मरना) आत्मनेपद

सूचना- लृट् में मृ धातु परस्मैपदी होती है।

लट्

स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति	प्र०	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
स्पृशसि	स्पृशथः	स्पृशथ	म०	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
स्पृशामि	स्पृशावः	स्पृशामः	उ०	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे

लोट्

स्पृशतु	स्पृशताम्	स्पृशन्तु	प्र०	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
स्पृश	स्पृशतम्	स्पृशत	म०	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम	उ०	म्रिये	म्रियावहै	म्रियामहै

लङ्

अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्	प्र०	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
अस्पृशः	अस्पृशतम्	अस्पृशत	म०	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम	उ०	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि

विधिलिङ्

स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयुः	प्र०	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
स्पृशेः	स्पृशेताम्	स्पृशेत	म०	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
स्पृशेयम्	स्पृशेव	स्पृशेम	उ०	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमह्हि

लृट्

(क)	स्प्रक्ष्यति	स्प्रक्ष्यतः	स्प्रक्ष्यन्ति	प्र०	मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति
	स्प्रक्ष्यसि	स्प्रक्ष्यथः	स्प्रक्ष्यथ	म०	मरिष्यसि	मरिष्यथः	मरिष्यथ
	स्प्रक्ष्यामि	स्प्रक्ष्यावः	स्प्रक्ष्यामः	उ०	मरिष्यामि	मरिष्यावः	मरिष्यामः
(ख)	स्पर्क्ष्यति	स्पर्क्ष्यतः	स्पर्क्ष्यन्ति	प्र०			
	स्पर्क्ष्यसि	स्पर्क्ष्यथः	स्पर्क्ष्यथ	म०			
	स्पर्क्ष्यामि	स्पर्क्ष्यावः	स्पर्क्ष्यामः	उ०			

(६३) मुच् (छोड़ना) — तुदादिगण। उभयपद

(६४) रुध् (रोकना, ढकना) — रुधादिगण। उभयपद

	लट्-परस्मैपद				लट्-परस्मैपद	
मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति	प्र०	रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति
मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ	म०	रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध
मुञ्चामि	मुञ्चावः	मुञ्चामः	उ०	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः
	लोट्				लोट्	
मुञ्चतु	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु	प्र०	रुणद्धु	रुन्धाम्	रुन्धन्तु
मुञ्च	मुञ्चतम्	मुञ्चत	म०	रुन्धि	रुन्धम्	रुन्ध
मुञ्चानि	मुञ्चाव	मुञ्चाम	उ०	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम
	लङ्				लङ्	
अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्	प्र०	अरुणत्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्
अमुञ्चः	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत	म०	अरुणः	अरुन्धम्	अरुन्ध
अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम	उ०	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयुः	प्र०	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः
मुञ्चेः	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत	म०	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
मुञ्चेयम्	मुञ्चेव	मुञ्चेम	उ०	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम
	लृट्				लृट्	
मोक्ष्यति	मोक्ष्यतः	मोक्ष्यन्ति	प्र०	रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति
मोक्ष्यसि	मोक्ष्यथः	मोक्ष्यथ	म०	रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ
मोक्ष्यामि	मोक्ष्यावः	मोक्ष्यामः	उ०	रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः

सूचना- आत्मनेपद में सेव् के तुल्य रूप चलेंगे। लट्-मुञ्चते, लोट्-मुञ्चताम्, लङ्-अमुञ्चत, विधिलिङ्-मुञ्चेत, लृट्-मोक्ष्यते।

सूचना- आत्मनेपद में रुध् के रूप भुज् (धातु ६५) के तुल्य चलेंगे। लट-रुन्धे, लोट्-रुन्धाम्, लङ्-अरुन्ध, विधिलिङ्-रुन्धीत, लृट्-रोत्स्यते।

(६५) भुज् (१. पालन करना, २. भोजन करना)

सूचना— भुज् धातु पालन करने के अर्थ में परस्मैपदी होती है और भोजन करना, उपभोग करना अर्थ में आत्मनेपदी होती है।

लट्-परस्मैपद				लट्-आत्मनेपद		
भुनक्ति	भुङ्क्तः	भुञ्जन्ति	प्र०	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
भुनक्षि	भुङ्क्थः	भुङ्क्थ	म०	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे
भुनज्मि	भुञ्ज्वः	भुञ्ज्मः	उ०	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे
लोट्				लोट्		
भुनक्तु	भुङ्क्ताम्	भुञ्जन्तु	प्र०	भुङ्क्ताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्
भुङ्ग्धि	भुङ्क्तम्	भुङ्क्त	म०	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्ग्ध्वम्
भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम	उ०	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै
लङ्				लङ्		
अभुनक्	अभुङ्क्ताम्	अभुञ्जन्	प्र०	अभुङ्क्त	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत
अभुनक्	अभुङ्क्तम्	अभुङ्क्त	म०	अभुङ्क्थाः	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्ग्ध्वम्
अभुनजम्	अभुञ्ज्व	अभुञ्ज्म	उ०	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि
विधिलिङ्				विधिलिङ्		
भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः	प्र०	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्
भुञ्ज्याः	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात	म०	भुञ्जीथाः	भुञ्जीयाथाम्	भुञ्जीध्वम्
भुञ्ज्याम्	भुञ्ज्याव	भुञ्ज्याम	उ०	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि
लृट्				लृट्		
भोक्ष्यति	भोक्ष्यतः	भोक्ष्यन्ति	प्र०	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते
भोक्ष्यसि	भोक्ष्यथः	भोक्ष्यथ	म०	भोक्ष्यसे	भोक्ष्येथे	भोक्ष्यध्वे
भोक्ष्यामि	भोक्ष्यावः	भोक्ष्यामः	उ०	भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्यामहे

(६६) तन् (फैलाना)

तनादिगण। उभयपदी

लट्-परस्मैपद				लट्-आत्मनेपद		
तनोति	तनुतः	तन्वन्ति	प्र०	तनुते	तन्वाते	तन्वते
तनोषि	तनुथः	तनुथ	म०	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
तनोमि	तनुवः / तन्वः	तनुमः / तन्मः	उ०	तन्वे	तनुवहे / तन्वहे	तनुमहे / तन्महे
	लोट्				लोट्	
तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु	प्र०	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
तनु	तनुतम्	तनुत	म०	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
तनवानि	तनवाव	तनवाम	उ०	तनवै	तनवावहै	तनवामहै
	लङ्				लङ्	
अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्	प्र०	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
अतनोः	अतनुतम्	अतनुत	म०	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
अतनवम्	अतनुव / अतन्व	अतनुम / अतन्म	उ०	अतन्वि	अतनुवहि / अतन्वहि	अतनुमहि / अतन्महि
	विधिलिङ्				विधिलिङ्	
तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः	प्र०	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात	म०	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम	उ०	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि
	लृट्				लृट्	
तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति	प्र०	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ	म०	तनिष्यसे	तनिष्येथे	तनिष्यध्वे
तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः	उ०	तनिष्ये	तनिष्यावहे	तनिष्यामहे

(४) सन्धि-विचार

(१) यण्-सन्धि
(देखो अभ्यास १९)

(इको यणचि) इ ई को य्, उ ऊ को व्, ऋ को र्, ऌ को ल् हो जाता है, यदि बाद में कोई स्वर हो तो। सवर्ण (वैसा ही) स्वर हो तो नहीं। जैसे:-

प्रति+एक:=प्रत्येक:	मधु+अरि:=मध्वरि:	धातृ+अंश:=धात्रंश:
यदि+अपि=यद्यपि	अनु+अय:=अन्वय:	पितृ+आ=पित्रा
इति+आह=इत्याह	वधू+औ=वध्वौ	ऌ+आकृति:=लाकृति:

(२) अयादिसन्धि
(देखो अभ्यास २०)

(एचोऽयवायाव:) ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् हो जाता है, बाद में कोई स्वर हो तो। (शब्द के अन्तिम ए या ओ के बाद अ हो तो नहीं।) जैसे:-

हरे+ए=हरये	भो+अनम्=भवनम्	गै+अति=गायति
ने+अनम्=नयनम्	पो+अन:=पवन:	गै+अक:=गायक:
शे+अनम्=शयनम्	श्रो+अणम्=श्रवणम्	भौ+अक:=भावक:
संचे+अ:=संचय:	गुरो+ए=गुरवे	द्वौ+इमौ=द्वाविमौ

(३) गुणसन्धि
(देखो अभ्यास २१)

(आद्‌गुण:) (१) अ या आ के बाद इ या ई हो तो दोनों को 'ए' होगा। (२) अ या आ के बाद उ या ऊ हो तो दोनों को 'ओ' होगा। (३) अ या आ के बाद ऋ हो तो दोनों को 'अर्' होगा। (४) अ या आ के बाद ऌ हो तो दोनों को 'अल्' होगा। जैसे:-

महा+ईश:=महेश:	हित+उपदेश:=हितोपदेश:	ब्रह्म+ऋषि:=ब्रह्मर्षि:
महा+ईश्वर:=महेश्वर:	गङ्गा+उदकम्=गङ्गोदकम्	सप्त+ऋषि:=सप्तर्षि:
न+इति=नेति	पश्य+उपरि=पश्योपरि	तव+ऌकार:=तवल्कार:

(४) वृद्धिसन्धि
(देखो अभ्यास २२)

(वृद्धिरेचि) (१) अ या आ के बाद ए या ऐ होगा तो दोनों को 'ऐ' होगा। (२) अ य आ के बाद ओ या औ होगा तो दोनों को 'औ' होगा। जैसे:-

अत्र+एष:=अत्रैष:	जल+ओघ:=जलौघ:
पश्य+एतम्=पश्यैतम्	तण्डुल+ओदनम्=तण्डुलौदनम्
न+एतत्=नैतत्	देव+औदार्यम्=देवौदार्यम्
जन+ऐक्यम्=जनैक्यम्	कार्य+औचित्यम्=कार्यौचित्यम्

(५) दीर्घसन्धि (देखो अभ्यास २३)

(अकः सवर्णे दीर्घः) अ इ उ ऋ के बाद कोई सवर्ण (सदृश) अक्षर हो तो दोनों के स्थान पर उसी का दीर्घ अक्षर हो जाता है। अर्थात् (१) अ या आ + अ या आ=आ। (२) इ या ई + इ या ई = ई। (३) उ या ऊ + उ या ऊ = ऊ। (४) ऋ + ऋ = ॠ। जैसेः-

दया + आनन्दः = दयानन्दः	गिरि + ईशः = गिरीशः	भानु + उदयः = भानूदयः
विद्या + आलयः = विद्यालयः	नदी + ईशः नदीशः	होतृ + ऋकारः = होतॄकारः

(६) पूर्वरूपसन्धि (देखो अभ्यास २४)

(एङः पदान्तादति) पद (शब्दरूप या धातुरूप) के अन्तिम ए आ ओ के बाद अ हो तो वह हट जाता है। (अ हटा है, इस बात को बताने के लिए ऽ चिह्न लगा दिया जाता है)। जैसेः-

हरे+अव=हरेऽव	विष्णो+अव=विष्णोऽव
सर्वे+अपि=सर्वेऽपि	सो+अपि=सोऽपि

(७) श्चुत्वसन्धि (देखो अभ्यास २५)

(स्तोः श्चुना श्चुः) स् या तवर्ग से पहले या बाद में श् या चवर्ग कोई भी हो तो स् को श् और तवर्ग को चवर्ग हो जाता है। जैसेः-

रामस् + च = रामश्च	सत् + चित् = सच्चित्	सद् + जनः = सज्जनः
हरिस् + शेते = हरिश्शेते	तत् + च = तच्च	शार्ङ्गिन् + जय = शार्ङ्गिञ्जय

(८) ष्टुत्वसन्धि

(ष्टुना ष्टुः) स् या तवर्ग से पहले या बाद में ष् या टवर्ग कोई भी हो तो स् को ष् और तवर्ग को टवर्ग होता है। जैसेः-

इष्+तः=इष्टः	रामस्+षष्ठः=रामष्षष्ठः	विष्+नुः=विष्णुः
दुष्+तः=दुष्टः	उद्+डीनः=उड्डीनः	उष्+त्रः=उष्ट्रः

(९) जश्त्वसन्धि (१)

(झलां जशोऽन्ते) वर्ग के १,२,३,४ (अर्थात् पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ण) को ३ (अपने वर्ग का तीसरा अक्षर) हो जाता है, यदि वह पद (शब्द) का अन्तिम अक्षर हो तो। जैसेः-

जगत्+ईशः=जगदीशः	सुप्+अन्तः=सुबन्तः
सत्+आचारः=सदाचारः	अच्+अन्तः=अजन्तः

(१०) जश्त्वसन्धि (२)

(देखो अभ्यास २६)

(झलां जश् जशि) वर्ग के १,२,३,४ (पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ण) को ३ (अपने वर्ग का तीसरा अक्षर) हो जाता है, बाद में वर्ग के ३,४ (तीसरा या चौथा वर्ण) हो तो। (यह नियम पद के बीच में लगता है और नियम ९ पद के अन्त में।) जैसे:-

बुध्+धिः=बुद्धिः	बुध्+धः=बुद्धः	दुघ्+धम्=दुग्धम्
शुध्+धिः=शुद्धिः	युध्+धः=युद्धः	दघ्+धः=दग्धः
ऋध्+धिः=ऋद्धिः	लभ्+धः=लब्धः	क्षुभ्+धः=क्षुब्धः

(११) चर्त्वसन्धि

(देखो अभ्यास २७)

(खरि च) वर्ग के १,२,३,४ को १ (उसी वर्ग का प्रथम अक्षर) हो जाता है, बाद में वर्ग के १, २, श ष स कोई हों तो। जैसे:-

सद्+कारः=सत्कारः	सद्+पुत्रः=सत्पुत्रः
उद्+साहः=उत्साहः	तद्+परः=तत्परः

(१२) अनुस्वारसन्धि

(देखो अभ्यास १८)

(मोऽनुस्वारः) शब्द के अन्तिम म् के बाद कोई व्यंजन (हल्) हो तो म् को अनुस्वार (ं) हो जाता है। बाद में स्वर हो तो नहीं। जैसे:-

सत्यम्+वद = सत्यं वद	पुस्तकम्+पठति = पुस्तकं पठति
धर्मम्+चर = धर्मं चर	भोजनम्+खादति = भोजनं खादति
कार्यम्+कुरु = कार्यं कुरु	ईश्वरम्+नमति = ईश्वरं नमति

(१३) विसर्गसन्धि

(देखो अभ्यास २८)

(विसर्जनीयस्य सः) विसर्ग (:) के बाद वर्ग के १, २, श ष स कोई हों तो विसर्ग को स् हो जाता है। (श् या चवर्ग बाद में हो तो संधि-नियम ७ से स् को श् हो जायगा।) जैसे:-

बालकः+तिष्ठति=बालकस्तिष्ठति	पुत्रः+चलति=पुत्रश्चलति
रामः+तरति=रामस्तरति	हरिः+च=हरिश्च
कः+चित्=कश्चित्	रामः+शेते=रामश्शेते

(१४) रुत्वसन्धि (देखो अभ्यास २९)

(ससजुषो रुः) शब्द के अन्तिम् स् को रु (र्) हो जाता है। **(सूचना-** प्रथमा के एकवचन में इसी र् का विसर्ग रहता है। संधि में यह र् अ और आ के अतिरिक्त अन्य स्वरों के बाद रहता है)। जैसे:-

हरिः+अवदत् = हरिरवदत्	हरेः+एव = हरेरेव
गुरुः+अस्ति = गुरुरस्ति	गुरोः+धनम् = गुरोर्धनम्

(१५) उत्वसन्धि (१) (देखो अभ्यास २९)

(अतो रोरप्लुतादप्लुते) अः को ओ हो जाता है, बाद में अ हो तो। अर्थात् अः + अ = ओऽ। जैसे:-

कः+अपि = कोऽपि	रामः+अवदत् = रामोऽवदत्
रामः+अस्ति = रामोऽस्ति	कः+अयम् = कोऽयम्

(१६) उत्वसन्धि (२) (देखो अभ्यास ३०)

(हशि च) अः को ओ हो जाता है, बाद में वर्ग के ३, ४, ५, ह य व र ल कोई हों तो। जैसे:-

रामः+गच्छति = रामो गच्छति	पुत्रः+वदति = पुत्रो वदति
कृष्णः+लिखति = कृष्णो लिखति	देवः+जयति = देवो जयति
नृपः+जयति = नृपो जयति	नृपः+रक्षति = नृपो रक्षति

(१७) यत्वसन्धि

(भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि) भोः, भगोः, अघोः शब्द और अ या आ के बाद रु (र् याः) को य् होता है। बाद में कोई स्वर होगा तो य् का लोप विकल्प से होगा। यदि कोई व्यंजन होगा तो य् का लोप अवश्य होगा। जैसे:-

देवाः+गच्छनति = देवा गच्छन्ति	रामः+इच्छति = राम इच्छति
कन्याः+इच्छन्ति = कन्या इच्छन्ति	शिष्याः+एते = शिष्या एते

(१८) सुलोपसन्धि (देखो अभ्यास ३०)

(एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ् समासे हलि) सः और एषः के विसर्ग का लोप हो जाता है, बाद में कोई व्यंजन हो तो। जैसे:-

सः+गच्छति = स गच्छति	एषः+गच्छति = एष गच्छति
सः+लिखति = स लिखति	एषः वदति = एष वदति

(५) समास-परिचय

(१) अव्ययीभाव

अव्ययीभाव समास की पहचान यह है कि इसका पहला शब्द अव्यय (उपसर्ग या निपात) होता है। बाद का शब्द कोई संज्ञाशब्द होगा। अव्ययीभाव समास वाले शब्द अव्यय होते हैं या नपुंसकलिंग एकवचन हीते हैं। इनके रूप प्रायः नहीं चलते हैं। अव्ययीभाव समास के समस्त पद और विग्रह में अन्तर होता है, क्योंकि इसमें किसी विशेष अर्थ में अव्यय का प्रयोग होता है। जैसे-१. सप्तमी के अर्थ में अधि, हरौ-अधिहरि (हरि में)। २. समीप अर्थ में उप, गङ्गायाः समीपम्-उपगङ्गम् (गंगा के समीप)। ३. अभाव अर्थ में निर्, विघ्नानाम् अभावः-निर्विघ्नम् (विघ्नों का अभाव)। ४. पीछे अर्थ में अनु, हरेः पश्चात्-अनुहरि (हरि के पीछे)। ५. प्रत्येक अर्थ में प्रति, गृहं गृहं प्रति-प्रतिगृहम् (प्रत्येक घर में)। ६. अनुसार अर्थ में यथा, शक्तिम् अनतिक्रम्य-यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार)।

(२) तत्पुरुष

तत्पुरुष समास उसे कहते हैं, जहाँ पर दो या अधिक शब्दों के बीच में द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी या सप्तमी विभक्ति का लोप होता है। समास होने पर बीच की विभक्ति का लोप हो जायेगा। जिस विभक्ति का लोप होता है, उसी विभक्ति के नाम से वह तत्पुरुष कहा जाता है। जैसे-षष्ठी तत्पुरुष आदि। इसमें बाद वाले शब्द का अर्थ मुख्य होता है। (१) द्वितीया-भयं प्राप्तः-भयप्राप्तः। दुःखम् अतीतः-दुःखातीतः। कृष्णम् श्रितः-कृष्णश्रितः। (२) तृतीया-खड्गेन हतः-खड्गहतः। विद्यया हीनः-विद्याहीनः। ज्ञानेन शून्यः-ज्ञानशून्यः। बाणेन हतः-बाणहतः। (३) चतुर्थी-यूपाय दारु-यूपदारु। स्नानाय अर्थम्-स्नानार्थम्। (४) पंचमी-चोराद् भयम्-चोरभयम्। पापात् मुक्तः-पापमुक्तः। वृक्षात् पतितः-वृक्षपतितः। (५) षष्ठी-राज्ञः पुरुषः-राजपुरुषः। ईश्वरस्य भक्तः-ईश्वरभक्तः। विद्यायाः आलयः-विद्यालयः। देवानाम् आलयः-देवालयः। (६) सप्तमी-शास्त्रे निपुणः-शास्त्रनिपुणः। जले मग्नः-जलमग्नः। कार्ये चतुरः-कार्यचतुरः। युद्धे निपुणः-युद्धनिपुणः।

(३) कर्मधारय

विशेषण और विशेष्य का जो समास होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। विशेषण शब्द पहले रहता है, विशेष्य बाद में। इसमें दोनों पदों में एक ही विभक्ति रहती है। नीलम् उत्पलम्-नीलोत्पलम् (नीला कमल)। कृष्णः सर्पः-कृष्णसर्पः (काला साँप)। महान् चासौ आत्मा-महात्मा (महात्मा)। इन अर्थों में भी कर्मधारय होता है-(१) एव (ही) अर्थ में-मुखमेव कमलम्- मुखकमलम् (मुख-कमल)। पादपद्मम् (चरण-कमल)। (२) सुन्दर अर्थ में 'सु' और कुत्सित अर्थ में 'कु' लगता है। सुन्दरः पुरुषः-सुपुरुषः (अच्छा आदमी)। कुत्सितः पुरुषः-कुपुरुषः-(नीच आदमी)। कुपुत्रः (कुपुत्र), कुदेशः (बुरा देश)। (३). इव (तरह) अर्थ में-घन इव श्यामः-घनश्यामः (बादल की तरह काला)। नरः सिंह इव-नरसिंहः (शेर के सदृश व्यक्ति)। चन्द्रसदृशं मुखम्-चन्द्रमुखम् (चन्द्रमा के सदृश मुँह)।

(४) द्विगु

कर्मधारय समास का ही उपभेद द्विगु है। कर्मधारय में प्रथम शब्द संख्या-वाचक होगा तो वह द्विगु कहलाता है। यह समास प्रायः समाहार (समूह) अर्थ में होता है। त्रयाणां लोकानां समाहारः-त्रिलोकम् (तीन लोक)। चतुर्युगम् (चार युग)। समाहार में साधारणतया नपुंसकलिंग एकवचन होता है। अकारान्त शब्द स्त्रीलिंग भी हो जाते हैं। त्रिलोकम्-त्रिलोकी, चतुर्युगम्-चतुर्युगी, शताब्दम्-शताब्दी।

(५) नञ् समास

तत्पुरुष समास का ही एक भेद नञ् समास है। 'नहीं' अर्थ वाले नञ् का दूसरे शब्द के साथ समास होने पर नञ् समास होता है। यदि बाद में व्यंजन होगा तो नञ् का अ शेष रहेगा। स्वर बाद में होगा तो नञ् का अन् शेष रहेगा। न ब्राह्मणः-अब्राह्मणः (ब्राह्मणेतर)। अप्रियः (अप्रिय), अस्वस्थः (अस्वस्थ), अज्ञानम् (अज्ञान)। न उपस्थितः-अनुपस्थितः (अनुपस्थित)। अनुचितः (अनुचित), अनुदारः (कृपण) अनीश्वरवादी (ईश्वर को न माननेवाला)।

(६) बहुव्रीहि

बहुव्रीहि में अन्यपद के अर्थ को प्रधानता होती है। इसमें समास होने पर समस्तपद किसी अन्य पद के विशेषण के रूप में काम करता है। बहुव्रीहि की पहचान है कि अर्थ करने पर जहाँ जिसको, जिसने, जिसका, जिसमें आदि अर्थ निकले। बहुव्रीहि के साधारणतया तीन भेद होते हैं-(१) समानाधिकरण-जहाँ दोनों पदों में प्रथमा विभक्ति रहती है। (क) कर्म—प्राप्तम् उदकं यं सः-प्राप्तोदकः (जिसको जल मिल गया है)। (ख) करण—हताः शत्रवः येन सः-हतशत्रुः (जिसने शत्रुओं को मारा है, ऐसा राजा)। (ग) संप्रदान—दत्तं भोजनं यस्मै सः-दत्तभोजनः (जिसको भोजन दिया गया है, ऐसा भिक्षुक)। (घ) अपादान—पतितं पर्णं यस्मात् सः-पतितपर्णः (जिसके पत्ते गिर गये हैं, ऐसा वृक्ष)। (ङ) सम्बन्ध—दश आननानि यस्य सः—दशाननः (दस मुँहवाला, रावण)। पीताम्बरः (कृष्ण), चतुर्मुखः (ब्रह्मा)। (च) अधिकरण—वीराः पुरुषाः यस्मिन् सः-वीरपुरुषः (वीर पुरुषों वाला, ग्राम)। (२) सहार्थक-साथ अर्थ में बहुव्रीहि। विनयेन सहितम्-सविनयम् (सविनय)। सुपुत्रः, सबान्धवः, सादरम्। (३) व्यधिकरण-दोनों पदों में भिन्न विभक्तियाँ हों। धनुः पाणौ यस्य सः-धनुष्पाणिः (धनुर्धर)।

(७) द्वन्द्व

इसमें दो या अधिक शब्दों का इस प्रकार समास होता है कि उसमें च (और) अर्थ छिपा रहता है। इसमें दोनों पदों का अर्थ मुख्य होता है। द्वन्द्व समास की पहचान है कि जहाँ अर्थ करने पर 'और' अर्थ निकले। इसके साधारणतया तीन भेद होते हैं-(१) इतरेतर—जहाँ बीच में 'और' का अर्थ होता है और शब्दों की संख्या के अनुसार अन्त में वचन होता है। रामश्च कृष्णश्च-रामकृष्णौ (राम और कृष्ण)। पत्रं च पुष्पं च फलं च-पत्रपुष्पफलानि (पत्र, पुष्प और फल), हरिहरौ, रामलक्ष्मणौ, भीमार्जुनौ। (२) समाहार—समूह अर्थ में। इसमें प्रायः नपुंसकलिंग एकवचन अन्त में रहता है। हस्तौ च पादौ च हस्तपादम् (हाथ-पैर)। व्रीहियवम् (जौ-चावल)। शीतोष्णम् (ठंडा-गर्म)। (३) एकशेष—समान आकारवाले शब्दों में से एक शब्द शेष रहता है और अर्थ के अनुसार द्विवचन या बहुवचन होता है। वृक्षश्च वृक्षश्च—वृक्षौ (दो पेड़)।

(६) प्रत्यय-विचार

(१) क्त (२) क्तवतु प्रत्यय

(देखो अभ्यास २३, २४, २५)

सूचना—(१) क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल में होते हैं। क्त का त और क्तवतु का तवत् शेष रहता है। धातु को गुण या वृद्धि नहीं होती है। संप्रसारण होता है। यहाँ पर केवल क्त-प्रत्ययान्त के रूप दिये गये हैं। क्तवतु-प्रत्ययान्त रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि क्त-प्रत्ययान्त रूप के बाद में 'वत्' और जोड़ दो। अन्य नियमों के लिए देखो अभ्यास २३-२५।

(२) प्रत्यय-विचार में आगे सर्वत्र धातुएँ अकारादि-क्रम से दी गयी हैं। अधिक प्रसिद्ध रूप ही यहाँ दिये गये हैं।

अद्	जग्धः, अन्नम्	कृष्	कृष्टः	छिद्	छिन्नः
अधि+इ	अधीतः	कॄ	कीर्णः	जन्	जातः
अर्च्	अर्चितः	क्रन्द्	क्रन्दितः	जीव्	जीवितः
अस् (२प.)	भूतः	क्रम्	क्रान्तः	ज्ञा	ज्ञातः
आप्	आप्तः	क्री	क्रीतः	तप्	तप्तः
आ+रभ्	आरब्धः	क्रीड्	क्रीडितः	तुष्	तुष्टः
आ+लम्ब्	आलम्बितः	क्रुध्	क्रुद्धः	तृप्	तृप्तः
आ+ह्वे	आहूतः	क्षिप्	क्षिप्तः	त्यज्	त्यक्तः
इ	इतः	खाद्	खादितः	दण्ड्	दण्डितः
इष्	इष्टः	गण्	गणितः	दा	दत्तः
ईक्ष्	ईक्षितः	गम्	गतः	दुह्	दुग्धः
उत्+डी	उड्डीनः	गर्ज्	गर्जितः	दृश्	दृष्टः
कथ्	कथितः	गै (गा)	गीतः	धा	हितः
कम्प्	कम्पितः	ग्रह्	गृहीतः	धाव्	धावितः
कुप्	कुपितः	चल्	चलितः	धृ	धृतः
कूर्द्	कूर्दितः	चिन्त्	चिन्ततः	ध्वंस्	ध्वस्तः
कृ	कृतः	चुर्	चोरितः	नम्	नतः

नश्	नष्टः	मुह्	मुग्धः, मूढः	शास्	शिष्टः
नी	नीतः	यज्	इष्टः	शिक्ष्	शिक्षितः
पच्	पक्तः	या	यातः	शी	शयितः
पठ्	पठितः	याच्	याचितः	शुष्	शुष्कः
पत्	पतितः	युज्	युक्तः	श्रि	श्रितः
पा (१ प०)	पीतः	रक्ष्	रक्षितः	श्रु	श्रुतः
पाल्	पालितः	रच्	रचितः	सद्	सन्नः
पुष्	पुष्टः	रञ्ज्	रक्तः	सह्	सोढः
पूज्	पूजितः	रम्	रतः	सिच्	सिक्तः
पॄ	पूर्णः	रुद्	रुदितः	सिध्	सिद्धः
प्रच्छ्	पृष्टः	रुध्	रुद्धः	सिव्	स्यूतः
प्रेर्	प्रेरितः	रुह्	रूढः	सृज्	सृष्टः
बन्ध्	बद्धः	लभ्	लब्धः	सेव्	सेवितः
बुध्	बुद्धः	लिख्	लिखितः	स्तु	स्तुतः
ब्रू (वच्)	उक्तः	लुभ्	लुब्धः	स्था	स्थितः
भक्ष्	भक्षितः	वच् (ब्रू)	उक्तः	स्निह्	स्निग्धः
भण्	भणितः	वद्	उदितः	स्पृश्	स्पृष्टः
भाष्	भाषितः	वप्	उप्तः	स्वप्	सुप्तः
भिद्	भिन्नः	वस्	उषितः	हन्	हतः
भी	भीतः	वह्	ऊढः	हस्	हसितः
भुज्	भुक्तः	विश्	विष्टः	हा (३ प०)	हीनः
भू	भूतः	वृत्	वृत्तः	हिंस्	हिंसितः
भ्रम्	भ्रान्तः	वृध्	वृद्धः	हु	हुतः
मन्	मतः	व्यध्	विद्धः	हृ	हृतः
मिल्	मिलितः	शक्	शक्तः	हृष्	हृष्टः
मुच्	मुक्तः	शम्	शान्तः	ह्वे	हूतः

(देखो अभ्यास २६)

(३) शतृ प्रत्यय

सूचना—'रहा' अर्थ में परस्मैपदी धातुओं से लट् के स्थान पर शतृ प्रत्यय होता है। शतृ का अत् शेष रहता है। तीनों लिंगों में रूप चलते हैं। यहाँ केवल पुंलिंग के रूप दिये गये है। अन्य नियमों के लिए देखो अभ्यास २६। प्रसिद्ध प्रयोग ही यहाँ दिये गये हैं। धातुएँ अकारादि-क्रम से दी गयी हैं।

अस् (१ प.)	सन्	जीव्	जीवन्	भिद्	भिन्दन्
आप्	आप्नुवन्	ज्ञा	जानन्	भू	भवन्
आ+ह्वे	आह्वयन्	तप्	तपन्	भ्रम्	भ्रमन्
इष्	इच्छन्	तॄ	तरन्	रक्ष्	रक्षन्
कथ्	कथयन्	त्यज्	त्यजन्	रच्	रचयन्
कृ	कुर्वन्	दा	ददत्	लिख्	लिखन्
कृष्	कर्षन्	दुह्	दुहन्	वद्	वदन्
क्री	क्रीणन्	दृश्	पश्यन्	वस्	वसन्
क्रीड्	क्रीडन्	धा	दधत्	वह्	वहन्
खन्	खनन्	धाव्	धावन्	विश्	विशन्
खाद्	खादन्	नश्	नश्यन्	वृष्	वर्षन्
गण्	गणयन्	नी	नयन्	शक्	शक्नुवन्
गम्	गच्छन्	नृत्	नृत्यन्	श्रि	श्रयन्
गै	गायन्	पच्	पचन्	श्रु	शृण्वन्
ग्रह्	गृह्णन्	पठ्	पठन्	सद्	सीदन्
घ्रा	जिघ्रन्	पत्	पतन्	सिच्	सिञ्चन्
चर्	चरन्	पा (१ प.)	पिबन्	स्था	तिष्ठन्
चल्	चलन्	प्रच्छ्	पृच्छन्	स्मृ	स्मरन्
चिन्त्	चिन्तयन्	प्रेर्	प्रेरयन्	हन्	हनन्
चुर्	चोरयन्	ब्रू	ब्रुवन्	हस्	हसन्
जि	जयन्	भक्ष्	भक्षयन्	हृ	हरन्

(४) तुमुन्, (५) तव्यत्, (६) तृच् प्रत्यय (देखो अभ्यास २८, ३०)

सूचना—(क) तुमुन् प्रत्यय 'को' 'के लिए' अर्थ में होता है। तुमुन् का तुम् शेष रहता है। इसके रूप नहीं चलते हैं। धातु को गुण होता है। (ख) तव्यत् प्रत्यय 'चाहिए' अर्थ में होता है। तव्यत् का तव्य शेष रहता है। तव्य प्रत्यय लगाकर रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि तुम् प्रत्यय वाले रूप में तुम् के स्थान पर तव्य लगा दो। (देखो अभ्यास ३०)। (ग) 'करनेवाला' या 'वाला' अर्थ में तृच् प्रत्यय होता है। तृच् का तृ शेष रहता है। इसकें रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि तुम् प्रत्यय वाले रूप में तुम् के स्थान पर तृ लगा दो। जैसे-कृ-कर्तुम्, कर्तव्य, कर्तृ। कर्ता, हर्ता, धर्ता, भर्ता, श्रोता सब रूप तृच् प्रत्यय प्र० के हैं। धातुएँ अकारादिक्रम से दी गयी हैं।

अद्	अत्तुम्	कृष्	कर्ष्टुम्	चर्	चरितुम्
अधि+इ	अध्येतुम्	क्रन्द्	क्रन्दितुम्	चल्	चलितुम्
अर्च्	अर्चितुम्	क्रम्	क्रमितुम्	चि	चेतुम्
अस् (२ प.)	भवितुम्	क्री	क्रेतुम्	चिन्त्	चिन्तयितुम्
आप्	आप्तुम्	क्रीड्	क्रीडितुम्	चुर्	चोरयितुम्
आ+रभ्	आरब्धुम्	क्रुध्	क्रोद्धुम्	छिद्	छेत्तुम्
आ+रुह्	आरोढुम्	क्षिप्	क्षेप्तुम्	जप्	जपितुम्
आ+ह्वे	आह्वातुम्	खन्	खनितुम्	जि	जेतुम्
इ	एतुम्	खाद्	खादितुम्	जीव्	जीवितुम्
इष्	एषितुम्	गण्	गणयितुम्	ज्ञा	ज्ञातुम्
ईक्ष्	ईक्षितुम्	गम्	गन्तुम्	तप्	तप्तुम्
कथ्	कथयितुम्	गर्ज्	गर्जितुम्	तृ	तरितुम्
कम्प्	कम्पितुम्	गै	गातुम्	त्यज्	त्यक्तुम्
कूर्द्	कूर्दितुम्	ग्रह्	ग्रहीतुम्	त्रै	त्रातुम्
कृ	कर्तुम्	घ्रा	घ्रातुम्	दंश्	दंष्टुम्

दह्	दग्धुम्	भिद्	भेत्तुम्	वृत्	वर्तितुम्
दा	दातुम्	भी	भेतुम्	वृध्	वर्धितुम्
दिश्	देष्टुम्	भुज्	भोक्तुम्	वृष्	वर्षितुम्
दुह्	दोग्धुम्	भू	भवितुम्	शक्	शक्तुम्
धा	धातुम्	भृ	भर्तुम्	शप्	शप्तुम्
धाव्	धावितुम्	भ्रम्	भ्रमितुम्	शिक्ष्	शिक्षितुम्
धृ	धर्तुम्	मिल्	मेलितुम्	शी	शयितुम्
ध्यै	ध्यातुम्	मुच्	मोक्तुम्	श्रि	श्रयितुम्
नम्	नन्तुम्	मृ	मर्तुम्	श्रु	श्रोतुम्
नश्	नशितुम्	यज्	यष्टुम्	सह्	सोढुम्
नी	नेतुम्	या	यातुम्	सिच्	सेक्तुम्
नृत्	नर्तितुम्	याच्	याचितुम्	सिव्	सेवितुम्
पच्	पक्तुम्	युध्	योद्धुम्	सृ	सर्तुम्
पठ्	पठितुम्	रक्ष्	रक्षितुम्	सृज्	स्रष्टुम्
पत्	पतितुम्	रच्	रचयितुम्	सृप्	सर्प्तुम्
पद्	पत्तुम्	रम्	रन्तुम्	सेव्	सेवितुम्
पलाय्	पलायितुम्	रुद्	रोदितुम्	स्तु	स्तोतुम्
पा (१, २ प.)	पातुम्	लभ्	लब्धुम्	स्था	स्थातुम्
पालि	पालयितुम्	लिख्	लेखितुम्	स्ना	स्नातुम्
प्रच्छ्	प्रष्टुम्	लिह्	लेढुम्	स्पृश्	स्प्रष्टुम्
प्रेर्	प्रेरयितुम्	वच्	वक्तुम्	स्मृ	स्मर्तुम्
बन्ध्	बन्द्धुम्	वद्	वदितुम्	हन्	हन्तुम्
ब्रू	वक्तुम्	वप्	वप्तुम्	हस्	हसितुम्
भक्ष्	भक्षयितुम्	वस्	वस्तुम्	हा	हातुम्
भज्	भक्तुम्	वह्	वोढुम्	हृ	हर्तुम्
भाष्	भाषितुम्	विश्	वेष्टुम्	हृष्	हर्षितुम्

(७) क्त्वा, (८) ल्यप् प्रत्यय

(देखो अभ्यास २९)

सूचना— 'कर' या 'करके' अर्थ में क्त्वा और ल्यप् प्रत्यय होते हैं। क्त्वा का त्वा और ल्यप् का य शेष रहता है। धातु से पहले उपसर्ग नहीं होगा तो क्त्वा प्रत्यय होगा। यदि उपसर्ग (प्र, सम्, आ, उप, नि, वि आदि) पहले होगा तो ल्यप् होगा। दोनों प्रत्ययान्त रूप अव्यय होते हैं।, अतः इनके रूप नहीं चलते। अधिक प्रचलित रूप ही यहाँ दिये गये हैं। धातुएँ अकारादि-क्रम से दी गयी हैं।

अधि+इ (२ आ.)—		अधीत्य
अस् (२ प०)	भूत्वा	संभूय
आप्	आप्त्वा	प्राप्य
इ	इत्वा	प्रेत्य
ईक्ष्	ईक्षित्वा	समीक्ष्य
उत्+डी	—	उड्डीय
कूर्द्	कूर्दित्वा	प्रकूर्द्य
कृ	कृत्वा	उपकृत्य
कृष्	कृष्ट्वा	आकृष्य
कॄ	कीर्त्वा	विकीर्य
क्रन्द्	क्रन्दित्वा	आक्रन्द्य
क्री	क्रीत्वा	विक्रीय
क्रीड्	क्रीडित्वा	प्रक्रीड्य
क्षिप्	क्षिप्त्वा	प्रक्षिप्य
खन्	खनित्वा	उत्खन्य
गण्	गणयित्वा	विगणय्य
गम्	गत्वा	आगम्य
ग्रह्	गृहीत्वा	संगृह्य
घ्रा	घ्रात्वा	आघ्राय
चिन्त्	चिन्तयित्वा	संचिन्त्य
छिद्	छित्वा	[illegible]

जि	जित्वा	विजित्य
ज्ञा	ज्ञात्वा	विज्ञाय
तन्	तनित्वा	वितत्य
तुष्	तुष्ट्वा	सन्तुष्य
तॄ	तीर्त्वा	उत्तीर्य
त्यज्	त्यक्त्वा	परित्यज्य
दा	दत्त्वा	आदाय
दिश्	दिष्ट्वा	उपदिश्य
दुह्	दुग्ध्वा	संदुह्य
दृश्	दृष्ट्वा	संदृश्य
धा	हित्वा	विधाय
धाव्	धावित्वा	प्रधाव्य
ध्यै	ध्यात्वा	संधाय
नम्	नत्वा	प्रणम्य
नश्	नष्ट्वा	विनश्य
नि+वृ	—	निवृत्य
नी	नीत्वा	आनीय
नृत्	नर्तित्वा	प्रनृत्य
पच्	पक्त्वा	संपच्य
पठ्	पठित्वा	संपठ्य
पत्	पतित्वा	निपत्य

पलाय् (परा+अय्) —		पलाय्य
पा (१प.)	पीत्वा	निपाय
पॄ	पूर्त्वा	आपूर्य
प्रच्छ्	पृष्ट्वा	संपृच्छ्य
बुध्	बुद्ध्वा	प्रबुध्य
ब्रू	उक्त्वा	प्रोच्य
भक्ष्	भक्षयित्वा	संभक्ष्य
भज्	भक्त्वा	विभज्य
भाष्	भाषित्वा	संभाष्य
भिद्	भित्त्वा	प्रभिद्य
भुज्	भुक्त्वा	उपभुज्य
भू	भूत्वा	संभूय
भ्रम्	भ्रमित्वा	संभ्रम्य
मन्	मत्वा	अनुमत्य
मिल्	मिलित्वा	संमिल्य
मुच्	मुक्त्वा	विमुच्य
यज्	इष्ट्वा	समिज्य
या	यात्वा	प्रयाय
युज्	युक्त्वा	प्रयुज्य
युध्	युद्ध्वा	प्रयुध्य
रक्ष्	रक्षित्वा	संरक्ष्य
रच्	रचयित्वा	विरचय्य
रभ्	रब्ध्वा	आरभ्य
रम्	रत्वा	विरम्य
रुह्	रूढ्वा	आरुह्य
लप्	लपित्वा	विलप्य
लभ्	लब्ध्वा	उपलभ्य
लिख्	लिखित्वा	विलिख्य
लिह्	लीढ्वा	आलिह्य
वद्	उदित्वा	अनूद्य
वप्	उप्त्वा	समुप्य
वस्	उषित्वा	उपोष्य
वह्	ऊढ्वा	प्रोह्य
विश्	विष्ट्वा	प्रविश्य
वृत्	वर्तित्वा	निवृत्य
वृष्	वर्षित्वा	प्रवृष्य
शम्	शान्त्वा	निशम्य
शास्	शिष्ट्वा	अनुशिष्य
शी	शयित्वा	संशय्य
श्रि	श्रित्वा	आश्रित्य
श्रु	श्रुत्वा	संश्रुत्य
सह्	सहित्वा	संसह्य
सिच्	सिक्त्वा	अभिषिच्य
सृज्	सृष्ट्वा	विसृज्य
सेव्	सेवित्वा	निषेव्य
स्तु	स्तुत्वा	प्रस्तुत्य
स्था	स्थित्वा	प्रस्थाय
स्पृश्	स्पृष्ट्वा	संस्पृश्य
स्मृ	स्मृत्वा	विस्मृत्य
हन्	हत्वा	निहत्य
हस्	हसित्वा	विहस्य
हा (३प.)	हित्वा	विहाय
हृ	हृत्वा	प्रहृत्य
ह्वे	हूत्वा	आहूय

(९) ल्युट्, (१०) अनीयर् प्रत्यय (देखो अभ्यास ३०)

सूचना— (क) भाववाचक शब्द बनाने के लिए धातु से ल्युट् प्रत्यय होता हैं। ल्युट् का अन शेष रहता है। धातु को गुण होता है। ल्युट् (अन) प्रत्यय वाले शब्द नपुंसकलिंग होते हैं। जैसे—हिन्दी में पढ़ना, लिखना, जांना, आना या संस्कृत में पठनम्, लेखनम्, गमनम्, आगमनम्। (ख) 'चाहिए' अर्थ में धातु से अनीयर् प्रत्यय होता है। अनीयर् का अनीय शेष रहता है। अनीय लगाकर रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि ल्युट् प्रत्यय वाले शब्द के अन्तिम अन के स्थान पर अनीय लगा दो। जैसे-पठ् का पठन, पठनीय। लिख्-लेखन, लेखनीय। **धातुएँ अकारादि-क्रम से दी गई हैं।**

अधि+इ	अध्ययनम्	क्रम्	क्रमणम्	जि	जयनम्
अन्विष्	अन्वेषणम्	क्री	क्रयणम्	जीव्	जीवनम्
अर्च्	अर्चनम्	क्रीड्	क्रीडनम्	ज्ञा	ज्ञानम्
अर्ज्	अर्जनम्	क्रुध्	क्रोधनम्	ज्वल	ज्वलनम्
अस् (२प.)	भवनम्	क्षिप्	क्षेपणम्	तप्	तपनम्
आ+क्रम्	आक्रमणम्	खन्	खननम्	तुष्	तोषणम्
आ+चर्	आचरणम्	खाद्	खादनम्	तृप्	तर्पणम्
आ+रुह्	आरोहणम्	गण्	गणनम्	तॄ	तरणम्
आस्	आसनम्	गम्	गमनम्	त्यज्	त्यजनम्
आ+ह्वे	आह्वानम्	गर्ज्	गर्जनम्	त्रै	त्राणम्
ईक्ष्	ईक्षणम्	गै	गानम्	दंश्	दंशनम्
उद्+डी	उड्डयनम्	ग्रह्	ग्रहणम्	दण्ड्	दण्डनम्
कथ्	कथनम्	चर्	चरणम्	दह्	दहनम्
कम्प्	कम्पनम्	चल्	चलनम्	दा	दानम्
कूर्द्	कूर्दनम्	चि	चयनम्	दुह्	दोहनम्
कृ	करणम्	चिन्त्	चिन्तनम्	दृश्	दर्शनम्
कृष्	कर्षणम्	चुर्	चोरणम्	धा	धानम्
क्रन्द्	क्रन्दनम्	छिद्	छेदनम्	धाव्	धावनम्

धृ	धरणम्	भञ्ज्	भञ्जनम्	वृध्	वर्धनम्
ध्यै	ध्यानम्	भाष्	भाषणम्	वृष्	वर्षणम्
नश्	नशनम्	भुज्	भोजनम्	शप्	शपनम्
नि+गृ	निगरणम्	भू	भवनम्	शम्	शमनम्
निन्द्	निन्दनम्	भृ	भरणम्	शास्	शासनम्
नि+यम्	नियमनम्	भ्रम्	भ्रमणम्	शिक्ष्	शिक्षणम्
नि+विद्	निवेदनम्	मन्	मननम्	शी	शयनम्
नी	नयनम्	मिल्	मेलनम्	शुभ्	शोभनम्
नृत्	नर्तनम्	मुच्	मोचनम्	शुष्	शोषणम्
पच्	पचनम्	मुह्	मोहनम्	श्रु	श्रवणम्
पठ्	पठनम्	मृ	मरणम्	सं+मिल्	संमेलनम्
पत्	पतनम्	या	यानम्	सह्	सहनम्
पलाय्	पलायनम्	याच्	याचनम्	साध्	साधनम्
पा	पानम्	युज्	योजनम्	सिच्	सेचनम्
पाल्	पालनम्	रक्ष्	रक्षणम्	सिव्	सेवनम्
पुष्	पोषणम्	रञ्ज्	रञ्जनम्	सृज्	सर्जनम्
पूज्	पूजनम्	रुद्	रोदनम्	सेव्	सेवनम्
प्र+काश्	प्रकाशनम्	लिख्	लेखनम्	स्तु	स्तवनम्
प्र+आप्	प्रापणम्	लोच्	लोचनम्	स्था	स्थानम्
प्र+हस्	प्रहसनम्	वच्	वचनम्	स्ना	स्नानम्
प्रेर्	प्रेरणम्	वञ्च्	वञ्चनम्	स्पृश्	स्पर्शनम्
प्रेष्	प्रेषणम्	वन्द्	वन्दनम्	स्मृ	स्मरणम्
बन्ध्	बन्धनम्	वर्ण्	वर्णनम्	स्वप्	स्वपनम्
ब्रू	वचनम्	वह्	वहनम्	हन्	हननम्
भक्ष्	भक्षणम्	वि+धा	विधानम्	हु	हवनम्
भज्	भजनम्	वृत्	वर्तनम्	हृ	हरणम्

(७) अनुवादार्थ गद्य-संग्रह

(१) संस्कृत-भाषा

शुद्ध भाषा को संस्कृत कहते हैं। इसके ही नाम देवभाषा, देववाणी आदि हैं। यह भारतवर्ष की एक बहुमूल्य निधि है। भारतवर्ष का सारा प्राचीन ज्ञान-भण्डार इसी भाषा में है। वेद, उपनिषद्, दर्शन, रामायण, महाभारत, गीता आदि ग्रन्थ इसी भाषा में हैं। प्राचीन समय में संस्कृत भाषा आर्यों के दैनिक व्यवहार की भाषा थी। पाणिनि और पंतजलि के कथनों से यह बात सर्वथा सिद्ध होती है। इस भाषा के ज्ञान से ही प्राचीन भारतीय संस्कृति का ज्ञान होता है। हमारा कर्तव्य है कि हम इसके प्रचार और उन्नति के लिए प्रयत्न करें।

(२) कालिदास

महाकवि कालिदास संस्कृत-साहित्य के सर्वोत्तम कवि हैं। उन्होंने नाटक, महाकाव्य और गीतिकाव्य लिखे हैं। उनके लिखे हुए ७ प्रमुख ग्रन्थ ये हैं— (क) नाटक—मालविकाग्रिमित्र, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञान-शाकुन्तल, (ख) महाकाव्य—कुमारसंभव, रघुवंश, (ग) गीतिकाव्य—ऋतुसंहार, मेघदूत। उनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। उनकी रचनाओं में प्रसाद-गुण और माधुर्य-गुण हैं। वे नीरस कथा को भी सरस बना देते हैं। उनकी लोकप्रियता का मुख्य कारण है— उनकी सरल, सुन्दर और शुद्ध शैली। वे बहुत कम शब्दों के द्वारा अधिक और सुन्दर अर्थ कहते हैं। वे चरित्र-चित्रण में असाधारण पटु हैं। उनका भाषा पर पूर्ण अधिकार है। वे उपमाओं के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं। उनकी रचनाएँ दूसरे कवियों के लिए आदर्श रही हैं।

संकेत—(१) वचनैः, एतत् सिध्यति, प्रयतेमहि। (२) कृतिषु, सम्पादयति, स्वल्पैरेव पदैः, वर्णयति, आदर्शरूपा अभवन्।

(३) अहिंसा

किसी को दुःख देने को हिंसा कहते हैं। हिंसा तीन प्रकार की होती है-मन से, वचन से और कर्म से। मन से किसी का अशुभ सोचना, यह मानसिक हिंसा है। कटु-वचन और असत्य-भाषण से किसी को दुःखित करना, यह वाचिक हिंसा है। किसी जीव की हत्या करना या उसे दण्ड आदि के द्वारा पीड़ा देना, यह कायिक हिंसा है। इन तीनों हिंसाओं के त्याग को अहिंसा कहते हैं। संसार में अहिंसा की बहुत आवश्यकता है। अहिंसा से मनुष्य की आत्मा प्रसन्न रहती हैं। अहिंसा से पशु-पक्षी भी मनुष्यों पर प्रेम करते हैं। अहिंसा से शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। संसार के सभी महापुरुषों ने अहिंसा को अपनाया है। अहिंसा से ही संसार में शान्ति रह सकती है। अतएव कहा गया है—अहिंसा परमो धर्मः।

(४) आरोग्य

मनुष्य के जीवन में आरोग्य का बहुत महत्त्व है। मनुष्य का जीवन तभी सुखी हो सकता है, जब वह नीरोग हो। जो मनुष्य नीरोग है, वह सब प्रकार के पुरुषार्थ कर सकता है। जो मनुष्य रुग्ण है, जिसके शरीर में शक्ति नहीं है, वह किसी प्रकार भी संसार में सुख का अनुभव नहीं कर सकता है। अतः शरीर को नीरोग रखना अनिवार्य कर्तव्य है। शरीर की नीरोगता व्यायाम से होती है। व्यायाम अनेक प्रकार के हैं, जैसे घूमना, दौड़ना, खेलना, तैरना आदि। बालकों के लिये खेलना, दौड़ना और तैरना विशेष लाभप्रद हैं। योगासन और भारतीय व्यायाम भी शरीर की नीरोगता के लिए विशेष उपयोगी हैं। जीवन को सुखमय बनाने के लिए सदा व्यायाम करना चाहिये और शरीर को नीरोग रखना चाहिये।

संकेतः—(३) परपीडनम्, त्रिविधा, मानसिकी, वाचिकी, हननम्, कायिकी, तिसृणाम्, प्रसीदति, स्वीकृतवन्तः, संभवति। (४) सर्वविधम्, कर्तुं शक्नोति, कथमपि, नानाविधाः, तरणम्, नियमयं कर्तव्यम् ।

(५) सदाचार

सज्जनों के आचरण को सदाचार कहते हैं। सज्जन जिस प्रकार आचरण करते हैं, उसी प्रकार आचरण करना सदाचार है। सज्जन अपनी इन्द्रियों को वश में रखते हैं, दुर्गुणों पर विजय पाते हैं और सद्‌गुणों को उन्नत करते हैं। वे सत्य बोलते हैं, असत्य को छोड़ते हैं, माता-पिता और गुरुजनों का आदर करते हैं, सत्कार्यों में प्रवृत्त होते हैं, असत्कार्यों से निवृत्त होते हैं और परोपकार के कार्य करते हैं। सदाचार को अपनाने से ही देश, जाति और समाज की उन्नति होती है। सदाचार से ही मनुष्य संयमी होता है। सदाचार से मनुष्य का शरीर पुष्ट होता है, उसकी बुद्धि बढ़ती है, मन निर्मल होता है, सद्‌गुणों का समावेश होता है और दुर्गुणों का नाश होता है। अतएव कहा गया है—आचारः परमो धर्मः।

(६) सत्संगति

सज्जनों की संगति को सत्संगति कहते हैं। सत्संगति एक विशेष गुण है। सज्जनों की संगति से मनुष्य में सद्‌गुण का समावेश होता है और दुर्गुणों का नाश होता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, वह संगति से ही गुणों और अवगुणों को सीखता है। वह जैसे मनुष्यों की संगति में रहेगा, वैसे ही गुण सीखेगा। सज्जनों की संगति से मनुष्य सद्‌गुण सीखता है और दुर्जनों की संगति से दुर्गुण। सत्संगति से मनुष्य का जीवन सुख और शान्ति से युक्त होता है, मनुष्य उन्नति की ओर अग्रसर होता है और उसकी कीर्ति फैलती है। बाल्यकाल में बालक पर संगति का प्रभाव विशेषरूप से होता है। अतः जीवन को सुखी और शान्तियुक्त बनाने के लिए सत्संगति ही करनी चाहिये।

संकेतः—(५) आचरन्ति, स्थापयन्ति, लभन्ते, प्रवर्तन्ते, निवर्तन्ते, वर्धते।
(६) [illegible], निवारयति, [illegible], प्रथते।

(७) महात्मा गांधी

महात्मा गांधी का जन्म गुजरात प्रान्त में हुआ था। इनके पिता का नाम करमचन्द और माता का नाम पुतलीबाई था। ये दोनों बहुत सज्जन-प्रकृति के थे। महात्मा गांधी भी बचपन से ही सज्जन-स्वभाव के थे। महात्मा गांधी ने भारतवर्ष और विदेशों में उच्च शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात् वे देश-सेवा के काम में लग गये। उन्होंने अपना सारा जीनव भारतवर्ष की सेवा में लगा दिया। उन्होंने प्रण किया कि भारतवर्ष को स्वतन्त्र करूँगा। उनके त्याग और तपस्या का फल है कि भारत स्वतन्त्र हुआ और आज भारत स्वतन्त्र राष्ट्रों में आदरणीय हो रहा है। वे सत्य और अहिंसा के प्रबल समर्थक और पालक थे। उन्होंने हरिजनोद्धार, स्त्री-शिक्षा, भारतीय कला-कौशल की उन्नति आदि प्रशंसनीय कार्य किये हैं।

(८) महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द का जन्म गुजरात में हुआ था। वे भारतवर्ष के समाज-सुधारकों में सर्वप्रथम हैं। अपने चाचा और बहिन की मृत्यु को देखकर उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ और वे सत्य शिव को ढूँढ़ने के लिए घर से निकल पड़े। उन्होंने अनेक वर्षों तक तपस्या की। उन्होंने समाज की त्रुटियों को दूर करने के लिए आर्यसमाज की स्थापना की। उन्होंने वेदों का भाष्य करके वेदों का महत्त्व संसार को प्रदर्शित किया। उन्होंने समाज-सुधार के बहुत-से काम किये। जैसे-अस्पृश्यों का उद्धार, स्त्री-शिक्षा, गो-रक्षा, गोशाला और अनाथालयों की स्थापना आदि। वे पूर्ण सदाचारी, त्यागी, तपस्वी, देशभक्त, समाज-सुधारक, वेदों के अद्वितीय विद्वान्, असाधारण वक्ता और निर्भीक संन्यासी थे।

संकेत:—(७) प्रकृत्या अतिसज्जनौ, सरलस्वभाव:, यापितवान् (८) पितृव्यस्य, प्रादुरभवत्, अन्वेष्टुम्, अस्थापयत्।

(९) दशहरा

दशहरा आर्यों का सबसे मुख्य पर्व है। यह पर्व आश्विन मास में शुक्ल पक्ष की दशमी को होता है। यह क्षत्रियों का मुख्य पर्व माना जाता है। जनश्रुति है कि श्री रामचन्द्रजी ने इसी दिन रावण पर विजय पायी थी। इसलिए इस पर्व के अवसर पर हिन्दू रामलीला का आयोजन करते हैं। उसमें राम की विजय और पापी रावण का वध दिखाते हैं। यह पर्व बहुत प्राचीन समय से मनाया जाता है। क्षत्रिय इस अवसर पर अपने शस्त्रों की पूजा करते हैं। यह पर्व शिक्षा देता है कि धर्मात्मा की सदा विजय होती है और पापी का नाश होता है। यह पर्व क्षात्रबल की उन्नति का सूचक है। क्षात्रबल की उन्नति से ही देश की उन्नति होती है। इस पर्व को विजयादशमी भी कहते हैं।

(१०) दीपावली

दीपावली भी हिन्दुओं का प्रसिद्ध पर्व है। इसको दीवाली और दीपमालिका भी कहते हैं। यह कार्तिक मास की अमावस्या के दिन विशेष आयोजन के साथ मनायी जाती है। इसके विषय में जनश्रुति है कि श्री रामचन्द्रजी रावण को जीतकर जब अयोध्या लौटे तो इसी दिन विजयोत्सव का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर सभी हिन्दू अपने मकानों की स्वच्छता करते और कराते हैं। यह वैश्यों का मुख्य पर्व माना जाता है। वे इस दिन लक्ष्मी-पूजन करते हैं और अपने व्यापार में श्री-वृद्धि के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं। इस अवसर पर रात्रि में सभी घर दीपमाला से सुशोभित होते हैं और सभी आनन्दोत्सव मनाते हैं।

संकेतः—(९) पर्व (पर्वन्), दशम्याम्, मन्यते, दर्शयन्ति, आयोज्यते। (१०) कथ्यते, विलिख्य, प्रत्यागतः, कारयन्ति, गण्यते, सम्पादयन्ति।

(११) स्वदेश-प्रेम

स्वदेश-प्रेम सर्वोत्तम गुणों में से एक गुण है। संसार का प्रत्येक मनुष्य अपने देश का ऋणी है। जिस देश में उसने जन्म पाया है, जहाँ निरन्तर खेला और कूदा है, जिसके अन्न और जल का उपभोग किया है, जहाँ की वायु से जीवित रहा है, उसके ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकता है। मनुष्य अपने देश का ऋणी है; अतः उसका कर्तव्य है कि वह देश की उन्नति के लिए कुछ कार्य करे। वह कोई ऐसा कार्य न करे, जिससे देश की अवनति या अकीर्ति हो। महात्मा गांधी, सुभाष बोस, जवाहरलाल नेहरू आदि ने अपना सारा जीवन देश के लिए दे दिया, अतः वे महापुरुष हो गये हैं। हमारा भी कर्तव्य है कि देश की उन्नति के लिए सदा यत्नशील हों।

(१२) स्वावलम्बन

स्वावलम्बन वह अलौकिक गुण है, जो मनुष्य के जीवन को सदा सुखमय बनाता है। स्वावलम्बन शिक्षा देता है कि मनुष्य को अपना काम स्वयं करना चाहिए। अपने काम के लिए दूसरों के आश्रित नहीं रहना चाहिए। जो मनुष्य जितना स्वावलम्बी होता है, वह उतना ही सुखी रहता है। जो परावलम्बी होता है, वह सदा दुःखी रहता है। स्वावलम्बन से मनुष्य में पुरुषार्थ, साहस, धैर्य, कर्तव्यशीलता और प्रसन्न-चित्तता आदि गुणों का उदय होता है। परावलम्बन से हीनता, दीनता, खिन्नता, अधीरता आदि दोषों का उदय होता है। उन्नति का साधन स्वावलम्बन है। अतः जो मनुष्य या देश उन्नति करना चाहता है, उसे स्वावलम्बी होना चाहिए।

संकेतः—(११) अनृणः, भवितुं शक्नोति, अर्पितवन्तः। (१२) करोति, शिक्षयति, करणीयम्, स्यात्, यावान्, तावान्, भवेत्।

(१३) अनुशासन-पालन

कुछ विशेष नियमों के पालन और अपने से बड़ों की आज्ञा के पालन करने को अनुशासन-पालन कहते हैं। अनुशासन-पालन से मनुष्य का जीवन नियमित होता है। वह अपने सब कामों को ठीक समय पर करता है। वह अपने समय का मूल्य समझता है और अपने जीवन का महत्त्व समझता है। अनुशासन-पालन से मनुष्य उन्नति की ओर जाता है। जो मनुष्य, जो समाज और जो देश अनुशासन का पालन करता है, वह उन्नत होता है। जहाँ अनुशासन नहीं होता है, वहाँ अनियम और अव्यवस्था होती है। जीवन के प्रत्येक स्थान पर अनुशासन-पालन की आवश्यकता होती है। जीवन की सफलता के लिए अनुशासन का पालन अवश्य करना चाहिए।

(१४) मित्रता

निःस्वार्थ भाव से परस्पर स्नेह करने को मित्रता कहते हैं। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, वह चाहता है कि उसका कोई मित्र अवश्य हो, जिसे वह अपने दुःख और सुख की बातें बता सके। अतएव मित्र की आवश्यकता होती है। मित्र का निर्णय सावधानी से करना चाहिए। मित्र ऐसा होना चाहिए कि जो स्वार्थी न हो, वंचक न हो, दुर्जन न हो। सच्चा मित्र वह है, जो बड़ी विपत्ति में भी साथ न छोड़े। दुःख में अपने मित्र का साथ दे और सुख में सुखी हो। सदा सज्जन से मित्रता करनी चाहिए, दुर्जन से नहीं। दुर्जन से मित्रता दुःखदायी होती है। मित्र का कर्तव्य है कि वह अपने मित्र के दुःख में दुःखी हो, उसे उत्तम सम्मति दे, उसे कुमार्ग से बचावे और सदा सन्मार्ग पर लावे।

संकेतः—(१३) ज्येष्ठानाम्, आज्ञापालनम्, यथासमयम्, जानाति। (१४) पारस्परिकः स्नेहः, विज्ञापयेत्, सावधानतया, तदृशं स्यात्, यथार्थः, सङ्गम्, साहाय्यम्, आचरेत्, निवारयेत्, आनयेत्।

(१५) विद्यार्थि-जीवन

जीवन को चार भागों में बाँटा गया है। इनको चार आश्रम भी कहते हैं। पहला आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम है। यही विद्यार्थि-जीवन है। मनुष्य के जीवन की पहली आधार-शिला विद्यार्थि-जीवन ही है। मनुष्य विद्यार्थि-जीवन में अपना जीवन जैसा बना लेता है, उसका भविष्य जीवन भी उसी प्रकार का हो जाता है। यही समय है जब विद्यार्थी सारी विद्याओं, सारे गुणों और सारी कलाओं को सीखता है। विद्यार्थि-जीवन में सीखी हुई सारी विद्याएँ आदि उसके भावी जीवन में काम आती हैं। इस समय ही मनुष्य आचार-विचार, संयम, शील और सत्य आदि गुणों को सीखता है। जो मनुष्य विद्यार्थि-जीवन का जितना सदुपयोग करेगा, वह उतना ही बड़ा मनुष्य होगा।

(१६) शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा मनुष्य की बौद्धिक शक्ति को विकसित करती है। शिक्षा ही मनुष्य को पशु से पृथक् करती है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य विद्वान् और बुद्धिमान् होता है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य शुभ-अशुभ, पाप-पुण्य, उचित-अनुचित, धर्म-अधर्म को ठीक-ठीक समझता है। वह उनमें से उत्तम वस्तुओं और गुणों को स्वीकार कर लेता है और अनुचित को छोड़ देता है। शिक्षा से मनुष्य अपने कर्तव्य को ठीक जानकर एक सुयोग्य नागरिक होता है। वह ज्ञानोपार्जन करके अपनी उन्नति करता है और अपनी विद्या के द्वारा समाज और विश्व को उन्नत करता है। शिक्षा का उद्देश्य है—मनुष्य की विवेक-शक्ति को जागृत करना, उसके चरित्र को शुद्ध बनाना, बौद्धिक शक्तियों को विकसित करना, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति करना।

संकेतः—(१५) चतुर्षु भागेषु, विभज्यते, विद्यार्थि-जीवनम्, यादृशम्, तादृशम्, शिक्षते, भाविनि, उपयोगिन्यः भवन्ति, महान्। (१६) बौद्धिकीम्, विकासयति, यथार्थतः जानाति, स्वीकरोति, विज्ञाय, उद्बोधनम्, करणम्, विकासनम्।

(८) निबन्ध-संग्रह

आवश्यक निर्देश

१. किसी विषय पर अपने विचारों और भावों को सुन्दर, सुगठित, सुबोध एवं क्रमबद्ध भाषा में लिखने को निबन्ध कहते हैं। निबन्ध के लिए दो बातों की आवश्यकता होती है—१. निबन्ध की सामग्री, २. निबन्ध की शैली।

निबन्ध की सामग्री एकत्र करने के तीन साधन हैं—१. निरीक्षण अर्थात् प्रकृति की वस्तुओं को स्वयं सावधानी से देखना और उनके बारे में ज्ञान प्राप्त करना। २. अध्ययन अर्थात् पुस्तकों आदि से उस विषय का ठीक ढंग से ज्ञान प्राप्त करना। ३. मनन अर्थात् स्वयं उस विषय पर विचार करना।

२. निबन्ध-लेखन में इन बातों का सदा ध्यान रखें—१. **प्रस्तावना या आरम्भ**—प्रारम्भ में विषय का निर्देश करें और उसका लक्षण आदि लिखें। २. **विवेचन**—बीच में विषय का विस्तृत विवेचन करें। उस वस्तु के लाभ-हानि, गुण-अवगुण, उपयोगिता-अनुपयोगिता आदि का विस्तृत विचार करें। अपने कथन की पुष्टि में सुभाषित, पद्य या श्लोक आदि उद्धरण के रूप में दे सकते हैं। ३. **उपसंहार**—अन्त में अपने कथन का सारांश संक्षेप में दें। प्रस्तावना और उपसंहार संक्षेप में दें। अधिक स्थान विवेचन में दें।

३. निबन्ध की शैली के विषय में इन बातों का ध्यान रखें—१. भाषा व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हो। २. भाषा प्रारम्भ से अन्त तक एक-सी हो। ३. भाषा में प्रवाह हो और स्वाभाविकता हो। ४. उपयुक्त और असंदिग्ध शब्दों का ही प्रयोग करें। ५. भाषा सरल, सुबोध और आकर्षक हो। ६. सुभाषित, लोकोक्ति और अलंकारों को भी आवश्यकतानुसार दें। ७. अनावश्यक विस्तार, पुनरुक्ति, पाण्डित्य-प्रदर्शन और क्लिष्टता का परित्याग करें।

४. निबन्ध के मुख्यतया तीन भेद हैं—१. वर्णनात्मक, २. विवरणात्मक, ३. विचारात्मक।

५. उदाहरण के लिए २० निबन्ध अति प्रसिद्ध विषयों पर सरल संस्कृत में दिये गये हैं। सरलता और छात्रों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इन निबन्धों में सन्धियाँ नहीं की गयी हैं। छात्र आवश्यकतानुसार सन्धियाँ कर लें।

(१) विद्या

कस्यापि वस्तुनः यथार्थतः ज्ञानं विद्या इति कथ्यते। संसारे यानि धनानि सन्ति, तेषु विद्या सर्वश्रेष्ठं धनम् अस्ति। विद्यया मनुष्यः स्वकीयं कर्तव्यम् अकर्तव्यं च जानाति। विद्यया एव मनुष्यः जानाति यत् संसारे कः धर्मः, कः अधर्मः, किं पापम्, किं च पुण्यम् इति। विद्यया एव मनुष्यः सन्मार्गम् अनुसरति, कुमार्गं च परित्यजति। विद्यया एव मनुष्यः यथार्थतः मनुष्यः भवति। यः विद्याहीनः अस्ति, स स्वकीयं कर्तव्यं न जानाति। अतः कथ्यते—विद्याविहीनः पशुः, अर्थात् विद्यया रहितः नरः पशुः भवति। सर्वाणि धनानि व्यये कृते न्यूनानि भवन्ति, परन्तु विद्या व्यये कृते वर्धते। विद्यया मनुष्यस्य सम्मानं भवति। विद्वान् मनुष्यः सर्वत्र सम्मानं लभते। राजा स्वदेशे एव पूज्यते, परन्तु विद्वान् सम्पूर्णे जगति आदरं प्राप्नोति। सर्वेषाम् एतत् कर्तव्यम् अस्ति यत् ते परिश्रमेण विद्यां पठेयुः।

(२) सत्यम्

यद् वस्तु यथा विद्यते, तस्य तेन एव रूपेण कथनं सत्यम् इति कथ्यते। संसारे सत्यस्य महती आवश्यकता अस्ति। सत्येन एव समाजस्य स्थितिः अस्ति। सत्यस्य एव एष महिमा अस्ति, यद् वयं समाजे मनुष्येषु विश्वासं कुर्मः। सत्यभाषणेन मनुष्यः निर्भीकः भवति। सत्यभाषणेन तस्य तेजः यशः कीर्तिः गौरवं च वर्धन्ते। य सत्यं वदति, स सदा सर्वेभ्यः पापेभ्यः निवृत्तः भवति। स सत्कर्मसु प्रवर्तते, सद्गुणान् आश्रयति, धर्मे मतिं करोति, अधर्मे न प्रवर्तते, यशः इच्छति, प्रतिष्ठां प्रियं मन्यते, अप्रतिष्ठां च मृत्युं गणयति। सत्यभाषणं सर्वोत्कृष्टं तपः विद्यते। सत्यभाषणस्य अभ्यासेन एव मनुष्यः महात्मा, त्यागी, तपस्वी च भवति। सत्यस्य प्रतिष्ठया एव संसारस्य कल्याणं भवति। सत्यस्य व्यवहारेण एव देशः, समाजः जातिः च उन्नतिं प्राप्नुवन्ति। असत्यभाषणं पापानां मूलम् अस्ति। अतएव उच्यते—नहि सत्यात् परो धर्मो नानृतात् पातकं परम्। असत्यभाषणेन नरस्य पतनं भवति। सत्यस्य प्रभावेण एव राजा युधिष्ठिरः विजयम् अलभत। सर्वेषाम् एतत् कर्तव्यम् अस्ति यत् ते उन्नत्यै सदा सत्यं वदेयुः।

(३) परोपकार:

परेषाम् उपकार: परोपकार: अस्ति। अन्येषां हितकरणम्, निर्धनेभ्य: दानम्, असहायानां सहायता, एतत् सर्वं परोपकार: एव उच्यते। संसारे परोपकार: एव स गुण: अस्ति येन मनुष्येषु सुखस्य प्रतिष्ठा अस्ति। समाजसेवाया: भावना, देशप्रेम्ण: भावना, देशभक्ते: भावना, दीनोद्धारस्य भावना, परदु:खेषु सहानुभूति: च परोपकारस्य भावनया एव सम्भवति। परोपकारकरणेन मनुष्यस्य हृदयं पवित्रं निर्मलं सरलं विनीतं च भवति। परोपकारी अन्यस्य दु:खं स्वकीयं मन्यते, तस्य नाशाय च प्रयत्नं करोति। दीनेभ्य: दानं ददाति, निर्धनेभ्य: धनं ददाति, वस्त्रहीनेभ्य: वस्त्राणि ददाति, पिपासितेभ्य: जलं ददाति, क्षुधितेभ्य: अन्नं ददाति, अशिक्षितेभ्य: विद्यां च ददाति। प्रकृति: अपि परोपकारस्य शिक्षां ददाति। परोपकारार्थं सूर्य: तपति, चन्द्र: प्रकाशं ददाति, वायु: चलति, नद्य: वहन्ति, वृक्षा: च फलानि वितरन्ति।

(४) उद्योग:

संसारे सर्वे जना: सुखम् इच्छन्ति। न कोऽपि जन: दु:खम् इच्छति। सुखं पुरुषार्थेन विना न सिध्यति। उद्योगेन एव मनुष्य: धनं लभते, विद्यां लभते, संसारे गौरवं प्राप्नोति, कलासु कुशलतां प्राप्नोति, जगति कीर्तिं च लभते। ये जना: पुरुषार्थं न कुर्वन्ति, ते न सुखं लभन्ते, न शान्तिं प्राप्नुवन्ति, न विद्यां लभन्ते, न कलासु कुशलतां प्राप्नुवन्ति, न च जगति कीर्तिं लभन्ते। उद्योग: एव जीवनस्य आधारशिला अस्ति। उद्योगेन एव सर्वाणि कार्याणि सिध्यन्ति, न तु मनोरथमात्रेण। अतएवोक्तम्—उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै:। उद्यमेन एव निर्धना: धनिन: भवन्ति, विद्याहीना: विद्यासु निपुणा: भवन्ति, निर्बला: सबला: भवन्ति, दु:खिन: च सुखिन: भवन्ति। संसारे यावन्त: अपि महापुरुषा: अभवन्, ते सर्वे अपि उद्योगम् एव अकुर्वन्। य: कश्चित् जन: सफलताम् इच्छति स उद्योगम् एव आश्रयेत्।

(५) वसन्तः ऋतुः

वर्षे षड् ऋतवः भवन्ति। प्रथमं वसन्तः ऋतुः आगच्छति। अस्मिन् ऋतौ सर्वे: वृक्षाः सर्वाः लता च फलैः पुष्पैः च युक्ताः भवन्ति। सर्वेषु वृक्षेषु नवीनानि पत्राणि भवन्ति। आम्रेषु मञ्जर्यः आगच्छन्ति। आम्रस्य वृक्षेषु कोकिलाः मधुरेण स्वरेण कूजन्ति। सरोवरेषु कमलानि विकसन्ति। तेषु भ्रमराः सानन्दं विचरन्ति। भ्रमराः कमलानां रसं पीत्वा मधुरं गुञ्जन्ति, इतस्ततः भ्रमन्ति च। अस्मिन् ऋतौ शीतस्य अन्तः भवति। शीतलः मन्दः सुगन्धिः च वायुः वहति। अयम् ऋतुराजः इति कथ्यते। अयम् अतीव सुखदः ऋतुः भवति।

(६) ग्रीष्मः ऋतुः

अस्मिन् इतौ सूर्यस्य किरणाः तीक्ष्णाः भवन्ति। सूर्यः भूमिम् अत्यधिकं तापयति। उष्णः तीव्रः च वायुः वहति। अल्पे अपि परिश्रमे कृते स्वेदः प्रवहति। नद्यां स्नानं रुचिकरं भवति। मध्याह्ने सूर्यस्य तापः तीव्रः भवति, अतः प्रातःकालः सायंकालः च सुखकरौ भवतः। मध्याह्ने वहिः गमनं न सम्भवति, अतः छायासु शयनं रुचिकरं भवति। पिपासा अधिकं बाधते। शरीरे शिथिलत्वं संजायते। कार्येषु मनः न लगति। केचन आतपेण रुग्णाः भवन्ति। वृक्षाः लताः च प्रायः शुष्यन्ति।

(७) वर्षा ऋतुः

अस्मिन् ऋतौ सर्वतः जलेन परिपूर्णाः मेघाः दृश्यन्ते। कदाचित् गर्जन्ति, कदाचित् वर्षन्ति च। मेघानां गर्जनं श्रुत्वा मयूराः नृत्यन्ति। महता वेगेन जलं वर्षति। नद्यः सरोवराः च जलेन पूर्णाः भवन्ति। सर्वत्र जलम् एव दृश्यते। मेघेषु विद्युत् पुनः पुनः द्योतते। अस्मिन् ऋतौ कृषकाः मोदन्ते। ते क्षेत्राणि कर्षन्ति, बीजानि वपन्ति च। सर्वतः भूमिः शस्यैः श्यामला दृश्यते। वर्षासु जनाः आतपत्रं गृहीत्वा बहिः गच्छन्ति। जलेन परिपूर्णाः मार्गाः मलिनाः भवन्ति। रात्रौ खद्योताः दृष्टिगोचराः भवन्ति।

(८) श्रीरामचन्द्रः

श्रीरामचन्द्रः पुरुषोत्तमः अभवत्। तस्य पितुः नाम दशरथः आसीत्। तस्य मातुः च नाम कौशल्या आसीत्। तस्य त्रयः भ्रातरः आसन्-लक्ष्मणः, भरतः, शत्रुघ्नः च। स बाल्यकाले एव सर्वासु विद्यासु कुशलतां प्राप्तवान्। स धनुर्विद्यायाम् अतीव निपुणः आसीत्। राज्ञः जनकस्य पुत्र्या सीतया सह तस्य विवाहः अभवत्। पितुः दशरथस्य आज्ञां पालयित्वा स चतुर्दशवर्षाणि वने अवसत्। तत्रैव रावणः सीताम् अहरत्। युद्धे रावणं हत्वा रामः अयोध्याम् आगच्छत्। तत्र राज्यं च प्राप्तवान्। तस्य राज्यम् आदर्शरूपम् आसीत्। अधुनापि तस्य राज्यं रामराज्यम् इति जनाः सादरं स्मरन्ति।

(९) श्रीकृष्णः

भगवान् श्रीकृष्णः महात्मा महायोगी च आसीत्। तस्य पिता वसुदेवः, माता देवकी च आस्ताम्। स बाल्यकाले एव सर्वासु विद्यासु महतीं योग्यतां प्राप्नोत्। स शस्त्रविद्यायाम् अतीव निपुणः आसीत्। मुरलीवादने तु अद्वितीयः अभवत्। स बाल्यावस्थायाम् एव बहूनां राक्षसानां वधम् अकरोत्। स महानीतिज्ञः आसीत्। युद्धे अर्जुनः किंकर्तव्यविमूढः अभवत्। भगवान् श्रीकृष्णस्तस्मै गीतायाः उपदेशम् अददात्। भगवद्गीता न केवलं भारतवर्षे, अपि तु सम्पूर्णे जगति आदरेण पठ्यते। तस्य जन्मतिथिः श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी इति पर्वरूपेण भारतवर्षे सर्वैः सोत्साहं सम्मान्यते।

(१०) श्री जवाहरलाल नेहरुः

श्री जवाहरलाल नेहरुः न केवलं भारतवर्षस्य, अपि तु विश्वस्य महती विभूतिः आसीत्। तस्य पिता श्रीमोतीलालनेहरुः जननी च स्वरूपरानी आस्ताम्। स बाल्यकाले विदेशं गत्वा तत्र आङ्ग्लभाषायाः अध्ययनम् अकरोत्। स गुणानाम् आकरः, धैर्यस्य धाम, विद्वत्तायाः निधिः, अहिंसायाः प्रबलः प्रचारकः, राजनीति-विशारदः, असमः देशभक्तः च आसीत्। स देशस्य स्वाधीनतालाभाय बहुवारं कारावासं प्राप्तः। स सप्तदशवर्षाणि प्रधानमन्त्रिपदम् अलञ्चकार। तस्य पुत्री श्रीमती इन्दिरागान्धिः अपि एकादशवर्षाणि प्रधानमन्त्रिपदम् अलमकरोत्।

(११) ग्रामजीवनम्

भारतवर्षः ग्रामप्रधानः देशः अस्ति। अधिका जनता ग्रामेषु एव निवसति। ग्रामवासिनः जनाः ग्रामीणाः इति कथ्यन्ते। ग्रामीणानां जनानां दिनचर्या शोभना शिक्षाप्रदा च भवति। ग्रामेषु ग्रामीणाः जनाः प्रातः चतुर्वादने उत्तिष्ठन्ति। ते शौचं स्नानं सन्ध्याम् अन्यत् च आवश्यकं कार्यं कृत्वा स्वकीयेषु कार्येषु संलग्नाः भवन्ति। ग्रामान् परितः शस्यैः पूर्णानि क्षेत्राणि भवन्ति। सर्वतः शस्यश्यामला भूमिः दृश्यते। तत्र उद्यानेषु सुन्दराणि पुष्पाणि फलानि च दृश्यन्ते। ग्रामेषु स्वच्छः वायुः प्रवहति। ग्रामेषु शुद्धं जलम्, स्वच्छः वायुः, शुद्धं दुग्धम्, शुद्धं घृतम्, शुद्धानि खाद्यवस्तूनि च प्राप्तानि भवन्ति। अतः ग्रामेषु स्वास्थ्यं समीचीनं भवति। तत्र जनाः हृष्टाः पुष्टाः बलवन्तः प्रसन्नाः भवन्ति। ग्रामेषु जीवनम् अति सुन्दरं भवति।

(१२) नगरजीवनम्

भारतवर्षे बहूनि नगराणि सन्ति। नगरेषु जीवनं सुखदं रुचिकरं च भवति। नगरवासिनः जना नागरिकाः इति कथ्यन्ते। नगरेषु सुविधाः अधिकाः सन्ति, अतः सर्वे अपि नगरेषु एव निवासम् इच्छन्ति। नगरेषु विद्याध्ययनार्थं विद्यालयाः महाविद्यालयाः विश्वविद्यालयाः च भवन्ति। तत्र यः यावत् पठितुम् इच्छति, तावत् पठितुं शक्नोति। तत्र यानस्य, धूम्रयानस्य, स्वच्छेषु भवनेषु निवासस्य, पठनस्य, पाठनस्य, आदानस्य, प्रदानस्य, अन्येषां जीवनोपयोगिनां वस्तूनां च बहुविधा सुविधा भवति। तत्र जीविकायाः उपार्जनस्य च बहवः सुविधाः सन्ति। तत्र जनाः सरलतया जीविकायाः निर्वाहं कर्तुं समर्थाः भवन्ति। तत्र आमोदस्य प्रमोदस्य मनोरञ्जनस्य च बहूनि साधनानि भवन्ति, यैः जना मनोरञ्जनं कुर्वन्ति। नगरजीवनम् सर्वैः स्पृह्यते।

(१३) आदर्शः गुरुः

शास्त्रेषु गुरोः बहु महत्त्वं वर्णितम् अस्ति। गुरुः मनुष्यं मनुष्यं करोति। आदर्शः गुरुः सः अस्ति, यः यथा छात्रान् उपदिशति, तथैव स्वयम् अपि आचरणं करोति। छात्राः गुरुं दृष्ट्वा, तस्य आचरणं च दृष्ट्वा, तथैव आचरणं कुर्वन्ति। आदर्शगुरोः कर्तव्यम् अस्ति यत् स शिष्यं पुत्रवत् गणयेत्, तं पापात् निवारयेत्, तं सन्मार्गम् आनयेत्, तं सद्गुणान् शिक्षयेत्, तं सत्कर्मसु योजयेत्, तं हितकार्येषु नियोजयेत्, तं सर्वाः विद्याः स्नेहेन पाठयेत्। आदर्शः गुरुः सदा छात्राणां हितम इच्छति। शिष्याणां हितार्थं बहूनि दुःखानि अपि सहते, परन्तु सदैव तेषां हित करोति। स सदा स्वसमयं पठने पाठने च यापयति। स आस्तिकः धार्मिकः विनीतः सुशीलः सदाचारी च भवति। स सदैव वन्दनीयः भवति।

(१४) छात्राणां कर्तव्यम्

छात्राणां प्रधानं कर्तव्यम् अस्ति यत् ते स्वगुरूणाम् आज्ञां पालयन्तु। गुरूणाम् आज्ञायाः पालनं छात्राणां पवित्रं कर्तव्यम् अस्ति। गुरूणाम् आज्ञायाः पालनेन एव छात्रः संसारे उन्नतिं कर्तुं समर्थः भवति। गुरूणाम् आशीर्वादेन एव छात्रः सर्वाः विद्याः सरलतया शिक्षते। छात्राणां कर्तव्यम् अस्ति यत् ते गुरूणां सेवां कुर्वन्तु, सावधानतया विद्यां पठन्तु, विद्यायाः अध्ययने चित्तं ददतु, सत्कर्मसु प्रवृत्ताः भवन्तु, दुर्गुणेभ्यः निवृत्ताः भवन्तु, आस्तिकाः भवन्तु, पापेभ्यः विरमन्तु, सदाचारस्य पालने मनः योजयन्तु, ब्रह्मचर्यं पालयन्तु, विनीताः सुशीलाः च भवन्तु, मातृणां पितृणां च सेवां कुर्वन्तु, स्वज्येष्ठानाम् आज्ञां पालयन्तु, सदा स्वस्य उन्नत्यै च प्रयत्नं कुर्वन्तु। ये एवंप्रकारेण स्वकीयं जीवनं यापयन्ति, ते जीवने उन्नतिं कुर्वन्ति, सफलाः च भवन्ति।

(१५) स्वदेश-रक्षा

जगति स्वकीयः देशः सर्वोत्तमः मन्यते। उच्यते च—जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। स्वदेशः स्वर्गाद् अपि गुरुतरः पूजनीयः च अस्ति। जगति ये देशाः उन्नताः सन्ति, ते सर्वे एव स्वदेशं सर्वोत्तमं मन्यन्ते। ते स्वदेशस्य कृते सर्वस्वम् अपि त्यक्तुम् उद्यताः भवन्ति। स्वदेशस्य रक्षा मनुष्यस्य सर्वोत्तमं कर्तव्यम् अस्ति। यदि देशः सुरक्षितः अस्ति, तर्हि देशे उद्योगाः सर्वाः योजनाः च सफलाः भविष्यन्ति। यदि देशः असुरक्षितः, तर्हि केनापि प्रकारेण देशस्य उन्नतिः न सम्भवति। अस्माकं ये महापुरुषाः अभवन्, ते सर्वे अपि देशस्य रक्षार्थं बहूनि दुःखानि असहन्त। श्रीमहाराणाप्रतापः, श्रीशिवाजी, महात्मा गान्धिः, श्री सुभाषचन्द्रः, श्री जवाहरलाल नेहरुः देशरक्षायै बहूनि दुःखानि असहन्त, जीवनं च सफलं कृतवन्तः। स्वदेशस्य रक्षा सर्वेषाम् एव प्रधानं कर्तव्यम् अस्ति।

(१६) कृषकः

कृषकः प्रतिदिनं प्रातःकाले उत्थाय वृषभान् आदाय क्षेत्रं गच्छति। स तत्र क्षेत्राणि कर्षति। कृष्टेषु क्षेत्रेषु बीजानि वपति। बीजेभ्यः अंकुराः जायन्ते। अंकुरेभ्यः शस्यं जायते। शस्येन एव सम्पूर्णः देशः धनवान् धान्यवान् च भवति। भारतवर्षे ग्रामीणानां जनानां मुख्यं कर्म कृषिकर्म अस्ति। ग्रामीणाः कृषकाः कठोरं परिश्रमं कुर्वन्ति। ते ग्रीष्मर्तौ अतिप्रतप्ते दिवसे मध्याह्ने अपि कृषिकर्मणि संलग्नाः भवन्ति। एवम् एव वर्षासु शीतकाले च ते कठिनं परिश्रमं कुर्वन्ति। ते स्वकीयानि सुखानि त्यक्त्वा देशस्य कृते दुःखानि सहन्ते। यदि ते एवं कठिनं कर्म न कुर्युः, तर्हि देशः धनेन धान्येन च पूर्णः न भविष्यति। कृषि-कर्म श्रेष्ठं कर्म अस्ति। सर्वः अपि देशः कृषकाणाम् ऋणी वर्तते। ते सदैव सम्माननीयाः सन्ति।

(१७) सज्जनः

यः धार्मिकः विनीतः परोपकारी सदाचारी च भवति स सज्जनः कथ्यते। सज्जनः सदा परेषां दुःखे दुःखी भवति। स परेषाम् उपकारं करोति। स यथा वदति तथैव करोति। स यथा करोति, तथैव वदति। तस्य वचने कार्ये विचारे च एकता भवति। स परेषाम् उपकारं धर्मं मन्यते। स परोपकारे आनन्दं लभते, प्रसन्नः च भवति। स सर्वेषु दयां करोति। स सर्वत्र सुखम् इच्छति। स ऐश्वर्यं प्राप्य गर्वितः न भवति। स सुखे अधिकं हर्षं न प्राप्नोति, न च दुःखे अधिकं खेदम् अनुभवति। स सदा प्रियं हितं च वचनं वदति। स सर्वस्य हितं चिन्तयति। स सर्वेषु जीवेषु स्नेहं करोति। स विपत्तौ धैर्यम् आश्रयते, सम्पत्तौ विनीतः भवति, यशसि रुचिं करोति, सभासु मधुरं भाषणं ददाति, धर्मकार्येषु विद्याध्ययने सत्कर्मसु च स्वसमयं यापयति। सज्जनः सदैव वन्दनीयः भवति।

(१८) दुर्जनः

यः अधार्मिकः अविनीतः परेषाम् अहितकारी दुराचारः च भवति स दुर्जनः कथ्यते। दुर्जनः परेषाम् अहितं चिन्तयति। स देशस्य जातेः संसारस्य च अहितं चिन्तयति, सर्वस्य अहितं च करोति। स यद् वदति, ततः विपरीतम् आचरति, विपरीतं एव कार्यं च करोति। तस्य भाषणे कार्ये चिन्तने च एकता न भवति। दुर्जनः सदा दोषम् एव चिन्तयति, दुर्गुणान् एव आचरति, उचितं कर्म त्यजति, अनुचितं कर्म आचरति, मातुः पितुः गुरूणां च आज्ञां न पालयति, समाजे दुर्गुणानाम् एव प्रचारं च करोति। स सम्पत्तिं प्राप्य गर्वितः भवति, विपत्तौ अत्यधिकं दुःखम् अनुभवति, कलहं रुचिकरं मन्यते, गृहे शूरतां दर्शयति, युद्धे भीरुः भवति, सत्कर्मसु न प्रवृत्तः भवति। दुर्जनः समाजे सदा अनादरं लभते।

(१९) मम विद्यालयः

मम विद्यालयः नगरे वर्तते। विद्यालयस्य भवनम् अतीव सुन्दरम् अस्ति। एकम् उद्यानम् अपि अस्ति। उद्याने सुन्दराणि पुष्पाणि सन्ति। अहं प्रति विद्यालयं गच्छामि। मम अन्ये भ्रातरः भगिन्यः च अपि विद्यालयं गच्छ विद्यालयः मह्यम् अतीव रोचते। तत्र मम मनः पठने लगति। अहं तत्र ध्या विद्यां पठामि, लेखं च लिखामि। अहं प्रतिदिनं विद्यालयं गत्वा गुरून् प्रणमा गुरवः स्नेहेन पाठं पाठयन्ति। ते सदाचारस्य अनुशासनस्य च उपदेशं ददति। म विद्यालये अध्यापकानां संख्या पञ्चाशतः अधिका वर्तते। छात्राणां च संख सहस्रादधिका अस्ति। अध्यापकाः विविधासु विद्यासु पारंगताः सन्ति। विद्याल एकं विशालं क्रीडाक्षेत्रम् अपि अस्ति। तत्र छात्राः क्रीडन्ति। बह क्रीडाप्रतियोगिताः भवन्ति। मम विद्यालयस्य छात्राः पठने क्रीडने धावने भाष अनुशासनपालने च अतीव निपुणाः सन्ति।

(२०) भारतवर्षम्

भारतवर्षम् अस्माकं जन्मभूमिः अस्ति। भारतः देशः संसारे प्रसिद्धः अस्ति अस्य एव अन्नेन जलेन वायुना च वयं पालिताः पोषिताः च भवामः। इ जन्मभूमिः भारतभूमिः अस्माकं माता अस्ति। अस्याः महिमा वर्णयितुं न शक्यते इयं सा भारतभूमिः अस्ति, यत्र बहवः महर्षयः देशभक्ताः महाराजाः च अभवन् ये स्वबुद्धिबलेन स्वबाहुबलेन च विश्वस्य विजयम् अकुर्वन्। यदा सर्वस्मि जगति अविद्यायाः प्रसारः आसीत्, तदा अत्र ऋषयः वेदानां गानं कुर्वन्ति स्म। विदेशान् गत्वा ज्ञानस्य प्रसारम् अकुर्वन्। अत्र एव श्रीरामचन्द्रः, श्रीकृष्णः गौतमबुद्धः, ऋषिः दयानन्दः, अन्ये च महापुरुषाः अभवन्, येषां नाम न केवल भारतवर्षे, अपि तु समस्ते जगति प्रसिद्धम् अस्ति। अस्माकं कर्तव्यम् अस्ति यत् वयं भारतवर्षस्य सदा उन्नतिं कुर्याम, सदा अस्य रक्षां च कुर्याम।

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी व्याकरणाचार्य

संस्कृत व्याकरण की अनुपम पुस्तकें

संस्कृत शिक्षा भाग 1-2-3-4-5	(कक्षा 6, 7, 8, 9 तथा 10 के लिए)
प्रारम्भिक रचनानुवादकौमुदी	(प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए)
रचनानुवादकौमुदी	(उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए)
प्रौढ-रचनानुवादकौमुदी	(बी०ए० तथा एम०ए० कक्षाओं के लिए)
संस्कृत व्याकरण तथा लघु सिद्धान्तकौमुदी	(विस्तृत हिन्दी व्याख्या सहित)
अर्थ विज्ञान और व्याकरण दर्शन	(प्राचीन भारतीय वैयाकरणों के विचारों का संकलन)
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति	(बी.ए., एम.ए., आई.ए.एस., पी.सी.एस., आचार्य आदि हेतु)
पिंगल कृत छन्दःसूत्रम् (वैदिक गणितीय अनुप्रयोगों सहित)	हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद सहित

संस्कृत-निबन्धशतकम्

(एम०ए०, आई०ए०एस०, पी०सी०एस०, आचार्य आदि के लिए)

इसमें वैदिक एवं शास्त्रीय (10), दार्शनिक (6), काव्यशास्त्रीय (11), साहित्यिक (15), भाषावैज्ञानिक (5), सांस्कृतिक (9), सामाजिक (5), आर्थिक (3), राष्ट्रीय (8), शैक्षिक (8), विविध (20+10), विषयों पर सुललित संस्कृत में 110 निबन्ध दिये गये हैं। पुस्तक सभी प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उपयुक्त है। पृष्ठ-संख्या 368

भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र

(संस्कृत तथा हिन्दी एम०ए० के लिए)

इसमें भाषाशास्त्रीय नवीनतम अनुसन्धानों का समन्वय करते हुए भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र का प्रामाणिक एवं सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसमें भाषा, ध्वनि-विज्ञान, पद-विज्ञान, वाक्य-विज्ञान, विश्वभाषाओं का आकृतिमूलक एवं ऐतिहासिक वर्गीकरण, भारतीय परिवार, भारतीय आर्यभाषाएँ, स्वनिम, रूपिम, पदिम, आर्थिक, स्वनिमविज्ञान आदि विषयों का प्रामाणिक विवेचन हुआ है। पुस्तक सभी विश्वविद्यालयों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए लिखी गयी है। पृष्ठ-संख्या 528



विश्वविद्यालय प्रकाशन
पो०बॉ० 1149, विशालाक्षी भवन,
चौक, वाराणसी - 221001
Phone ... 2413741, 2413082
e-mail : sales@vvpbooks.com



www.vvpbooks.com